वर्ष–3, अंक–1
इंटरनेट संस्करण : 76

पत्रिका गर्भनाल

ISSN 2249–5967
मार्च 2013

प्रवासी भारतीयों की मासिक पत्रिका

आईये, आभार प्रकट करें

9वें विश्व हिन्दी सम्मेलन–2012
में सम्मानित विदेशी मूल के हिन्दी–प्रेमी विद्वानों के
कृतित्व, हिन्दी के लिये उनके योगदान को
उजागर करने में सहयोग कीजिये
धन्यवाद कहिये।

विद्वानों के नाम हैं :

डॉ. पीटर गेराल्ड फ्रेडलान्डर, ऑस्ट्रेलिया
प्रो. सेर्गेई सेरेबिरयानी, रूस
मार्को जोली, इटली
प्रो. ल्यू अन्वूक, चीन
डॉ. श्रीमती बूधू, मारीशस
श्री बमरूंग खाम, थाइलैंड
प्रो. उपुल रंजीत हेवाताना गामेज, श्रीलंका
सुश्री वान्या जार्जिवा गंचेवा, बुल्गारिया
श्री जबुल्लाह 'फीकरी', अफगानिस्तान

श्री भोलानाथ नारायण, सूरीनाम
सुश्री कैटरीना बालेरीवा दोवबन्या, उक्रेन
डॉ. कृष्ण कुमार, ब्रिटेन
श्री इंदुप्रकाश पांडेय, जर्मनी
श्री सत्यदेव टेंगर, मारीशस
प्रो. टिकेदी इशिदा, जापान
श्री विजय राणा, ब्रिटेन
श्री वेदप्रकाश बटुक, अमेरिका

जानकारी भेजने के लिये ईमेल पता है :
garbhanal@ymail.com

अपनी बात

कभी कभार आपको ऐसी किताब मिल जाती है जो आपको चौंकाती है और जीवन के प्रति आकर्षण बढ़ाती है। पिछले दिनों एक किताब पढ़ने का अवसर मिला। किताब का नाम है Tuesdays with Morrie. यह किताब अमेरिका के मैसाचुसेट्स के ब्राण्डिस विश्वविद्यालय में सामाजिक मनोविज्ञान के प्रोफेसर मॉरी श्वार्ज़ की कहानी कहती है। मॉरी जीवन के आठवें दशक में स्नायु के एक मारात्मक रोग से ग्रस्त हो गए। यह रोग एएलएस (amyotrophic lateral sclerosis) कहलाता है। एएलएस एक जलती हुई मोमबत्ती की तरह होता है। रोगी के स्नायु पिघल जाते हैं और उसका शरीर मोम का पिंड बन जाता है। अक्सर यह पाँव के निचले हिस्से से शुरू होकर ऊपर की तरफ बढ़ता जाता है। जाँघ की मांसपेशियों पर से नियन्त्रण समाप्त हो जाता है, नतीजा होता है कि आप खड़े नहीं रह सकते। अपने धड़ की मांसपेशियों पर नियन्त्रण खत्म हो जाने के फलस्वरूप सीधे बैठा नहीं जा सकता। अन्त में, अगर आप अभी भी जीवित रहते हैं तो आप अपने गले में किए गए सुराख में लगी नली के जरिए साँस लेते रहेंगे। जबकि आपकी पूरी तरह सजग रूह, शिथिल छाल के अन्दर कैद रहती है शायद कुटकुट करने या झपकने में समर्थ हो। किसी विज्ञान-कथा फिल्म की तरह, अपने ही शरीर में जम गए हुए आदमी की तरह। रोगी को इस हालत में आने में बीमारी शुरू होने के समय से पाँच साल से अधिक नहीं लगते।

मॉरी के डॉक्टरों के अनुमान में मॉरी के पास दो साल का समय था। डॉक्टर के चैम्बर से बाहर निकलते समय मॉरी सोच रहे थे- 'मैं क्या करूँ? क्या क्रमशः पिघलते हुए ओझल हो जाऊँ या बची हुई अवधि का अच्छे से अच्छा उपयोग करूँ?' फिर उन्होंने फैसला किया— 'मैं मुरझाऊँगा नहीं, मरने में मैं शर्म नहीं करूँगा।'

बल्कि वे मौत को अपना आखिरी पाठ, आखिरी प्रोजेक्ट बनाएँगे, अपने बचे दिनों का केन्द्रीय बिन्दु।

चूँकि हर किसी को मरना होता है, इसलिए मॉरी बहुत ही मूल्यवान होंगे, है न? वे अनुसंधान के विषय हो जाएँगे, मानव पाठ्यपुस्तक। 'मेरी धीमी और धीरज से भरी मौत में मेरा अध्ययन करो। अवलोकन करो, मेरे साथ क्या होता है, मुझसे सीखो।'

मॉरी ने जिन्दगी और मौत के बीच के उस आखिरी पुल की सैर करना और उस सैर का विवरण करना तय किया।

मॉरी मुलाकातियों की बढ़ती हुई तादाद का स्वागत करते रहे। मौत के बारे में विमर्श-समूह होते रहे, इसके क्या मायने हैं, कैसे विभिन्न समाज इसे समझे बिना आदिकाल से इससे डरते रहे हैं। उन्होंने अपने मित्रों से कहा कि अगर वे सचमुच उनकी मदद करना चाहते हैं, तो उन्हें सहानुभूति से नहीं, बल्कि मुलाकातों, फोन कॉल और समस्याओं को साँझा करने के जरिए मदद करें - पहले भी वे अपनी समस्याएँ मॉरी के साथ हमेशा साँझा करते रहे थे, क्योंकि मॉरी हमेशा से एक अच्छे श्रोता रहे थे।

इस अवस्था में भी मॉरी की आवाज बुलन्द और आकर्षक थी तथा उनका मस्तिष्क करोड़ों-अरबों विचारों से गूँजा करता था। वे यह साबित करने के लिए बद्धपरिकल्प थे कि मरना अनुपयोगी हो जाने के समानार्थक नहीं हुआ करता। नया साल आया और बीत गया। हालाँकि उन्होंने ऐसा किसी से नहीं कहा था, लेकिन मॉरी जानते थे कि यह उनका आखिरी साल होगा। अब वे एक व्हिलचेयर का इस्तेमाल कर रहे थे और उन सभी लोगों को जिन्हें वे प्यार करते थे, अपनी सारी बातें कह डालने के लिए वक्त से लड़ रहे थे।

ब्राण्डिस में उनके एक सहकर्मी का दिल के दौरे से अचानक देहान्त हो गया। मॉरी उनकी अन्त्येष्टि में गए थे। घर लौटने पर वे बहुत उदास थे। उन्होंने कहा, 'कितना बड़ा अपव्यय है? उन सारे लोगों ने कितनी अच्छी बातें कहीं, लेकिन इर्व (मृत व्यक्ति) ने कुछ भी नहीं सुना।'

मॉरी के पास एक बेहतर विचार था। उन्होंने कई एक लोगों से फोन पर सम्पर्क किया। उन्होंने एक दिन का चुनाव किया और सर्दी के एक अपराह्न में मित्रों और परिवार का एक समूह उनके पास 'जीवित अन्त्येष्टि' के लिए जुटा। उनमें से हर कोई बोला और बूढ़े प्रोफेसर को अपनी अपनी श्रद्धांजलि दी। कुछ लोग रोए। कुछ हँसे। एक महिला ने एक कविता पढ़ी।

मॉरी उन लोगों के साथ रोए और हँसे। और दिल में महसूस की गई वे सारी बातें, जिन्हें हम कभी अपने प्यारे लोगों को नहीं कह पाते, उस दिन मॉरी ने कही। उनकी जीवित अन्त्येष्टि उत्साहवर्द्धक कामयाबी थी, बस मॉरी अभी तक मरे नहीं थे।

मार्च १९९५; मॉरी अब हमेशा के लिए व्हिलचेयर पर सिमट गए थे। और सहायकों द्वारा एक भारी थैले की तरह चेयर से बिस्तर पर डाल दिए जाने की दिनचर्या के अभ्यस्त होते जा रहे थे। भोजन करते समय वे खाँसने लगे थे और चबाने में तकलीफ होने लगी थी। अपने खयालातों को वे लिफाफों, फोल्डरों और कागज के टुकड़ों पर लिख लिया करते। इनमें उन्होंने मौत की छाया में जीवित रहने के बारे में छोटी-छोटी दार्शनिकताएँ लिखीं। 'तुम जो कुछ भी कर सकने लायक हो, उसे स्वीकार करो', 'बीते समय को, बिना अस्वीकार या ठुकराए, गुजरा हुआ वक्त मानना सीखो', 'अपने आपको माफ करना सीखो और दूसरों को माफ करना सीखो', 'ऐसा मत मान लो कि संलग्न होने में बहुत देर हो गई है।'

कुछ समय बाद उनके पास ऐसे पचास सूत्र इकट्ठे हो गए थे। उन्होंने अपने मित्रों से इनका साझा किया। उनके एक मित्र प्रोफेसर मॉरी स्टिन इन वचनों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने इन्हें बोस्टन ग्लोब रिपोर्टर को भेज दिया। बोस्टन ग्लोब रिपोर्टर ने मॉरी पर एक लम्बी फीचर स्टोरी लिखी, जिसका शीर्षक था : 'एक प्रोफेसर का आखिरी पाठ : उसकी खुद की मौत।'

ganganand.jha@gmail.com

पत्रिका
गर्भनाल

वर्ष-3, अंक-1 (इंटरनेट संस्करण : 76)
मार्च 2013

सम्पादकीय सलाहकार
गंगानन्द झा

परामर्श मंडल
वेद मित्र, एम.बी.ई., यू.के.
डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री, ऑस्ट्रेलिया
अनिल जनविजय, रूस
अजय भट्ट, बैंकाक
देवेश पंत, अमेरिका
उमेश ताम्बी, अमेरिका
आशा मोर, ट्रिनिडाड
डॉ. अनिल विद्यालंकार, भारत
डॉ. ओम विकास, भारत

सम्पादक
सुषमा शर्मा

तकनीकि सहयोग
डॉ. राजीव यादव, न्यूयार्क

आकल्पन सहयोग
डॉ. बृजेश तिवारी, लखनऊ

कम्पोजिंग
प्रताप परिहार

कानूनी सलाहकार
संजीव जायसवाल

सम्पर्क
डीएक्सई-23, मीनाल रेसीडेंसी,
जे.के. रोड, भोपाल-462023 (म.प्र.) भारत.
ईमेल : garbhanal@ymail.com

आवरण छायाचित्र
गूगल से साभार

प्रकाशित रचनाओं के विचार लेखकों के अपने हैं, जरूरी नहीं है कि सम्पादक इससे सहमत हों. विवाद की स्थिति में केवल भोपाल न्यायालय क्षेत्र ही रहेगा.

>>7
शब्दों की चाबी

>>10
एक तान अबूझी-सी

>>15
बिरयानी में चूहा

>>20
ओ राधा तेरी चुनरी

इस अंक में

मन की बात :	प्रवीण कुमार जैन	4
तथ्य :	वाणी मुरारका	7
संस्मरण :	विजय निकोर	10
रम्य-रचना :	रमेश जोशी	15
सामयिक :	सव्या झा	17
	डॉ. कृष्णा जाखड़	20
बातचीत :	आत्माराम शर्मा विजया सती	22
नजरिया :	राजकिशोर	24
व्याख्या :	मनोज कुमार श्रीवास्तव	26
चिन्तन :	बृजेन्द्र श्रीवास्तव	29
वेद की कविता :	प्रभुदयाल मिश्र	33
मंथन :	भूपेन्द्र कुमार दवे	34
पंचतंत्र :		37
महाभारत :		39
कविता :	विजय कुमार सिंह	41
	सुमन वर्मा	42
	मंजूषा हांडा	43
	सरोज उप्रेती	44
	डॉ. परमजीत ओबराय	45
	सुधा मिश्रा	46
	बीनू भटनागर	47
शायरी की बात :	नीरज गोस्वामी	48
कहानी :	पुष्पा सक्सेना	49
खबर :		60
आपकी बात :		62

सी.एस. प्रवीण कुमार जैन

सुल्तान गंज, बेगमगंज, रायसेन, मध्यप्रदेश में जन्म। वाणिज्य में स्नातकोत्तर। कविता लेखन, नईदुनिया में छिटपुट समसामयिक आलेख प्रकाशित, सीएस फाइनल के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं विश्व व्यापार संगठन नाम से पुस्तक का सृजन एवं प्रकाशन। जीवदया एवं शाकाहार के प्रचार में संलग्न, अहिंसा संघ, मुम्बई की आधिकारिक वेबसाइट के संपादन का कार्यभार। सम्प्रति : प्रशस्ति समूह (भवन निर्माता एवं भू-सम्पति सर्जक तथा विकासक), मुम्बई में कम्पनी सचिव और विधि प्रमुख के पद पर कार्यरत।

सम्पर्क : cs.praveenjain@gmail.com

भाषा के साथ ज्यादती कब तक?

भारत में महिलाओं पर यौन अपराध तेज़ी से बढ़े हैं और बढ़ रहे हैं। पर मैं इस लेख में हमारी भाषा पर हो रहे बलात्कार की बात करूँगा। क्योंकि इस अत्याचार की कहानी लम्बी है पर उसे रोकने के लिए शायद कोई नहीं! क्या हमारी भाषा के साथ बलात्कार होते रहेंगे और हम अपनी भाषा को बचाने के लिए एक आवाज़ भी नहीं उठाएंगे? मुझे भरोसा है कि आवाज़ उठेगी तो दूर तक जाएगी।

विगत १-२ वर्षों में बहुत कुछ बदल गया है, हिंदी के खबरिया चैनलों और अख़बारों में अंग्रेजी और रोमन लिपि का इतना अधिक प्रयोग शुरू हो चुका है कि उन्हें हिंदी चैनल कहने में भी शर्म आती है। मैं पिछले ३-४ वर्षों से कई संपादकों को लिख रहा हूँ कि अपने हिंदी समाचार चैनल/अख़बार को हिंग्रेजी चैनल/अख़बार मत बनाइये। आज दिन तक किसी ने मेरे पत्रों के उत्तर देने की जहमत नहीं उठाई क्योंकि इन चैनलों/अख़बारों के कर्ताधर्ताओं को न तो अपने पाठकों से कोई सरोकार है और न ही हिंदी भाषा से, इनके लिए हिंदी बस कमाई का एक ज़रिया है।

ये भूल गए हैं कि हिंदी वाले जाग गए तो इनका सफाया हो सकता है। मुझे विश्वास है कि आने वाले समय में इनकी अक्ल ठिकाने ज़रूरआएगी क्योंकि आम दर्शक और पाठक के लिए हिंदी उनकी अपनी भाषा है, माँ भाषा है। यहाँ बात सिर्फ हिंदी की नहीं है हर प्रांतीय भाषा के साथ भी यही हो रहा है, पर हम मौन हैं, निष्क्रिय हैं। नामचीन लेखक और बुद्धिजीवी चुप हैं!

> *"हिंदी में न्यूज़ और खबर के लिए एक बहुत सुन्दर शब्द है 'समाचार' जिसका प्रयोग दूरदर्शन के अलावा किसी भी निजी चैनल पर वर्जित जान पड़ता है। ऐसे ही सैकड़ों हिंदी शब्दों को डुबाया/कुचला जा रहा है, नये-नये अंग्रेजी के शब्द थोपे जा रहे हैं।"*

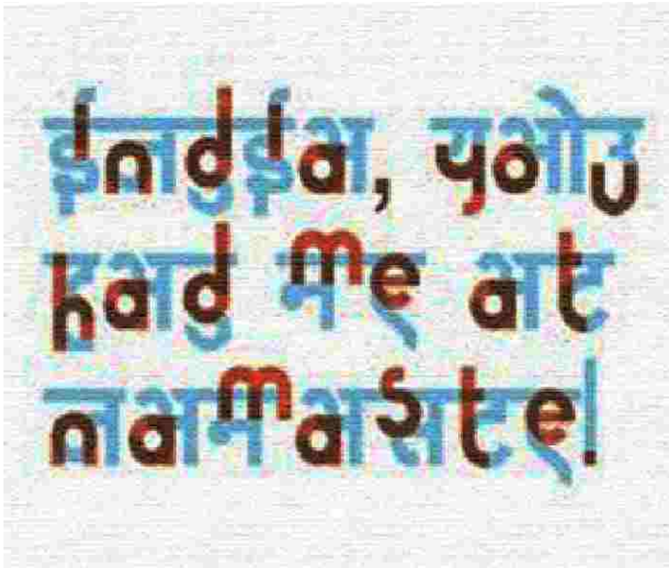

मुट्ठीभर लोग हिंदी में जबरन अंग्रेजी घुसा रहे हैं : आज दुनियाभर के लोग हिंदी के प्रति आकर्षित हो रहे हैं, विश्व की कई कम्पनियाँ/विवि/राजनेता हिंदी के प्रति रुचि दिखा रहे हैं पर भारत के मुट्ठीभर लोग हिंदी और भारत की संस्कृति का बलात्कार करने में लगे हैं क्योंकि इनकी सोच कुंद हो चुकी है और दूसरी बात इन चैनलों/अख़बारों के कर्ताधर्ता कमाते तो हिंदी से हैं और गुणगान करते हैं अंग्रेजी का।

हिंदी को बढ़ावा देने या प्रसार करने या इस्तेमाल को बढ़ावा देने में इन्हें शर्म आती है। इनके हिसाब से भारत की हाई सोसाइटी में हिंदी की कोई औकात नहीं है और ये सब हिंदी की कमाई के दम पर उसी हाई सोसाइटी का अभिन्न अंग बन चुके हैं। इसलिए बार-बार नया कुछ करने के चक्कर में हिंदी का बेड़ा गर्क करने में लगे हुए हैं।

शुरू-२ में देवनागरी के अंकों (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, ०) को टीवी और मुद्रण से हकाला गया, दुर्भाग्य से ये अंक आज इतिहास का हिस्सा बन चुके हैं और अब बारी है रोमन लिपि की घुसपैठ की, जो कि धीरे-२ शुरू हो चुकी है ताकि सुनियोजित ढंग से देवनागरी लिपि को भी धीरे-२ खत्म किया जाए। कई अखबार और चैनल आज न तो हिंदी के अखबार/चैनल बचे हैं और न ही वे पूरी तरह से अंग्रेजी के चैनल बन पाए हैं।

ऐसा करने वाले अखबार और चैनल मन-ही-मन फूले नहीं समा रहे हैं, उन्होंने अपने-२ नये आदर्श वाक्य चुन लिए हैं जैसे-नये ज़माने का अखबार, यंग इण्डिया-यंग न्यूज़ पेपर, नेक्स्ट-ज़ेन न्यूज़ पेपर, इण्डिया का नया टेस्ट आदि-आदि। जैसे हिंदी का प्रयोग पुराने जमाने/पिछड़ेपन की निशानी हो। यदि ये ऐसा मानते हैं तो अपने हिंदी अखबार/चैनल बंद क्यों नहीं कर देते? सारी हेकड़ी निकल जाएगी क्योंकि हम सभी जानते हैं हिंदी मीडिया समूहों द्वारा शुरू किये अंग्रेजी चैनलों/अख़बारों की कैसी हवा निकली हुई है।

> *विश्व के सभी छोटे-बड़े देशों में शासन की भाषा, शिक्षा-दीक्षा की भाषा, अभियांत्रिकी और चिकित्सा विज्ञान की भाषा उनकी अपनी भाषा है। ये देश भारत के महानगरों से भी छोटे हैं फिर भी उन्होंने अपने देशों में अपनी भाषा को लागू किया है।*

क़ानूनी रूप से देखा जाए तो सरकारी नियामकों को इनके पंजीयन/लाइसेंस को रद्द कर देना चाहिए क्योंकि इन्होंने पंजीयन/लाइसेंस हिंदी भाषा के नाम पर ले रखा है। पर इसके लिए जरूरी है कि हम पाठक/दर्शक इनके विरोध में आवाज़ उठाएँ और अपनी शिकायत संबंधित सरकारी संस्था/मंत्रालय के पास जोरदार ढंग से दर्ज करवाएँ। कुछ लोग कह सकते हैं अरे भाई इससे क्या फर्क पड़ता है? नये ज़माने के हिसाब से चलो, भाषा अब कोई मुद्दा नहीं है, जो इंग्लिश के साथ रहेगा वही टिकेगा आदि।

हिंदी के शब्दों को कुचला जा रहा है : हिंदी में न्यूज़ और खबर के लिए एक बहुत सुन्दर शब्द है 'समाचार' जिसका प्रयोग दूरदर्शन के अलावा किसी भी निजी चैनल पर वर्जित जान पड़ता है। ऐसे ही सैकड़ों हिंदी शब्दों को डुबाया/कुचला जा रहा है, नये-नये अंग्रेजी के शब्द थोपे जा रहे हैं।

समय, दर्शक, न्यायालय, उच्च शिक्षा, कारावास, असीमित, सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय, विराम, अधिनियम, ज्वार-भाटा, सड़क, विमानतल, हवाई-जहाज-विमान, मंत्री, विधायक, समिति, आयुक्त, न्यायाधीश, न्यायमूर्ति, भारतीय, अर्थदंड, विभाग, स्थानीय, हथकरघा, ग्रामीण, परिवहन, महान्यायवादी, अधिवक्ता, डाकघर, पता, सन्देश, अधिसूचना, प्रकरण, लेखा-परीक्षा, लेखक, महानगर, संवेदी सूचकांक, डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ, प्रयोगशाला, प्राथमिक शाला, परीक्षा-परिणाम, कार्यालय, पृष्ठ, मूल्य, विधेयक, चिकित्सा, वितरण आदि-आदि न जाने कितने शब्द टीवी/अखबार पर सुनाई/दिखाई ही नहीं देते।

हिंदी समाचार चैनलों और हिंदी अख़बारों में रोमन लिपि और अनावश्यक अंग्रेजी शब्दों का इस्तेमाल क्यों? क्या सचमुच हिंदी इतनी कमज़ोर और दरिद्र है? नहीं, बिल्कुल नहीं।

हमारी भाषा विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषा है और अंग्रेजी के मुकाबले लाख गुना वैज्ञानिक भाषा है। जरूरत है हिंदी वाले इस बारे में सोचें।

मुझे हिंदी से प्यार है इसलिए बड़ी खीझ उठती है, दुःख होता है। डर भी लगता है कि कहीं हिंदी के अंकों (१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, ०) की तरह धीरे-२ हमारी लिपि को भी ख़त्म न कर दिया जाए। आपको मेरी बात अतिश्योक्ति लग सकती है, पर आज से २० वर्षों बाद नज़ारा सच में भयानक होगा। आज हिंदी अंक इतिहास बन चुके हैं, पर भला हो गूगल का जिसने इनको पुनर्जीवित कर दिया है।

हिंदी संक्षेपाक्षर क्या बला है इनको पता ही नहीं : हिंदी संक्षेपाक्षर/आद्यक्षर सदियों से इस्तेमाल होते आ रहे हैं, मराठी में तो आज भी संक्षेपाक्षर का प्रयोग भरपूर किया जाता है और नये-२ संक्षेपाक्षर बनाये जाते हैं पर आज का हिंदी मीडिया इससे परहेज़ कर रहा है, देवनागरी के स्थान पर रोमन लिपि का उपयोग कर रहा है। साथ ही मीडिया हिंदी लिपि एवं हिंदी संक्षेपाक्षरों के प्रयोग को हिंदी के प्रचार में बाधा मानता है, जो पूरी तरह से निराधार और गलत है।

मैं ये मानता हूँ कि बोलचाल की भाषा में हिंदी संक्षेपाक्षरों की सीमा है पर कम से कम लेखन की भाषा में इनके प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए और जब सरल हिंदी

संक्षेपाक्षर उपलब्ध हो या बनाया जा सकता हो तो अंग्रेजी संक्षेपाक्षर का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

मैं अनुरोध करूँगा कि नए-नए सरल हिंदी संक्षेपाक्षर बनाये जाएँ और उनका भरपूर इस्तेमाल किया जाये, मैं यहाँ कुछ हिंदी संक्षेपाक्षरों की सूची देना चाहता हूँ जो हैं तो पहले से प्रचलन में हैं अथवा इनको कुछ स्थानों पर इस्तेमाल किया जाता है पर उनका प्रचार किया जाना चाहिए, आपको कुछ अटपटे और अजीब भी लग सकते हैं, पर जब हम एक विदेशी भाषा अंग्रेजी के सैकड़ों अटपटे शब्दों/व्याकरण को स्वीकार कर चुके हैं तो अपनी भाषा के थोड़े-बहुत अटपटे संक्षेपाक्षरों को भी पचा सकते हैं बस सोच बदलने की ज़रूरत है।

हिंदी हमारी अपनी भाषा है, इसके विकास की ज़िम्मेदारी हम सब पर है और मीडिया की ज़िम्मेदारी सबसे ऊपर है। अंग्रेजी के तथाकथित अंतर्राष्ट्रीय और ज्ञान की भाषा होने का तर्क सफ़ेद झूठ के अलावा कुछ नहीं है।

विश्व का कोई भी ऐसा देश जिसे अपने समाज में परिवर्तन लाना है और प्रगति करनी है, विदेशी भाषा पर निर्भर नहीं रह सकता। विशेषकर ऐसा देश जो लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास करता हो किसी भी दशा में शासन और ज्ञान की भाषा के लिए जनता की भाषा की जगह औपनिवेशिक भाषा का इस्तेमाल नहीं कर सकता। कोई भी ऐसा देश जिसे अपने आत्मसम्मान का खयाल है, विदेशी भाषा की गुलामी नहीं कर सकता।

आप चीन, जापान, कोरिया के अलावा रूस, जर्मनी, फ्रांस, इटली, स्पेन की तो बात ही छोड़ें यूरोप का छोटे से छोटा देश फिर चाहे वह स्वीडन हो या ग्रीस या पोलैंड या लुथवानिया सब की राजभाषा उनकी अपनी मातृभाषा है, और उन देशों में सारा कामकाज उनकी अपनी भाषा में ही किया जाता है, इन देशों ने सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा अपनी भाषाओं का बहुत विकास किया है, इन छोटे देशों की भाषाओं में दुनिया के ज़्यादातर सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं पर हिंदी में नहीं। विचार करने वाली बात है कि किसी भी यूरोपीय देश की राजभाषा विदेशी भाषा नहीं है।

किसी देश की राजभाषा के विकास के लिए ६७ वर्ष का समय कम नहीं होता। अगर हमने जरा भी कोशिश की होती तो प्रशासन, ज्ञान व संपर्क भाषा के सवाल को कब का सुलझा लिया होता पर हमारे शासकों को इस प्रश्न को उलझाए रखना ही श्रेयस्कर लगा। अब भारत के शासन ने सूचना प्रौद्योगिकी के नाम पर हिंदी को काफी पीछे छोड़ दिया है। शर्म की बात तो ये है कि आईटी की विश्व की श्रेष्ठ कंपनियों में गिनी जाने वाली भारतीय कंपनियों ने भी कभी हिंदी के लिए कुछ नहीं किया, न कभी करने के बारे में सोचा।

> *अपने परिवार, समाज, व्यापार, पेशे और सेवा कार्यों में यदि हम अपनी भाषा का भरपूर इस्तेमाल करने लग जाएं तो किसी की क्या मजाल कि हिंदी को बढ़ने से रोक सके। अपने बच्चों में अपनी भाषा से प्यार करने के संस्कार बचपन से डालने होंगे जैसा चीनी-जापानी अथवा फ्रांसीसी करते हैं।*

अंग्रेजी के तथाकथित अंतर्राष्ट्रीय और ज्ञान की भाषा होने का तर्क सफ़ेद झूठ के अलावा कुछ नहीं, इसका सबसे बड़ा जवाब यह है कि अगर अंग्रेजी इतनी ही आवश्यक है तो फिर छोटे से छोटे यूरोपीय देश में यह भाषा अनिवार्य क्यों नहीं है? फ्रांस, जर्मनी और रूस क्या हमसे पिछड़े हुए देश हैं? इन देशों ने अपनी भाषा के दम पर ही विकास किया है। अंग्रेजी का लगातार विस्तार कर और उसे सरकारी प्रश्रय देकर इस मिथक को मजबूत किया जा रहा है कि भारतीय भाषाएँ इस काबिल हैं ही नहीं कि वे ज्ञान-विज्ञान-चिकित्सा शास्त्र और प्रशासन की भाषा बन पाएँ।

विश्व के कई देशों ने बिना अंग्रेजी के अपना लोहा मनवाया है। विश्व के सभी छोटे-बड़े देशों में शासन की भाषा, शिक्षा-दीक्षा की भाषा, अभियांत्रिकी और चिकित्सा विज्ञान की भाषा उनकी अपनी भाषा है। ये देश भारत के महानगरों से भी छोटे हैं फिर भी उन्होंने अपने देशों में अपनी भाषा को लागू किया है। सूचना-प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करके ये देश अपनी भाषाओं को मजबूत कर रहे हैं। भारत में उल्टा हो रहा है, सूचना प्रौद्योगिकी के नाम पर हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं को शिक्षा और प्रशासनिक कार्यों से बाहर किया जा रहा है।

अपनी भाषा से प्यार करना सीखें : हिंदी देश की आधारशिला है और यही भारत की राष्ट्रीय पहचान का मूलभूत चिह्न भी है। हिंदी हमारी समृद्ध संस्कृति, इतिहास एवं गौरवशाली परंपरा का आधार स्तंभ है। अपने परिवार, समाज, व्यापार, पेशे और सेवा कार्यों में यदि हम अपनी भाषा का भरपूर इस्तेमाल करने लग जाएं तो किसी की क्या मजाल कि हिंदी को बढ़ने से रोक सके। अपने बच्चों में अपनी भाषा से प्यार करने के संस्कार बचपन से डालने होंगे जैसा चीनी-जापानी अथवा फ्रांसीसी करते हैं। हिंदी में विश्व भाषा, अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनने के सारे गुण मौजूद हैं पर भारत के कॉरपोरेट्स एवं सरकार ऐसा नहीं चाहतीं, इसलिए हर जगह अंग्रेजी थोपी जा रही। कोई तो एक दीया जलाओ, इस तम को दूर भगाओ।■

वाणी मुरारका

कम्प्यूटर विज्ञान (साफ्टवेयर) में प्रशिक्षित। चित्रकला और लेखन में रुचि। हिन्दी इंटरनेट पर विशेष योगदान : विश्व में हिन्दी की पहली वेबसाइट (http://www.kaavyaalaya.org) का १९९७ में संस्थापन।

सम्पर्क : vani.murarka@gmail.com

शब्दों की चाबी

इन दिनों मुझे शब्दों में एक अलग प्रकार की रुचि हो गई है। शब्दों के विषय में विस्मित होने का, उनमें निहित गहरे अर्थ को महसूस करने का।

अधिकतर शब्दों का एक आमतौर पर समझ में आने वाला अर्थ होता है। मगर साधारण सरल शब्दों को भी ज़रा और ध्यान से देखें तो उनके गहरे अर्थ को हम देख पाते हैं। अब यही देख लीजिए, अगर शब्द के अर्थ को समझ लें तो इसका मतलब है कि उस शब्द में छिपे धन को पा लिया। अर्थ यानी मायने भी और अर्थ यानी धन भी!

स्वस्थ : शब्दों में मेरी ऐसी रुचि इस शब्द से आरम्भ हुई 'स्वस्थ'। इसकी शुरुआत हुई मेरे व्यक्तिगत जीवन के एक विशेष मोड़ पर। मैं बहुत बीमार थी और कई महीनों तक ज़िन्दगी के सब कार्य छोड़ कर एकदम निर्भर अवस्था में अपने माता-पिता के घर में थी। उन्ही दिनों एक दिन पापा मेरे पास बैठे थे और किसी प्रकार से ये बात चली। पापा ने कहा 'स्वस्थ होना क्या है? जो 'स्वयं में स्थित' है, वह स्वस्थ (स्व/स्थ)।' इस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मैंने पाया है कि इस बात में अनन्त सच्चाई है। ज़िन्दगी के हर स्तर पर - शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक। वास्तव में असली स्वास्थ्य स्वयं में स्थित होने से ही प्राप्त होता है। इस एक शब्द से तो मेरी एक पूरी खोज आरम्भ हो गई, बल्कि ज़िन्दगी की यही एकमात्र खोज है।

विश्व में बार-बार अलग-अलग ढंग से यह पाया गया है कि रोग का सच्चा उपचार तब होता है जब इंसान के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सब स्तरों के रोग का उपचार हो। हमारे अंदर मानसिक, भावनात्मक गांठ ही शारीरिक अथवा मानसिक रोग का रूप लेती है। अपने निजी स्वास्थ्य की समस्या को गहराई से देखने के प्रयास से मैंने जाना है कि यह बात बिल्कुल सच है। यह गांठ हमें अपने असली पूर्ण रूप से दूर रखती हैं। जैसे-जैसे हम स्वयं को जान पाते हैं और अपने अन्दर की गांठों को खोल पाते हैं, हम रोग मुक्त होते चले जाते हैं। यह बात विस्तार से मैंने पहली बार 'You Can

> *रोग का सच्चा उपचार तब होता है जब इंसान के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक सब स्तरों के रोग का उपचार हो। हमारे अंदर मानसिक, भावनात्मक गांठ ही शारीरिक अथवा मानसिक रोग का रूप लेती है।*

Heal Your Life, Louise Hay' पुस्तक के द्वारा जानी। योगाभ्यास के द्वारा आरोग्य प्राप्त करने में भी मूलतः यही एक बात है।

मुझे यह सोच कर बहुत आश्चर्य महसूस होता है कि यह सच्चाई, इतना बड़ा ज्ञान, इस एक शब्द में छिपा है : 'स्वस्थ'। जो स्वयं में स्थित है वह स्वस्थ। मतलब कि अगर तुम अस्वस्थ हो तो तुम स्वयं में स्थित नहीं हो।

स्वास्थ्य सिर्फ शारीरिक नहीं होता। ज़िन्दगी के किसी भी पहलू में हमें यदि तनाव महसूस होता है, वही रोग है। लगभग हम सभी किसी न किसी स्तर पर रिश्तों में तनाव महसूस करते है। इस रोग के निवारण की चाबी भी इसी 'स्वस्थ' शब्द में है।

रिश्तों में हमारी प्रवृत्ति यह होती है कि हम दूसरे पर ध्यान केन्द्रित करते हैं - उसे क्या करना चाहिए, क्या कहना चाहिए, कैसे कहना चाहिए। बिना जागरूकता के हमें दूसरे व्यक्ति से विभिन्न अपेक्षाएं होती हैं। इस प्रवृत्ति के कारण हमें विभिन्न मानसिक पीड़ा झेलनी पड़ती हैं। अगर हम स्वयं पर ध्यान केन्द्रित करें - मैं इस वक्त क्या महसूस कर रही हूँ? मेरी क्या आवश्यकता है? मेरे विचार क्या हैं? मेरा स्वयं के प्रति क्या आचरण है? मुझमें जो भावनाएं उमड़ रहीं हैं उनकी जड़ क्या है? स्वयं में भावनात्मक और विचारात्मक रूप से, जागरूकता के साथ स्थित होने पर यह सवाल और उनके जवाब, दोनों ही स्वतः हममें उभरते हैं। हम परत-दर-परत अपने आचरण को, विचारों को, दर्द को, क्षमताओं व कमज़ोरियों को समझ पाते हैं। यह जान पाते हैं कि हम अपने में क्या बदलाव ला सकते हैं जिससे कि हम स्थाई खुशी की ओर अग्रसर हो सकें। यह एक अत्यन्त विश्लेषणात्मक क्रिया होती है मगर यह विश्लेषण करने से नहीं होती, होने से होती है।

इस प्रकार से स्वयं पर ध्यान केन्द्रित करने में दूसरे व्यक्ति की अवहेलना नहीं होती है। बल्कि हमारा साथी जैसा है उसे अपनाने में हम अधिक सक्षम होते हैं। अपनी ज़रूरतों को भी हम स्पष्ट रूप से व्यक्त कर पाते है, बजाए इसके कि अपने साथी से अव्यक्त अपेक्षाएं रखें। स्वयं पर ध्यान केन्द्रित करने से सभी प्रकार के रिश्तों में गहरा सुधार आता है। ऐसा नज़रिया रखना प्रारम्भ में अत्यन्त कष्टकर होता है, पर धीरे-धीरे हम अपने अन्दर के तनाव से जड़ से मुक्त होते हैं। यह शिक्षा मुझे 'The Dance of Intimacy, by Harriet Lerner' पुस्तक से प्राप्त हुआ। मगर फिर वही बात - इस समस्त ज्ञान की चाबी 'स्वस्थ' शब्द में है।

वि : इसी प्रकार से 'वि' उपसर्ग (prefix) मुझे बड़ा जादुई लगता है। किसी शब्द के आगे 'वि' जोड़ने से शब्द का

हम परत-दर-परत अपने आचरण को, विचारों को, दर्द को, क्षमताओं व कमज़ोरियों को समझ पाते हैं। यह जान पाते हैं कि हम अपने में क्या बदलाव ला सकते हैं जिससे कि हम स्थाई खुशी की ओर अग्रसर हो सकें।

अर्थ या तो उल्टा हो सकता है, विपरीत (opposite) या परिवर्धित हो सकता है, विशेषण (amplified)। जैसे कि 'विमल' - मल अर्थात मैल, विमल अर्थात स्वच्छ (विपरीत)। उसी प्रकार से, परिवर्धन का एक उदाहरण -'विनाश' अर्थात भयंकर नाश।

इस 'वि' उपसर्ग को गणित की संख्या रेखा की दृष्टि से देखें। संख्या रेखा के बीच में शून्य होता है, दाहिनी ओर धनांक (positive numbers) और बायीं ओर ऋणांक (negative numbers) होते हैं।

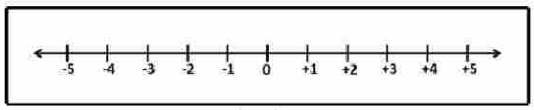

संख्या रेखा

'वि' उपसर्ग का विपरीतार्थक असर लगता है जैसे विपरीत दिशा में, यानी बाईं (negative) दिशा में जा रहे हैं। 'वि' उपसर्ग से अर्थ का परिवर्धन हो तो लगता है जैसे सांख्य रेखा पर दाहिने ओर, positive की दिशा में, बढ़ोत्तरी की ओर जा रहे हैं। जब दोनों ही 'वि' उपसर्ग से व्यक्त किया जाता है तो क्या दोनों positive और negative इतने अलग हैं जितना कि हम उसे आमतौर पर सोचते हैं? ऐसा महसूस होता है कि अगर दोनों में से किसी भी दिशा में चलते जाएं तो किसी एक बिन्दु पर, किसी एक क्षण में, यह अन्तर लुप्त हो जाएगा और हम पाएंगे कि दोनों एक ही है। हां कई आध्यात्मिक ग्रंथों में यही कहा गया है - कि हम उस बिन्दु को तब पाते हैं जब जीवन के समस्त स्तरों पर दिखने वाले द्विविधता (duality) को एक जान लेते हैं - सुख-दुख, सर्दी-गर्मी, मान-अपमान, लाभ-हानि।

'वि' उपसर्ग का यह असर सबसे ज़्यादा मैं वियोग शब्द से महसूस करती हूँ। योग मतलब जुड़ना, एक होना। तो वियोग

उसका विपरीत, अलगाव। मगर फिर उस अलगाव में ही, वियोग से ही, जिससे हम लगाव की इच्छा रखते हैं उसके संग एक विशेष लगाव को जान पाते हैं। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि 'वि' उपसर्ग का यह हमें सन्देश है कि संसार में नज़र आने वाली द्विविधता वास्तव में एक ही है।

सहना : अब चलते हैं एक और साधारण शब्द की ओर : 'सहना'। दर्द सहना, पीड़ा सहना। क्या है इस शब्द का असली अर्थ? बहुत आसान शब्द है और लगता है कि हम सब इसके मायने जानते हैं। मगर थोड़ी और गहराई से देखते हैं।

सहना, सहो, यह क्रिया शब्द हैं, अर्थात सहने में हमें कुछ करना है। पर अगर हमसे कोई कहे 'सहो', तो हमें करना क्या है? सह माने साथ। अतः, सहो माने 'साथो' अर्थात 'साथ रहो', सहना माने 'साथना' अर्थात 'साथ रहना'। उस एहसास के साथ रहना। इसमें कोई शहीद की तरह कष्ट झेलने की बात नहीं है। न कुछ अच्छा लगने की बात है, न कुछ बुरा लगने की। एक स्पष्ट सरल बात है - बस साथ रहो, उस दर्द के साथ, पीड़ा के साथ रहो। जब हम सच में अपने एहसास के साथ बस बैठते हैं, न तो उससे छुटकारा पाने को छटपटाते हैं और न ही उसे गले लगाते हैं, बस सिर्फ साथ बैठते हैं, तब वही एहसास रंग बदल कर हमें दिखाई देता है। उसमें निहित किसी धन को हम प्राप्त करते हैं। बल्कि जब उसे भगा देने की कोशिश करते हैं तो असल में उसे जकड़ कर गले ही लगा रहे होते हैं! इस सहने में महसूस करना ही नहीं होता है, मगर एक और सूक्ष्म बात होती है, देखने की बात - जो कि कुछ दूरी बनाए रखने से ही होती है।

दर्द के साथ इस प्रकार से रहने से हमें नज़र आता है कि हमें जो दर्द लग रहा था वह वास्तव में मात्र विभिन्न छोटी-छोटी अनुभूतियों की एक लड़ी है, और हर एक अनुभूति अपने में कष्टकर नहीं है! फिर इस सहने की क्रिया से हम यह जान पाते हैं कि सिर्फ वह दर्द ही हम नहीं हैं, उस दर्द के दौरान भी उसके परे हमारा एक अस्तित्व है, जो कायम है। चाहे वह दर्द कितना ही भयंकर क्यों न हो। दर्द को सच्चे अर्थों में सहने की यह एक विशेष उपलब्धि है। यह उपलब्धि तब नहीं होती है जब हम घबड़ा कर दर्द को दूर करने की कोशिश करते है।

मानसिक अथवा भावनात्मक दर्द की अपेक्षा, शारीरिक दर्द को इस प्रकार से सहना ज़्यादा सरल है। अगर हम शारीरिक दर्द को इस प्रकार से सहें, तब उस अनुभव के ज़रिए हमें मानसिक दर्द को भी इस प्रकार से सहने की शक्ति मिलती है। फिर भी दर्द हमारे सम्मुख जिस भी रूप में आए, उसके संग बैठने में, उसे देखने में बड़ा लाभ है।

इस प्रकार से शब्दों में छिपि निधियां सिर्फ हिन्दी के शब्दों में ही नहीं हैं शायद। उदाहरण के तौर पर, 'सहना' के संदर्भ में, suffer शब्द का पुराना अर्थ था to allow. Bible में एक जगह क्राइस्ट कहते हैं 'suffer the little children unto me'. उनका अभिप्राय था "allow the little children to come to me." पहले तो suffer का अर्थ allow होने पर, 'सहो' शब्द के संदेश से कितना मिलता है। उस पर "allow the little children to come to me." का अन्दरूनी संदेश मुझे यह लगता है : हम सबके अन्दर एक मासूम शिशु है, चाहे हमारी उम्र जो भी हो। ज़िन्दगी के जो भी छोटे-बड़े आघात होते हैं उससे हमारा शिशु-मन ही आहत होता है। मेरे विचार में क्राइस्ट की इस बात से उनका तात्पर्य है कि हम अपने अन्दर के मासूम, आहत शिशु को पहचानें और उस आहत शिशु को ईश्वर की गोद में रख दें। वे बुला रहे हैं उस शिशु को, जिससे कि वह उसे अपार प्रेम दें सकें, और उसके मन में दर्द रूपी जो विष छिपा है, उसका पान कर हमें दर्द-मुक्त कर सकें।

खैर, मेरी बात सिर्फ इतनी है कि एक साधारण शब्द के अन्दर झांक कर देखने से लगता है कि जीवन जीने के लिए जो ज्ञान हमें चाहिए वह बस उस साधारण शब्द में ही पूरी तरह से अभिव्यक्त है। लगता है इसी प्रकार से कई साधारण शब्दों में अपार निधियां छिपी हुई हैं, मसलन, स्वाद, जल, जन, हर...

मेरा मन कहता है कि यह बात हर एक शब्द पर लागू है। हर शब्द मानों एक पिटारी है। उसे खोलो तो अनमोल खजाना मिलेगा और उस पिटारी को खोलने की चाबी स्वयं वह शब्द ही है। सामने पड़ा है हम सब के। जो जी चाहे उस खजाने को प्राप्त कर ले! बस दो क्षण रुक कर देखने की देर है। ■

"मानसिक अथवा भावनात्मक दर्द की अपेक्षा, शारीरिक दर्द को इस प्रकार से सहना ज़्यादा सरल है। अगर हम शारीरिक दर्द को इस प्रकार से सहें, तब उस अनुभव के ज़रिए हमें मानसिक दर्द को भी इस प्रकार से सहने की शक्ति मिलती है।"

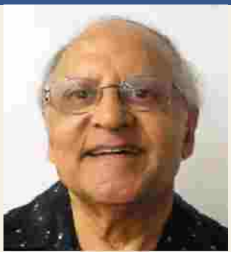

विजय निकोर

दिसम्बर १९४१ में लाहौर में जन्म. १९४७ में देश के दुखद के बँटवारे के बाद दिल्ली में निवास और अब १९६५ से अमेरिका में हैं. हिन्दी और अंग्रेज़ी में अनेक रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित. कवि सम्मेलनों में नियमित रूप से भाग लेते हैं एवं पतझड़ में सूखे पत्तों पर चलना अच्छा लगता है.

सम्पर्क : vijay3@comcast.net

संस्मरण

एक तान अबूझी-सी

यह संस्मरण उस लेखक पर है जिसने केवल अपनी ही ज़िन्दगी नहीं जी, अपितु उस प्रत्येक मानव की ज़िन्दगी जी है जिसने ज़िदगी और मौत को, खुशी और ग़म को, एक ही प्याले में घोल कर पिया है। जिसके लिए ज़िन्दगी की 'खामोशी की बर्फ़ कहीं से भी टूटती पिघलती नहीं थी।'

यह संस्मरण उस महान कवयित्री पर है जो सारी उम्र कल्पना के गीत लिखती रही।

'...पर मैं वह नहीं हूँ जिसे कोई आवाज़ दे और मैं यह भी जानती हूँ, मेरी आवाज़ का कोई जवाब नहीं आएगा।'

उसने एक बार फिर ज़िन्दगी से निवेदन किया, 'तुम्हारे पैरों की आहट सुनकर मैंने ज़िन्दगी से कहा था, अभी दरवाज़ा बंद नहीं करो हयात। रेगिस्तान से किसी के कदमों की आवाज़ आ रही है।'

इस भूमिका के बाद, अब कह दूँ कि यह संस्मरण है पंजाबी की सर्वश्रेष्ठ लेखिका अमृता प्रीतम से मिलन का, जिनसे मुझको १९६३ में मेरी २१ वर्ष की अल्प आयु में कई बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। हर कोई शायद उस पड़ाव पर सोचता है कि वह बहुत बुद्धिशाली है, बहुत कुछ जानता है, समझता है, पर मैं समय के माहौल के लिए उपयुक्त नहीं था। मैं दुनियादारी में बहुत भोला था, सरल था और अभी भी हूँ।

> *मैं इस खत को हाथ में लिए न जाने कितनी बार सीढ़ियों पर ऊपर-से-नीचे-से-ऊपर गया। जैसे कोई बच्चा हाथ में नया खिलौना लिए मेले में खो जाता है। खिलौने की खुशी और खो जाने की चिंता!*

एक बड़ा अंतर था मुझमें और मेरे हम-उम्र वालों में। उनके लिए ज़िन्दगी हँसी-मज़ाक के लिए थी, मैं भी उनके साथ खेलता था, हँसता था, पर अकेले में उदासी की खाई में उतर कर ज़िन्दगी को परखता था। ऊपर-नीचे-आगे-पीछे। अमृता जी से मिलने पर पहली बार ही उन्होंने मेरी इस प्रकृति को पहचान लिया।

अमृता जी के लिए उनकी सारी ज़िन्दगी जैसे एक खत थी, '...मेरे दिल की हर धड़कन एक अक्षर है, मेरी हर साँस जैसे कोई मात्रा, हर दिन जैसे कोई वाक्य, और सारी ज़िन्दगी जैसे एक ख़त। अगर किसी तरह यह ख़त तुम्हारे पास पहुँच जाता, मुझे किसी भी भाषा के शब्दों की मोहताजी न होती।'

मैं उस समय तक अमृता प्रीतम जी की कई पुस्तकें शौक से पढ़ चुका था, 'रंग का पत्ता', 'अशु', 'एक थी अनीता', 'बंद दरवाज़ा' आदि। अब धर्मयुग पत्रिका में उनकी एक कविता प्रकाशित हुई जिसके नीचे उनका पता भी लिखा हुआ था... के-२५ हौज़ खास, नई दिल्ली। मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मैं भी तब नई दिल्ली में ही रहता था, सोचा, कितना अच्छा हो कि

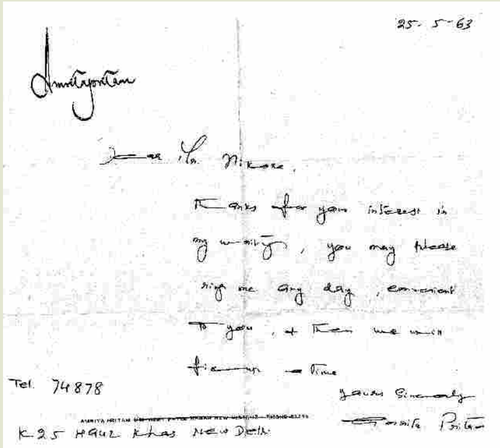
25-5-63

Amrita Pritam

Dear Mr. Nikore,

Thanks for your interest in my writing, you may please ring me any day, convenient to you, & then we will fix up a time

Tel. 74878

Yours Sincerely
Amrita Pritam

K-25 Hauz Khas New Delhi

अमृता प्रीतम द्वारा लिखी चिट्ठी

यदि उनसे संपर्क हो जाए। अतः एक छोटे-से पत्र में अपना परिचय दे कर उन्हें लिखा कि मैं उनसे मिलने को उत्सुक हूँ।

बार-बार संकोच हो रहा था कि वह मुझको, एक २१ वर्ष के अनुभवहीन को, अपना समय क्यूँ देंगी, परन्तु मैं गल्त था। हैरान था, विश्वास नहीं हो रहा था जब डाक में मेरे नाम एक लिफ़ाफ़ा आया। यह अमृता जी का पत्र था। दूरभाष नम्बर दिया और कहा कि वह मुझसे मिल सकती हैं।

सच, मैं २१ साल का बच्चा मन ही मन फूला नहीं समा रहा था। खुशी बाँटूं तो किस से? मित्रों को तो साहित्य में रुचि नहीं थी। हाँ, मैंने यह खुशी बाँटी एक 'उससे' जो अपनी-सी लगती थी और अपनी भाभी से जिसको मेरी उदास रचनाएँ भी अच्छी लगती थीं। मैं इस खत को हाथ में लिए न जाने कितनी बार सीढ़ियों पर ऊपर-से-नीचे-से-ऊपर गया। जैसे कोई बच्चा हाथ में नया खिलौना लिए मेले में खो जाता है। खिलौने की खुशी और खो जाने की चिंता!

भारत में १९६३ में घरों में दूरभाष अभी आम नहीं थे। मैं अमीर परिवार से नहीं था, घर में तब दूरभाष नहीं था। लगभग ८०० गज़ चल कर बाज़ार में अनाज की दुकान पर दुकानदार को ५० पैसे दे कर उसके दूरभाष से अमृता जी से बात करी। उन्होंने स्वयं ही उठाया। उनकी आवाज़ सुन कर मैं हैरान कि जैसे पल भर को मेरे मुँह में आवाज़ नहीं थी। 'मैं... मैं... विजय निकोर' मेरा नाम सुनने पर उन्होंने कोई दूरी नहीं दिखाई कि जैसे उन्हें मेरा नाम याद था। यह ३० मई १९६३ को ३ जून को मिलना तय हुआ। कहने लगीं, 'कुछ देर से घर पर मज़दूर काम कर रहे हैं, शायद कुछ आवाज़ होगी. आप बुरा न माने तो...'

'मैं...? मैं बुरा क्या मानता, मेरे तो पाँव धरती पर नहीं टिक रहे थे। मिलने की प्रत्याशा में इस २१ वर्ष के बच्चे को रातों नींद नहीं आ रही थी। एक-एक पहर भारी हो रहा था।

३ जून की शाम आई और मैं बस पर दिल्ली के जंगपुरा से हौज़ खास गया।

के-२५ पर घंटी बजाई तो दरवाज़े पर अमृता जी खुद ही थीं। बैठक में ले गईं और बैठने के लिए सोफ़े की ओर संकेत किया। २ लम्बे सोफ़े थे, १ सोफ़ा-कुर्सी थी और तीनों का रंग अलग-अलग था।

अमृता जी स्वयं कुर्सी पर बैठीं। सादी सलवार-कमीज़, चेहरे पर रौनक थी, सुखद मुस्कान थी जो मेरी उत्सुक्तावश चिंता को दूर कर रही थी। मेरे चेहरे पर उन्हें कुछ दिखा होगा कि उन्होंने कहा, 'आराम से बैठिए, घर की ही बात है।'

पहले थोड़ी इधर-उधर की बात की, और फिर कविता की, उनके साहित्य की।

विजय - 'आप पहले पटेल नगर में रहती थीं न?'

अमृता जी - 'हाँ, हाल ही में आए हैं यहाँ, तभी तो कब से घर पर काम चल रहा है।'

वि. - 'आप तो वैसे मुझसे पहली बार मिल रही हैं, लेकिन मुझको लगता है कि मैं आपसे बहुत बार मिल चुका हूँ। जब-जब आपकी कोई किताब पढ़ी, नज़्म पढ़ी, उसकी गहराई बहुत अपनी-सी लगी, कि जैसे उसमें मैं आपको देख रहा हूँ, उसे आपसे ही सुन रहा हूँ।'

अमृता जी ने एक हल्की आधी मुस्कान दी, पलकें झपकीं, कि जैसे उन्होंने मेरी बात को, सराहना को, स्वीकार कर लिया हो।

अ. - 'आप यहाँ दिल्ली में ही रहते हैं?'

वि. - 'हाँ, माता-पिता यहाँ हैं, मैं २ साल से इन्जनीयरिंग कालेज में बाहर था, अभी मई में दिल्ली वापस आया हूँ। फ़ाईनल परीक्षा के नतीजे का इन्तज़ार है।'

अ. - 'आपने मेरी चीज़ें हिन्दी और अंग्रेज़ी में ही पढ़ी होंगी?'

वि. - 'हाँ, बहुत सारी तो हिन्दी में और कुछ अंग्रेज़ी में भी। आप तो पंजाबी में लिखती हैं न तो यह हिन्दी और अंग्रेज़ी में अनुवाद हैं क्या?'

अ. - 'मैं, तो पंजाबी में ही लिखती हूँ, और कभी-कभी हिन्दी में भी। अंग्रेजी की तो सभी अनुवाद ही हैं।'

वि. - 'धर्मयुग में आपकी कविता अभी हाल में ही पढ़ी थी, जिसमें आपने लिखा है, 'विरह के नीले खरल में हमने ज़िन्दगी का काजल पीसा / रोज़ रात को आसमान आता है और एक सलाई माँगता है।'

अ. - 'अच्छा वह!'

वि. - 'उसमें एक चीज़ मेरे लिए स्पष्ट नहीं हुई। वहाँ पर आपने 'नीला खरल' कैसे कहा है?'

अ. - 'वह पंजाबी में इस तरह है जी कि, आप पंजाबी जानते हैं क्या, तो मैं आपको पंजाबी में ही बताती हूँ।

वि. - 'जी, मैं भी पंजाबी हूँ। बोलता हूँ, समझता हूँ। आप

गुजरांवाला से हैं, मेरा परिवार मुल्तान से है। मैं लाहोर में पैदा हुआ था।'

अ. - 'अच्छा, फिर तो पंजाबी में ही अच्छी तरह बात कर लेंगे।'

अब वह 'नीले खरल' पर प्रश्न का उत्तर पंजाबी में देने लगीं। उनके मुँह से पंजाबी सुन कर मुझको बहुत अच्छा लगा, कि जैसे वह मुझको अब कुछ ही देर में 'अपना' मान रही हैं। उनके चेहरे पर भी मुझको कुछ और सरलता का आभास हुआ। बहुत सादगी दिख रही थी उनमें। इतने ऊँचे स्तर पर। इतनी सादगी! उनमें अहम नहीं दिख रहा था।

अ. (पंजाबी में) - 'ए खरल होंदा ए न, जिदे विच ए कुटदे ने, ओ नीले पत्थर दा बंढ़या होंदा ए। ऐ इक बड़ा ई खूबसूरत पत्थर होंदा वे, ते ओदे अंदर जिवें ज़िन्दगी दा सुर्मा पीसढ़ाँ होवे... ऐथे ओदी गल कीती ए।

अनुवाद : यह ओखली होती है न जिसमें किसी चीज़ को कूटते हैं, वह नीले पत्थर की बनी होती है। यह एक बहुत ही खूबसूरत पत्थर होता है, तो उसमें जैसे ज़िन्दगी का सुर्मा पीसना हो। यहाँ उसकी बात करी है।

वि. - 'और आगे आपने कहा, रोज़ रात को आसमान आता है और एक सलाई माँगता है। this gives a beautiful anology to life!'

अ. - 'पंजाबी में सुनाऊँ? रोज़ रातीं अम्बर आंदा ए, ते इक सलाई मंगदा ए।'

वि. - 'इतने थोड़े-से शब्दों में आपने ज़िन्दगी की कितनी गहराई दे दी है! सच, हम विरह को रात को ही ज़्यादा अनुभव करते हैं। नींद के समय।

अ. - 'विजय जी आप हिन्दी में लिखते हैं या?'

वि. - 'इससे पहले कि मैं आपके सवाल का जवाब दूँ, आप मुझको यह जी कह कर क्यूँ बुला रही हैं? मैं तो आपसे कितना छोटा हूँ। अभी-अभी कालेज खत्म किया है।'

अ. - 'छोटे भले ही हो, पर समझदारी में, ख़यालों में, शक्ल में, अलग किस्म की सचाई उभर रही है, यह समझदारी २१ साल की उम्र की नहीं लगती।'

वि. - 'हाँ तो आपके सवाल का जवाब। ज़्यादातर तो हिन्दी में लिखता हूँ और कुछ अंग्रेज़ी में भी। (अमृता जी को अपनी college magazines देते हुए)। यह एक है जो अभी हाल ही में छपी थी। पढ़ कर सुनाऊँ क्या?'

अ. - 'नहीं, छपी हुई है तो मैं खुद ही अच्छी तरह पढ़ लूँगी, ज़्यादा अच्छा लगेगा।'

इस पर अमृता जी ने मेरी रचना को पढ़ कर सुनाया और मुझको भी अपनी रचना उनके मुँह से सुनी ज़्यादा अच्छी लगी। पढ़ते-पढ़ते अंत में उन्होंने रचना के नीचे मेरा नाम थोड़ा ज़ोर से पढ़ा। Vijay Nikore, Electrical Engineering, Final Year.

> उनके शब्द मेरे लिए, खाली २१ साल के युवक के लिए कितना मायने रखते थे, यहाँ शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर सकता। मुझे लगा कि मैंने नादानी में कोई गलती नहीं करी, कि वह खुद ही फिर से मिलने के लिए कह रही हैं।

उसी समय उन्हें एक टेलीफ़ोन आ गया। घर पर काम चल रहा था न, उसके बारे में।

अमृता जी किसी से पंजाबी में कह रही थीं, 'हाँ जी, मरज़ी दा कम कराण लई, पैसे वी ते मरज़ी दे ई देणें पैंदें ने न।'

अनुवाद - 'मर्ज़ी का काम कराने के लिए पैसे भी तो मर्ज़ी के ही देने पड़ते हैं न।'

वि. - 'कालेज में मेरे दोस्तों को मेरा लिखना अच्छा नहीं लगता था, उन्हें सिर्फ़ हँसी-मज़ाक चाहिए था न।'

अ. - 'हाँ जी, ऐसा तो होता ही है। तो आप लिखते कब थे?'

वि. - 'रात को जब सो जाते थे। लिखने के लिए बस थोड़ी-सी चिंगारी की ज़रूरत होती है, एक बार शुरू करो तो कलम लिखती ही चली जाती है।'

अ. - 'हाँ, एक बार शुरू हो जाए बस।'

वे मैगज़ीन से मेरी एक और रचना `Knitting Goes On' को ऊँचा पढ़ते हुए, कहने लगीं, 'विजय जी, यह तो बहुत सीरियस है।' कुछ हैरानी, कुछ अधखिली मुसकान के साथ, कहने लगीं, 'इतनी सीरियस! यह आपके दोस्तों ने, आपके कालेज ने कैसे स्वीकार कर ली?'

उसके बाद मैंने उनसे उनकी अपनी कविताएँ पढ़ कर सुनाने के लिए कहा तो कहने लगीं, 'आज आपकी पढ़ेंगे, अगली बार मिलेंगे तो मैं और सुनाऊँगी।'

उनके यह शब्द मेरे लिए, खाली २१ साल के युवक के लिए कितना मायने रखते थे, यहाँ शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर सकता। मुझे लगा कि मैंने नादानी में कोई गलती नहीं करी, कि वह खुद ही फिर से मिलने के लिए कह रही हैं।

कहने लगीं, 'और कौन-सी चीज़ लाए हो?' इस पर मैंने उन्हें अपनी कविता 'अंगीठी' पढ़ने को दी, जिसकी अंतिम पंक्ति थी... माँ, और ऐसा भी तो हो सकता है कि किसी दिन इस अंगीठी में मिट्टी कम और कालिख अधिक रह जाए...

यह पढ़ते ही वह कहने लगीं, 'यह तो बहुत ही अच्छी लिखी है। पढ़ते-पढ़ते हमें भी लगा कि इसका अंत आप कुछ ऐसा गहरा ही करेंगे! अब मैं आपकी सोच की गहराई को देख सकती हूँ।'

एक लम्बी साँस ले कर, (मुझको लगा मेरी 'अंगीठी' कविता ने उन्हें किसी हादसे की याद दिला दी, पर मैंने उस समय कुछ भी कहना ठीक नहीं समझा) कहने लगीं, 'इतनी छोटी उम्र में ज़िन्दगी का असली अहसास कैसे हो गया?'

वि. - 'यह बात उम्र की इतनी नहीं है, बात अनुभव की। अपनी-अपनी प्रकृति की है।'

अ. - (पंजाबी में) 'आहो, आदमी दे experience दे नाल बड़ा फ़रक पैंदा ए। ओ ते है, पर ज़िन्दगी दी जेड़ी प्यास होंदी वे, ओदा एहसास बोंताँ नूँ चाली साल दी उमर दे बाद ई होंदा ए।'

अनुवाद - 'हाँ, आदमी के experience के साथ बड़ा फ़रक पड़ता है। पर ज़िन्दगी की जो प्यास होती है, उसका एहसास बहुतों को चालीस की आयु के बाद ही होता है।'

वि. - 'मेरे सामने तीन किस्म के लोग हैं जो ज़िन्दगी को अलग-अलग तरीके से देखते हैं। एक जो ज़िन्दगी को दूर से देखने में खुश हैं, दूसरे जो ज़िन्दगी से थोड़ा भीग जाते हैं, और तीसरे वह जो ज़िन्दगी को घूँट-घूँट पीते हैं।'

अ. - 'हाँ, writers, philosophers का तो अपना ही angle होता है। देखने को आपका भी वैसा ही है। उनकी तो अन्दर से आवाज़ आती है, और बाकी तो अपना-अपना तरीका होता है लिखने का जिसे आम दुनिया समझ नहीं सकती।'

और फिर अमृता जी ने मेरी एक और कविता पढ़ी... अंतिम पंक्ति थी, *इस व्यथित जीवन को वही पहचाने जिसने अश्रुजल से प्यास बुझाई हो।*

अ. - 'आपके ख़याल अच्छे हैं, आपकी नज़्में इतनी अच्छी हैं, इनको रसालों में क्यों नहीं छपवाते?'

> *मेरे सामने तीन किस्म के लोग हैं जो ज़िन्दगी को अलग-अलग तरीके से देखते हैं। एक जो ज़िन्दगी को दूर से देखने में खुश हैं, दूसरे जो ज़िन्दगी से थोड़ा भीग जाते हैं, और तीसरे वह जो ज़िन्दगी को घूँट-घूँट पीते हैं।*

वि. - 'अभी तो कालेज में था तो ऐसा सोचा नहीं, कालेज magazines में देता रहा, अब आपने कहा, अच्छी हैं, तो बाहर भी भेजूँगा।'

'एक बात पूछूँ? आपको इतना लिखने का वक्त कैसे मिलता है?'

अ. - 'यही तो मुश्किल है। आजकल तो और भी कम मिलता है, घर में contractors काम कर रहे हैं न।'

अमृता जी ने काम करने वाली से चाय और समोसे लाने के लिए कह रखा था। वह बना चुकी थी, अतः rolling cart पर tray में चाय, दूध, चीनी और समोसे ले आई।

चाय प्याले में डालने लगी थी, पर अमृता जी ने उसे मना कर दिया, कहने लगीं 'मैं अपने हाथ से चीनी-दूध डाल कर बनाऊँगी इनके लिए।'

उसी समय अमृता जी का लड़का 'Sally' भी मिलने के लिए कमरे में आ गया।

अ. - 'यह मेरा बेटा है जी 'Sally' Higher secondary अभी खतम करी है, exams हो रहे हैं। engineering में जाने के लिए तैयार था, पर अब जाने क्यूँ अचानक खयाल बदल लिया है। Sally, यह विजय हैं, अभी engineering का exam देकर आए हैं, कहते हैं, बहुत मेहनत करनी पड़ती है।'

Sally - 'अब मैं Dufferin से Merchant Navy में जाना चाहता हूँ।

अ. - 'इसका कल इम्तहान है और आज खेल रहा है। वैसे Baroda Engineering College में इसे आराम से admission मिल जाती, जान-पहचान भी थी, पर अब यह engineering के लिए जाना ही नहीं चाहता।'

मैं Sally से थोड़ी बातें कर रहा था, और अमृता जी ने तब तक प्याले में चाय बना दी और समोसे के साथ मुझको दी। प्यालों को देख कर मुझको अमृता जी के बारे में कुछ याद आ गया और मैंने उनसे पूछा।

वि. - (पंजाबी में) 'तुसीं अजकल multi-coloured cup नईं रखे होए? इक थां ते लिखया सी न तुसीं, तिन रंग दे कप दे बारे विच?'

(अनु. - 'आपने आजकल multi-coloured cups नहीं रखे हुए? आपने एक जगह पर लिखा था न तीन रंगों के कप के बारे में?')

अ. - 'अच्छा ओ! ओ ते सारे ई टुट गय नें। थुवानूँ इना किदाँ याद रैंदै, कमाल ए!'

(अनु. - 'अच्छा वह! वह तो सारे ही टूट गए हैं', उन्होंने एक बहुत ही उदास लम्बी साँस ले कर कहा। 'आपको इतना कैसे याद रहता है, कमाल है!')

वि. - 'इक काला सी, ओ मातम दे लै, फ़िर पीला, ते तीजा केड़ा सी?'

(अनु. - 'एक काला था, वह मातम के लिए, फिर पीला, और तीसरा ?')

अ. - 'हाँ जी, काला मातम दा, पीला विरह दा, ते तीजा केसरी...? शौख़ रंग हौंदा ए। ओ ते सारा ई सैट खतम हो गया ऐ। Readers दी curiosity appreciate करणी पैयगी। इक होर ने वी एदाँ ई क्या सी।'

(अनु.- 'हाँ जी, काला मातम का, पीला विरह का, और तीसरा केसरी...? केसरी शोख़ रंग होता है। वह तो सारा ही set खतम हो गया है। Readers की curiosity तो appreciate करनी पड़ेगी, एक और ने भी ऐसे ही कहा था।')

वि. - "Or, shall I say that you write so nice that you go deep into the hearts of the readers, and they cannot help remember the details और फिर आपने रंगों के combination तो अभी भी रखे ही हुए हैं।' दो सोफ़ा, और एक सोफ़ा-चेयर... तीनों अलग-अलग रंग के थे।

अमृता जी ने सामने की बिल्डिंग दिखाई, 'वहाँ एक Colonel रहते हैं।'

वि. - 'आपके मकान पर हो रहे काम को देख कर मुझको एक बात याद आ गई है। आपने डॉ. राम दरश मिश्र का नाम सुना होगा, आजकल अहमदाबाद में हैं।'

अ. - 'हाँ जी, मैं जानती हूँ।'

वि. - 'अभी उनकी एक किताब आई है 'बैरंग बेनाम चिट्ठियाँ' उसमें एक नज़्म है, 'निशान', उसकी आखरी लाईनों में उन्होंने कहा है... *तुमने जो मज़ाक-मज़ाक में / गीली सीमेंट पर / मुलायम पाँव रख दिया था / उसका निशान ज्यों का त्यों है।*

अ. - 'यह तो बहुत ही अच्छा ख़याल है।'

वि. - 'हाँ जी, डाक्टर मिश्र के कहने का अंदाज़ कुछ और ही है।'

अ. - 'हाँ जी, बिलकुल।'

वि. - 'आपने भी तो कहीं पर लिखा था- मेरे इश्क के घाव।'

अ. - 'हाँ, अरे, आपको याद है!'

और फिर अमृता जी कुछ ज़ोर से हँस पड़ीं।

पल-दो-पल की चुप्पी। उन्होंने पलकें बंद कर लीं। जैसे भीतर कुछ डस रहा हो, और फिर कहा, 'सुनेंगे?' और उन्होंने वह 'इश्क के घाव' की सारी कविता अपने मुँह सुना दी। कैसे कहूँ, अमृता जी के संग बीते वह पल कैसे थे, कितने सुनहले, कितने मर्मस्पर्शी थे!

अ. - 'मेरे हाथ में एक लेख था, पंजाबी कविता पर। हरबंस सिंह जी का लिखा। वैसे तुसीं पंजाबी poetry वी पड़ी ओई ए?'

(अनु. - 'वैसे आपने पंजाबी poetry भी पड़ी हुई है?'

वि. - 'पंजाबी बोल लेता हूँ। पढ़ना चाहता हूँ पर मुझको गुरमुखी नहीं आती। उर्दु poetry भी अच्छी लगती है, मुझको उर्दू पढ़नी नहीं आती, इसलिए उर्दू की किताबें हिन्दी script में खरीदता हूँ। सच में, साहिर लुधियानवी उर्दू के मेरे सबसे favourite poet हैं। उनमें भी बहुत गहराई है।

मेरे यह कहते ही अमृता जी ने पलकें भींच लीं और एक अन्तराल के बाद खोलीं, और कहा, 'आओ, बार ज़्यादा pleasant ए।'

(आईए बाहर ज़्यादा pleasant है।) और balcony की ओर संकेत करते हुए वह मुझको balcony पर ले गईं और बड़ी देर तक वह सामने के बन रहे मकान को देखती रहीं। दो-मंज़िले–तिमंज़िले मकान के लिए ऊँची scaffolding लगी हुई थी। वह चुप, मैं भी चुप। कुछ था जो मुझको समझ न आ रहा था। क्या मैंने अनजाने कोई गलती कर दी थी क्या? मेरा मन अब अचानक तिलमिला रहा था। मन भी भारी हो गया था, और scaffolding की ओर संकेत करते हुए मैंने उस कठिन नीरवता को तोड़ा और कहा।

वि. - 'एदाँ क्यों होंदाए कि मकान बँड़ जांदे ने, फटे उतर जांदे ने, लेकिन ज़िन्दगीयाँ कदी नीं बँड़दीयाँ?'

(अनु. - 'ऐसा क्यों होता है कि मकान बन जाते हैं, फटे उतर जाते हैं, लेकिन ज़िन्दगीयाँ कभी नहीं बनती।')

वह मेरी आवाज़ से पल भर को मानो चौंक गईं और फिर उसी पल संभल भी गईं। कहने लगीं।।

अ. - 'ए ते जी इक खेड होंदा वे। जेड़ा कदी वी पूरा नईयों होंदा।'

(अनु. - 'यह तो जी एक खेल होता है। जो कभी भी पूरा नहीं होता।')

वि. - 'हाँ जी, मैं भी रोज़ रात को सोने से पहले कहता हूँ कि कल नया होगा, कल मैं नया बनूँगा, पर मुझमें कहीं कुछ नहीं बदलता, बस circumstances बदल जाते हैं। हम नहीं बदलते!'

इसके बाद मैंने अमृता जी से विदा ली, कहा फिर कभी मिलेंगे, उन्होंने भी कहा, 'हाँ' और फिर 'नमस्ते।'

बहुत सालों के बाद मुझको आभास हुआ कि मुझसे क्या गल्ती हुई थी। मुझको अमृता जी और साहिर जी के रिश्ते के बारे में उन दिनों कुछ नहीं पता था और मैं अनजाने साहिर जी का नाम ले बैठा था, उनकी नज़्मों को favourite कह बैठा था। अमृता जी के मन की गहरी, बहुत गहरी चोट को मैं अनजाने छू बैठा था।

यह सन् १९६३ था। मैं २१ साल का था। अब... अब जैसे ज़िन्दगी बीत गई है। २००५ में अमृता जी जा चुकी हैं, २०१२ में उनके लड़के की मुंबई, बोरीवली में उनके अपार्टमेंट में किसी ने हत्या कर दी। कितना कुछ, कैसे हो जाता है।■

रमेश जोशी

१८ अगस्त १९४२ को चिड़ावा, राजस्थान में जन्म. राजस्थान विश्वविद्यालय से एम.ए. और रीजनल कालेज ऑफ एज्यूकेशन भोपाल से बी.एड., पोरबंदर से पोर्ट ब्लेयर तक घुमक्कड़ी, प्राथमिक शिक्षण से प्राध्यापकी करते हुए केन्द्रीय विद्यालय जयपुर से सेवानिवृत्त. संप्रति : अमरीका में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति की त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वा' के प्रधान संपादक. मूलतः व्यंग्यकार, गद्य-पद्य की पाँच पुस्तकें प्रकाशित.

संपर्क : 4758, DARBY COURT STOW, OH-44224 U.S.A. Email : joshikavirai@gmail.com

बिरयानी में चूहा

अखबारों में छपास के मारे लोग और कुछ करें या नहीं लेकिन इस या उसका जन्म दिन या पुण्य तिथि मनाने में अवश्य सबसे आगे रहते हैं। वैसे इन्हें सब जानते हैं कि ये विवेकानंद के कैसे भक्त हैं और गाँधी जी के कैसे अनुयायी हैं। ऐसे दिवस मनाने और उनमें उपस्थित होने वाले लोग निश्चित होते हैं। फिर भी कुछ दिन ऐसे होते हैं जो प्रायः सभी मानते थे इसलिए ऐसे कार्यक्रमों में अध्यक्षों की कमी पड़ ही जाती है। ऐसे में हमारे जैसे बिना टी.ए., डी.ए. के अध्यक्षों का भी नंबर आ ही जाता है। हम कोई पेशेवर अध्यक्ष तो हैं नहीं। सो जल्दी ही बोर हो जाते हैं और उम्र के प्रभाव के कारण थक भी जाते हैं।

कल दो तीन जगह गाँधी जी की पुण्य तिथि के कार्यक्रमों में अध्यक्षता करके थक गए। रात को ठीक से नींद नहीं आई।

सुबह तोताराम ने फिर एक ब्रेकिंग न्यूज के साथ जगाया, बोला- इस सरकार ने एक हिंदू का धर्म भ्रष्ट कर दिया। पूरी बात यह थी कि वैष्णो देवी की यात्रा से सपरिवार लौट रहे गुजरात के एक सज्जन नीलेश पटेल ने सर्वोदय एक्सप्रेस में खाने के लिए शाकाहारी बिरयानी मँगाई लेकिन उसमें एक पका हुआ चूहा निकला।

हमने कहा- बिरयानी मांसाहारी ही होती है। इस गुजराती सज्जन ने बिरयानी मँगाई ही क्यों? अरे, गुजराती था तो चावल दाल मँगाता, गाठिया फाफड़ा खाता। यह बिरयानी का शौक चर्राया ही क्यों? और फिर हमारी सरकार तो धर्मनिरपेक्ष है वह किसी का धर्म क्यों भ्रष्ट करेगी?

तोताराम का तर्क था- यदि धर्म निरपेक्ष है तो हज़ के लिए सब्सीडी क्यों देती है? धर्म के आधार पर आरक्षण और छात्रवृत्ति क्यों देती है?

> *गुजराती सज्जन ने बिरयानी मँगाई ही क्यों? अरे, गुजराती था तो चावल दाल मँगाता, गाठिया फाफड़ा खाता। यह बिरयानी का शौक चर्राया ही क्यों?*

हमारा उत्तर था- इन धर्मों के लोग बहुत दुःख पाए हुए लोग हैं। एक हजार वर्षों से मुसलमान और विदेश से आए ईसाइयों, फ्रांसीसियों, पुर्तगालियों ने सत्ता का ज़हर पिया है। कुछ जाट, यादव भी यह कष्ट उठा चुके हैं। बुद्ध और जैन भी सन्यास लेने से पहले राजा ही थे और कई राजाओं ने भी बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था।

तोताराम ने कहा- यदि ऐसी बात है तो मैं भी परशुराम का वंशज हूँ।

हमने कहा- यह गलत है क्योंकि परशुराम ने कहीं कोई राज नहीं किया। उन्होंने तो ऐसे ही गुस्से में आकर कुछ राजाओं को मार डाला था और उनके कोई संतान भी नहीं थी क्योंकि वे अविवाहित थे और उन्होंने किसी महामहिम की तरह इधर-उधर चक्कर भी नहीं चलाया। इसलिए वे इस श्रेणी में नहीं आते। यदि सरकार सत्ता का ज़हर पीने वाले बेचारे सेवकों के लिए कुछ रियायत देती है तो इसमें क्या बुराई है?

तोताराम ने अपना मूल स्टेंड दुहराया- लेकिन धर्म तो भ्रष्ट हुआ ही ना?

हमने कहा- लेकिन सरकार हिंदू धर्म को कोई धर्म नहीं बल्कि एक जीवन शैली मानती है। तो धर्म भ्रष्ट होने का तो प्रश्न नहीं है और फिर जहाँ तक चूहे की बात है तो भोजन बेचने वाले ने तो उस ग्राहक को शाकाहारी बिरयानी के मूल्य पर मांसाहारी बिरयानी देकर एक पुण्य का ही काम किया है? कौन देता है घास-फूस के मूल्य पर नोन वेज बिरयानी?

उसने कहा- लेकिन यदि उसे खाकर पटेल भाई को फूड पोइजनिंग हो जाती तो?

हमने कहा- वह तो रेलवे वालों ने कह ही दिया है कि यदि ऐसा हुआ तो वे उसके लिए जिम्मेदार हैं और फिर फूड पोइजनिंग तो मंदिर का प्रसाद, मिड डे मील खाकर भी तो हो सकता है और फिर जब नकली दूध और नकली दवा खाकर भी इस देश की जनसंख्या बढ़ रही है तो फिर चिंता की क्या बात है? और फिर बंधु, हमें तो लगता है कि यह ग्राहक का भ्रम है क्योंकि सारे चूहे तो देश की जड़ें खोदने में लगे हैं। उन्हें कहाँ फुर्सत है किसी की बिरयानी में प्रवेश करने की। हो सकता है कोई चुनाव हारा हुआ चूहा जिसे कहीं भी देश के लिए ज़हर पीने का सौभाग्य नहीं मिला हो, यहाँ कुछ मौका तलाशने आ गया हो।

"फूड पोइजनिंग तो मंदिर का प्रसाद, मिड डे मील खाकर भी तो हो सकता है और फिर जब नकली दूध और नकली दवा खाकर भी इस देश की जनसंख्या बढ़ रही है तो फिर चिंता की क्या बात है?"

तोताराम ने प्रतिवाद किया- नहीं ऐसा नहीं है। ग्राहक ने ध्यान से देखा है और उसका फोटो भी लिया है। वह चूहा पूरी तरह से पका हुआ था।

हमने कहा- तो फिर बेचने वाले की ईमानदारी देख कि उसने गैस की इस तंगी में भी चूहा अच्छी तरह से पका कर दिया अन्यथा सेवक लोग तो जनता को कच्चा ही चबाने में लगे हैं।■

सव्या झा
राजनीति, संगीत एवं प्रौद्योगिकी में रुचि। कहानी, कविता एवं लाइनक्स के बारे में लिखते हैं।
सम्पर्क : savya.jha91@gmail.com

बीमार समाज : अन्दर झाँकना

कभी कभार ऐसे हालात बनते हैं जब आपको किसी गैर के आइने में अपने आपको देखने को बाध्य होना होता है। मैं समझता हूँ कि आप समझ रहे हैं कि मैं दिल्ली में गत दिसम्बर में हुए सामूहिक बलात्कार काण्ड की बात कर रहा हूं। हो सकता है, आप खीज रहे हों, एक और भाष्यकार, एक और विश्लेषण! बस, और नहीं!

मैंने इस तरह की बात पर पहले भी एक बार लिखा है। अब उसे पढ़ता हूँ और प्रतिफलित करता हूँ कि उस वक्त मेरे दिमाग में क्या चल रहा था तो महसूस करता हूं कि मेरी चेतना में कोई खास फर्क नहीं आया है। मुझे अभी भी अस्वस्ति होती है। मैं अभी भी समझता हूँ कि यह देश ऐसे मूर्खों का चहबच्चा बन गया है जिन्हें कोई आभास नहीं है कि सभ्यता का सही अर्थ क्या है। मेरा अभी भी यकीन है कि ऐसे अनेकों भारतवासी हैं जो आधुनिक सभ्यता एवम् इसके उन, कुछ एक नियमों को, जिनसे उनको पूर्णतः बँधे रहने की जरूरत है, सीखना चाहते ही नहीं हैं।

लेकिन जब मैं यह कहता हूँ कि बहुत कुछ नहीं बदला है, तो मुझे यह मानना ही चाहिए कि समाज का एक छोटा-सा हिस्सा है जिसे उस अस्वस्थता की पहचान है जिससे बाकी बहुसंख्यक उदासीन हिस्सा ग्रस्त है। महानगरों में हो रहे विरोध प्रदर्शन तथा युवा वर्ग का उमड़ता क्रोध एक प्रकार की जागृति का संकेत देते हैं। हालाँकि मैं नहीं जानता कि ये नींद में बड़बड़ाते किसी जिन्न की फुफकार है या लम्बी नींद से अभी तुरत जगे दैत्य की गड़गड़ाहट। मैं दूसरी स्थिति के प्रति आशावान हूँ ।

इस गुस्से को निर्देशित करने में समस्याएँ हैं। बहुत सारे लोग अधिक सख्त कानून और बेहतर पुलिस बल की माँग करने के साथ-साथ पुरुषों और ऐसी अनगिनत चीजों को दोषी ठहराते हुए अपने आपको आश्वस्त कर रहे हैं। यद्यपि मैं मानता हूँ कि ये समस्याएँ हैं, पर साथ ही मेरा मानना है कि समस्या उससे कहीं अधिक गम्भीर है जितनी कि हम अपने आपके पास स्वीकार कर रहे हैं। ऐसा भी हो सकता है कि हम उसे जानते हैं, लेकिन उससे आँखें फेरे हुए हैं, क्योंकि आँखें फेरे रहना सबसे आसान काम है।

डम्बलडोर की उक्ति याद आती है, सही से और आसान से निपटने के बारे में।

पारम्परिक तौर पर हमारा समाज पितृसत्तात्मक है। लड़कों को लड़कियों के मुकाबले हर रूप में तरजीह दी जाती है, अक्सर सहज बोध से, बिना किसी प्रयास के। यह सब शुरु हो जाता है, गर्भाधान के साथ-साथ। फिर अनवरत सारी जिन्दगी तक जारी रहता है। माँ-बाप बेटी को विनीत, शान्त और शर्मीली सुन्दरी के रूप में देखना चाहते हैं जो किसी से बातें करते समय आँखें नीचे रखे। उसे शैशवावस्था से ही आज्ञाकारी और संकोचशील होने की सीख दी जाती है। उससे उम्मीद की जाती है कि वह रसोई में माँ की मदद करे, एक जिम्मेदार औरत बने और पुकारे जाने पर बहुत कम बोलती हुई विनम्रता से मुस्कुराए।

इसके विपरीत लड़कों को सामान्यतः उग्र, फसादी और आक्रामक होने की इजाजत रहती है, बल्कि उन्हें ऐसा होने को प्रोत्साहित किया जाता है। यहाँ वहाँ, कभी कभार ऐसा करने को देश के कई क्षेत्रों में अपने को जाहिर करना समझा जाता है। अक्सर माता-पिता दुलार से अपने धृष्ट बेटे को जिद्दी और शरारती मानते हैं। लड़कों की बदमिजाजी और उटपटाँग माँगें बर्दाश्त की जाती हैं, लेकिन बहुत कम लड़कियों को ही ऐसा विशेषाधिकार मिला करता है। शिक्षित पिताओं वाले अनेकों परिवार अपनी बेटियों को बस इतनी ही शिक्षा देने के पक्ष में होते हैं कि वह वह अपने बच्चों की प्रारम्भिक स्कूली शिक्षा में मदद कर सके।

और उन्हें भी, जो स्कूल जाते हैं, जेण्डर की समानता सही मायनों में हमारे स्कूलों में नहीं पढ़ाई जाती, पढ़ाई जाती है क्या? मेरा तात्पर्य है कि यह सही है कि लड़कों को बताया जाता है कि लड़कियाँ उनकी बराबरी की होती हैं, लेकिन इसे हकीकत में स्कूलों में कैसे लागू किया जाता है? स्कूल में शिक्षक जहाँ-तहाँ नहीं थूकने का अभ्यास कराते हैं, यहाँ-वहाँ कूड़ा नहीं फेंकने का भी अभ्यास कराते हैं। देशभक्ति एवम् विनम्र आचरण के पाठ सिखाते हैं, लेकिन लड़कों और लड़कियों के बीच बराबरी, लड़कों द्वारा लड़कियों पर किए जाने वाले अपराधों एवम् इनसे उत्पन्न भीषण मानसिक आघात की बातों की चर्चा हमारे समाज में वर्जित है। सामान्यतः सरसरी तौर पर इनका जिक्र कर इन्हें भुला दिया जाता है। कुछ मामलों में, हमेशा के लिए।

और देखिए, हम कहाँ पहुँचते हैं। उदासीन माता-पिता, उदासीन शिक्षक, और उदासीन समाज। लड़कियों के पैदा होने के लिए भारत का शुमार सबसे खराब जगहों में किए जाने की वाजिब वजहें हैं। वे मातृगर्भ में भी सुरक्षित नहीं (जेण्डर पर आधारित गर्भपात) हैं, और उसके बाहर पूरी तरह असुरक्षित होती हैं।

"लड़कियों के पैदा होने के लिए भारत का शुमार सबसे खराब जगहों में किए जाने की वाजिब वजहें हैं। वे मातृगर्भ में भी सुरक्षित नहीं हैं और उसके बाहर पूरी तरह असुरक्षित होती हैं।"

हाँ, और भी बातें हैं जो इसे काफी जटिल बना देती हैं। असहयोगी पुलिस, तकलीफदेह रूप से सुस्त न्याय प्रणाली तथा संकीर्ण, एवम् निष्ठुर बल्कि अस्तित्वहीन सामाजिक समर्थन प्रणाली। लेकिन मेरी समझ में ये सब बस बीमार समाज के लक्षण हैं। मैं अपनी एक दोस्त के साथ भारत में बलात्कार की असमान्य घटनाओं की चर्चा कर रहा था। मेरी बात पर उसकी प्रतिक्रिया इस रूप में थी, 'अपने देश की जनसंख्या पर गौर करो। क्या तुम्हें नहीं लगता कि हमारे देश में बलात्कार की घटनाएँ भी उसी अनुपात में हैं?' इन सभी मामलों के साथ निपटना शायद अधिक कठिन होगा, कुछ ऐसा ही उसने सोचा।

ये युक्तियाँ मेरी बेचैनी दूर नहीं कर पाती हैं, मैं ईमानदारी से यकीन करता हूँ कि बलात्कार जैसे अपराधों के प्रति हर समाज की सहिष्णुता का स्तर शून्य होने की जरूरत है। मेरा मतलब है कि बहुत सारे अपराध हैं जिनकी परिस्थितियों के हवाले से व्याख्या की जाती है। मैं चोरी जैसे अपराधों की नहीं, हत्या इत्यादि की बात कर रहा हूँ। आप कह सकते हैं कि आत्मरक्षा में खून किया गया। बस आपका वकील साबित कर दे कि सचमुच आपकी जान को खतरा था। लेकिन बलात्कार के पक्ष में कोई परिस्थिति नहीं हुआ करती। किसी का भी भयावने रूप में बलात्कार कर उसकी आत्मा को जीवन भर के लिए दागदार करने का कोई भी औचित्य नहीं हो सकता।

जो लोग बलात्कार को हत्या के बराबर का अपराध मानने की वकालत करते हैं, उनसे मेरा कहना है कि हत्या किसी की जिन्दगी का खात्मा कर उसके परिवार को असीम

> बलात्कार के जरिए एक लड़की का जीवन उसकी हत्या किए बिना, उसे जीवन्त लज्जा के जीवन में अभिशप्त कर, खत्म कर दी जाती है।

शोक में डुबो देती है, बलात्कार के जरिए एक लड़की का जीवन उसकी हत्या किए बिना, उसे जीवन्त लज्जा के जीवन में अभिशप्त कर, खत्म कर दी जाती है। इन दोनों की तुलना भी कैसे की जा सकती है?

और एक संदेश उन लोगों के लिए, जो अधिक कड़े कानून, अधिक दृढ़ पुलिस और ऐसी दूसरी माँगें कर रहे हैं : कृपया शुरूआत अपने आपसे करें। यह बहुत ही चुपके से, निर्दोष तरीके से शुरू होता है। ऐसे विचार का रोपण इतने सूक्ष्म रूप में होता है। लगभग ऐसा लगता है मानो यह शुरूआत से ही 'लिओनार्डा डाय कैप्रियो' की कृति से प्रेरित हो रहा है। शायद यों ये 'हनी सिंह' के प्रदर्शनों, उत्तेजक पॉर्न के लिए एकाएक रूझान। हमें पता है, इसी तरह से यह उपजता है। हो सकता है कि यह आगे न बढ़े, बहुतों में नहीं बढ़ता है। लेकिन सम्भावना तो हमेशा बनी रहती ही है। अच्छा हो कि नजरदारी रखी जाए।■

60 MILLION
CHILDREN IN INDIA
have no means to go to school

Contribute just Rs. 2750*
and send one child to school
for a whole year

Central & General Query
info@smilefoundationindia.org
http://www.smilefoundationindia.org/contactus.htm

गर्भनाल द्वारा जनहित में जारी

डॉ. कृष्णा जाखड़

१ मार्च, १९८२ को राजस्थान के चूरू जिले की राजगढ़ तहसील के छोटे-से गांव खारिया बास में जन्म। हिन्दी में एम.ए. और पीएच.डी.। 'हक के लिए', 'प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श' और 'नापीजतौ आभौ' प्रकाशित कृतियां। सम्प्रति - 'अनुक्षण' हिन्दी त्रैमासिक का सह-संपादन।

संपर्क : krishna.jakhar@gmail.com

सामयिक

ओ राधा तेरी चुनरी...

पिछले दिनों फिल्म के एक गाने पर हिन्दुत्व के रखवालों ने बवाल खड़ा किया। गाना था- 'ओ राधा तेरी चुनरी...।' पूरा गाना सुनने और देखने के बाद मुझे इसमें कहीं कुछ गलत नजर नहीं आया। धर्म-दण्ड-धारियों का कहना था कि इस गाने में हमारी आराध्य देवी का अपमान किया गया है। हर एक अखबार, हर एक इलेक्ट्रॉनिक चैनल ने इस मुद्दे को बहस काबिल समझा। बहस के लिए कुछेक व्यक्तियों को चुना गया जिसमें फिल्म उद्योग, सामाजिक क्षेत्र, राजनीतिक दल और हिन्दू धर्म के रखवाले अनेक स्वयंभू ठेकेदार शामिल थे।

मुद्दे पर बहस के समय वाजिब है कि पक्ष-विपक्ष में तकरार होती है। तर्क भी आते हैं और कुतर्क भी। मगर लगातार आश्चर्य तो तब हुआ जब धर्म के इन स्वयंभू ठेकेदारों ने जोर देकर कहा कि राधा का नाम एक बाजारू औरत के साथ जोड़कर फिल्म इंडस्ट्री ने हिन्दू धर्मावलम्बियों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का कार्य किया है।

यहां सबसे पहल सवाल तो बीच बहस में यही उभरता है कि इन लोगों ने बाजारू किसे कहा? या तो उस लड़की को जिसने कहानी के पात्र का चरित्र निभाया या फिर उस कहानी के पात्र को, जो युवा मन की उड़ानों के बीच भविष्य के सपने देख रही थी? एक आम हिन्दुस्तानी परिवार की बेटी, जो जीवन की जद्दोजहद के बीच से अरमानों की राह खोज रही थी।

> जब सिनेमा के पर्दे पर राधा नाचती है तब तो आपको बड़ी दिक्कत होती है, मगर दीगर आयोजनों में इकट्ठी हुई भीड़ में जब राधाएं ठुमके लगाती हैं, तब आप बड़े हर्षित होते हैं।

दूसरा सवाल जो मानस-पटल पर दस्तक देता है वह यह कि इन लोगों ने बाजारू कहा भी तो यह बाजार निर्मित किसने किया? इस बाजार में कौन बैठता है? यहां खरीद-फरोख्त कौन करता है? जब इस बाजार में खरीदने और बेचने वाला पाक है तो फिर बिकने वाले को क्यों गरियाया जाता है? बिकने वाली से किसी ने पूछा कि तुम बिकना चाहती भी हो या नहीं? इस बाजार में तो सदियों से पता नहीं कितनी ही राधा, सीता, द्रोपदी, माधवी बिकती आई हैं। परंतु यह भी सत्य है कि ये तो शीतल लौ हैं, जो दूसरों के लिए जलना जानती हैं। जिस दिन इन्होंने अपने लिए जलना सीख लिया उस दिन तुम्हारे बाजार और तुम सभी सूनी पड़ी गलियों से खिसकोगे।

धर्म के यह तथाकथित ठेकेदार बड़ी-बड़ी बातें बोलते वक्त यह भूल जाते हैं कि सबसे अधिक राधाएं तो इन ठेकेदारों के तहखानों में ही दम तोड़ती हैं। दिन के उजाले में लम्बी-चौड़ी बातें करने वाले अनेक बहुरूपिये रात्रि के अंधकार में किसके जीवन को लील लेंगे, कोई नहीं जानता। कौन जानता है कि पाखण्डियों के जाल में फंसी हुई कितनी ही भोली किशोरियों

का जीवन काली स्याही से पोत दिया जाता है। कितनी ही विधवाओं का जीवन इनके चंगुल में दम तोड़ देता है। दिन में सेवा करने वाली ये दासियां रात्रि में तथाकथित मुस्टण्डों के हवस की शिकार बनती हैं। दिन में ये नापाक विधवाएं अछूत होती हैं और रात्रि में भोग का निर्जीव साधन। मानव जाति को कलंकित कर देने वाले इन मुद्दों पर जब ये लोग नहीं बोल सकते तब फिर जनता के बीच जाकर उनके आनंद के क्षणों को छीनने का अधिकार इनको किसने सौंपा?

देशभर में लाखों परिवारों में इस गाने को बड़े ही आनंद के साथ सुना गया, जब उन्हें ही इस पर आपत्ति नहीं है, चाहे फिर वे किसी भी धर्म को मानने वाले रहे हैं, तो फिर इन तथाकथित धर्म के ठेकेदारों को किसने सही और गलत के बारे में फैसला देने का अधिकार दे दिया है। क्या इन लोगों को देवी-देवताओं के नामों का कॉपीराइट मिल गया है? राधा नाम किसी भी आम हिन्दुस्तानी लड़की का हो सकता है। क्या अब नाम रखने के लिये भी हमें इन ठेकेदारों से प्रमाण-पत्र लेना होगा?

सच्चाई यही है कि ये तथाकथित समाज के ठेकेदार आम आदमी के अभिव्यक्ति के अधिकार को कुंद करना चाहते हैं? यह मत करो, वह मत करो। यह धर्म विरुद्ध है, यह धर्म के लिए अनिवार्य है आदि के जरिये यह आम आदमी की स्वतंत्रता पर रोक लगाने के दुष्चक्र कर रहे हैं।

पौराणिक कहानियों के सभी पात्रों को देवता माना जाये, यह जरूरी तो नहीं। मैं व्यक्तिशः राधा और कृष्ण को एक पौराणिक उपन्यास का पात्र मानती हूं। मुझे ऐसा मानने से कोई कैसे रोक सकता है? इस सोच में मेरा धर्म कहीं आड़े नहीं आता। इस गाने और फिल्म को देखने वाले और आनंदित होने वाले हजारों-लाखों की संख्या में उमड़े दर्शकों को क्या आप सजा देने वाले हैं? दे सकते हैं?

> *अब यह किसी से छिपा नहीं है कि फिल्मों, उनके गानों और आधुनिक दौर के युवाओं की जीवनशैली को निशाना बनकर सस्ती लोकप्रियता आसानी से हासिल की जा सकती है। इसमें 'हर्रा लगे न फिटकरी, रंग चोखा हो जाये' वाली कहावत सोलह आने फलित होती है।*

जब सिनेमा के पर्दे पर राधा नाचती है तब तो आपको बड़ी दिक्कत होती है, मगर दीगर आयोजनों में इकट्ठी हुई भीड़ में जब राधाएं ठुमके लगाती हैं, तब आप बड़े हर्षित होते हैं। आप भी इन राधाओं के साथ झूम उठते हैं और कहते हो, देखो! हमारी राधाएं नाच रही हैं, अपने कान्हा के लिए। कहां राधा है और कहां कान्हा, यह तो आप भी जानते हैं और भोली जनता भी।

गाने की राधा ने अच्छे-से अंगिया-चोली और बड़ी-सी चुनरी पहन रखी है। उसको देखकर कहीं-किसी के मन में गलत विचार नहीं आ सकते और किसी के मन में आते भी हैं तो यह उस मन का खोट है, गाने के दृश्य का नहीं।

अपने-आप को राधा का तथाकथित मुरीद मानने वाले इन पाखण्डियों से तो गाने की वह पात्र अच्छी है, जो कम से कम राधा को सरे आम नंगा नहीं करती। इन रसिकों ने राधा को अभिसार के लिए निकली हुई नायिका से अधिक कभी कुछ नहीं माना। एक गृहस्थ स्त्री को अपने पति और बच्चों को छोड़कर अपने आराध्य की ओर बरबस खिंचे चले जाने को राधा की नजर से सही कहा जाये या गलत? आज के समय में कोई स्त्री ऐसा करे तो यही धर्म के ठेकेदार उसे किस रूप में लेंगे। क्या ये ठेकेदार बौखला नहीं उठेंगे। धर्म की दुहाई देंगे, समाज के नियम याद दिलायेंगे।

धर्म के इन तथाकथित ठेकेदारों को की दोगली नीति को समाज के हरेक तबका अच्छी तरह से समझता है।

अब यह किसी से छिपा नहीं है कि फिल्मों, उनके गानों और आधुनिक दौर के युवाओं की जीवनशैली को निशाना बनकर सस्ती लोकप्रियता आसानी से हासिल की जा सकती है। इसमें 'हर्रा लगे न फिटकरी, रंग चोखा हो जाये' वाली कहावत सोलह आने फलित होती है। तथाकथित धर्म के इन रखवालों से पूछा जाना चाहिये कि समाज में व्याप्त अन्य बुराईयों, कुरीतियों, असमानताओं को समाप्त करने के लिये यह क्यों नहीं अपने आक्रामक तेवर दिखाते हैं। फिल्म इंडस्ट्री जो पूरे समाज का मनोरंजन करती है और हजारों लोगों को रोजगार देती है, क्यों इनके निशाने पर बार-बार आ जाती है, यह विचारणीय है।

सच्चाई यही है कि राधा तथाकथित ठेकेदारों के पाखण्ड-जाल से मुक्ति चाहती है। उसे मत रोको। उसे मुक्त कर दो। उन्मुक्त कर दो। बदलाव को स्वीकार करने का माद्दा पैदा करो, खुद में। समय की यही मांग है। ■

आत्माराम शर्मा

२६ फरवरी १९६८ को ग्राम खरगापुर, टीकमगढ़, मध्यप्रदेश में जन्म. हिन्दी साहित्य में एम.ए. और एम.सी.ए. की उपाधि. नईदुनिया समाचार-पत्र में कला-समीक्षक के तौर पर लेखन. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ और कविताओं का प्रकाशन. 'गर्भनाल पत्रिका' के संस्थापक सदस्य एवं पूर्व-सम्पादक. सम्प्रति : जनसम्पर्क विभाग, मध्यप्रदेश के सृजनात्मक उपक्रम 'मध्यप्रदेश माध्यम' में उप प्रबन्धक.

सम्पर्क : डीएक्सई-२३, मिनाल रेसीडेंसी, जे.के. रोड, भोपाल-४६२०२३ (म.प्र.). ईमेल : atmaram.sharma@gmail.com

बातचीत

हिन्दी-प्रेमी इवा अरादी से आत्माराम शर्मा एवं विजया सती*की बातचीत

*ओत्वोश लोरांद विश्वविद्यालय, बुदापैश्त, हंगरी के भारोपीय अध्ययन विभाग में विगत दो वर्षों से अध्यापन कर रही हैं।

हिन्दी भाषा के संदर्भ में गुजरे दौर की स्मृतियों को पाठकों के साथ साझा करना चाहेंगी।

मैंने १९७५ में पहले अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन, नागपुर में छात्रा के रूप में भाग लिया था। इसके अलावा हिन्दी भाषा की पढ़ाई मैंने भारतीय विद्या भवन, बंबई (वर्तमान में मुंबई) से की। बाद में पेच विश्वविद्यालय के एशिया सेंटर विभाग में हिन्दी भाषा और साहित्य की प्राध्यापिका हो गई। आर्थिक कारणों से यह विभाग इस समय बंद हो गया है।

मेरे तीन-चार प्रबुद्ध विद्यार्थी थे। उनमें से दो को भारत से छात्रवृत्ति मिली। केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से उन्होंने हिन्दी सीखी, वे हिन्दी से प्यार करते हैं और काफ़ी अच्छी हिन्दी बोल लेते हैं। मुझे आशा है कि यदि हमारे देश का भविष्य आर्थिक दृष्टि से अच्छा होगा, तो इनमें से एक विद्यार्थी पेच विश्वविद्यालय में हिन्दी पढ़ाएगा।

पहले अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन के बारे में कुछ बतायें।

नागपुर सम्मेलन में हिन्दी साहित्य की वह महान पीढ़ी शामिल थी, जिन्हें पढ़े बिना हिन्दी साहित्य की जानकारी अधूरी मानी जायेगी। ये साहित्यकार थे धर्मवीर भारती, कमलेश्वर, महादेवी वर्मा, जैनेन्द्र कुमार, मन्नू भंडारी, राजेंद्र यादव। उस सम्मेलन के उत्साह ने मुझे प्रभावित किया और भारतीय विद्या भवन, बंबई में अपने स्नातक अध्ययन के बाद मैंने इन लेखकों के कुछ लेखन का अनुवाद किया।

डॉ. इवा अरादी

हंगरी की प्रख्यात हिन्दी विद्वान। भारतीय विद्या भवन, बंबई में पढ़ाई की। वे पुरानी पीढ़ी की हिन्दी प्रेमी हैं। सक्रिय योगदान के लिये पुरस्कृत हुई। सन् १९७५ में नागपुर में सम्पन्न पहले अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में छात्रा के रूप में भाग लिया। पेच विश्वविद्यालय के एशिया सेंटर विभाग तथा ऐल्ते विश्वविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापिका रहीं। सम्प्रति - सेवानिवृत्ति के बाद बुदापेस्ट, हंगरी में रहती हैं।

युवाओं की रुचि किताबों की बजाय इंटरनेट में है

नागपुर में हिन्दी भाषा और साहित्य के लिए बहुत उत्साह था। क्योंकि सम्मेलन का आयोजन बहुत अच्छा था और उसका लक्ष्य बड़ा था : हिन्दी को 'राष्ट्र भाषा' बनाया जाए और उसे संयुक्त राष्ट्र में आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकृति मिले। हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ लेखक, कवि और विद्वान वहां थे। हम एक साधारण छात्रावास में रहे। शहर के केन्द्र में एक शामियाने के नीचे जिन्हें 'तम्बू' कहा जाता था प्रस्तुतियाँ हुई। पहले दिन भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी और मॉरीशस के राष्ट्रपति श्री राम गुलाम ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। भारत के उपराष्ट्रपति श्री जत्ती भी वहाँ थे। वह वास्तव में एक अच्छा सम्मेलन था और इसमें करदाता के पैसे में से बहुत अधिक खर्च भी नहीं किया गया था। अन्य सम्मेलन ऐसे नहीं थे। मैंने लन्दन, सूरीनाम और दक्षिण अफ्रीका को छोड़कर शेष सम्मेलनों में भाग लिया।

हिन्दी के लिये किये गये अपने योगदान के बारे में बताना चाहेंगी।

प्रेमचंद के उपन्यास और कहानियां मुझे बहुत प्रिय रहे। मैंने हिन्दी से उनके उपन्यास निर्मला और दस कहानियों का

> हंगरी में सामान्य जन भी भारत से प्यार करते हैं एवं भारत की जीवन पद्धति को अपने निकट अनुभव करते हैं। यहाँ बहुत से युवा योग, भारतीय नृत्य, संगीत सीखते हैं और वे भारतीय भोजन पसंद करते हैं।

अनुवाद किया। ये अनुवाद यहाँ १९८१ में हंगेरियन भाषा में प्रकाशित हुए। जन सामान्य ने मेरे अनुवाद को पसंद किया इस बात का यही प्रमाण है कि एक साल में सब प्रतियां बिक गईं।

हंगरी में हिन्दी के कौन-से साहित्यकार आम हिन्दी पाठकों में लोकप्रिय हैं।

पुराने दौर की युवा पीढ़ी किताबें पढ़ती थी। आजकल के युवा दुर्भाग्य से इंटरनेट से ही चिपके रहते हैं। इन्टरनेट जानकारी देता है यह उसका सकारात्मक पहलू है, लेकिन आधुनिक दौर के युवा इसे बहुत ज्यादा समय देते हैं और किताबें नहीं पढ़ते।

हंगरी में भारतीय संस्कृति एवं भारतीय भाषाओं को लेकर किस तक नज़रिया व्याप्त है।

हंगरी में सामान्य जन भी भारत से प्यार करते हैं। इसकी एक परम्परा है, क्योंकि मूलतः हम भी पूर्व से ही आए हैं और हम भारत की जीवन पद्धति को अपने निकट अनुभव करते हैं। यहाँ बहुत से युवा योग, भारतीय नृत्य (शास्त्रीय भी), संगीत सीखते हैं और वे भारतीय भोजन पसंद करते हैं। यह जरूर है कि सभी हिन्दी नहीं सीखते लेकिन वे भारत के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। वे महात्मा गांधी और टैगोर का आदर करते हैं और जब वे कुछ पैसा जमा कर पाते हैं तो वे भारत की यात्रा करना चाहते हैं।

विदेशों में लिखे जा रहे हिन्दी साहित्य के बारे में एक राय यह बनती है कि यह नॉस्टेल्जिया का साहित्य है।

मैं प्रवासी हिन्दी लेखकों के काम के बारे में अधिक नहीं जानती। मैंने मॉरीशस से कुछ रचनाएँ पढ़ी और वे अच्छी थीं।

विदेश में रहने वाली पहली पीढ़ी ने भारत में हिन्दी सीखी, पढ़ी और वहाँ जाकर खुद को अभिव्यक्त करने लगे। इसके बाद जो दूसरी पीढ़ी वहां पर है, हिन्दी को लेकर और हिन्दी साहित्य को लेकर उनका क्या रवैया है।

भारतीयों के विदेश जाने और बच्चों के हिन्दी न पढ़ने की समस्या पर मुझे यही कहना है कि हंगरी में भी हम इस समस्या का सामना करते हैं। युवा पीढ़ी अधिक तनख्वाह के लिए विदेश, संयुक्त राज्य अमेरिका और पश्चिमी यूरोप जाना चाहती है, मैं यह पसंद नहीं करती, पर उन्हें समझती हूँ। विश्व में भूमंडलीकरण हुआ है और हम पसंद करें या न करें, लेकिन यह तो है।

ऐसे समय में जब हिन्दुस्तान में ही हिन्दी लगातार हाशिये पर धकेली जा रही है, विश्व हिन्दी सम्मेलनों की उपयोगिता को आप किस नजर से देखती हैं। क्या इससे साहित्य लेखन के स्तर में इजाफा हुआ है या फिर गिरावट आई है।

मैं नहीं समझती कि भाषा के नाम पर दुनियाभर में आयोजित किये जाने वाले सम्मलेन और अन्य क्रियाकलाप मसलन पुरस्कार और विदेशों की साहित्यिक यात्रा आदि हिन्दी साहित्य की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं। हिन्दी भाषा के अद्वितीय साहित्यकार प्रेमचंद को ही देखिये! वे गरीब थे, वे गाँव से थे और उन्होंने उत्कृष्ट उपन्यास और कहानियां लिखी। हमारे महान और प्रसिद्ध लेखक और कवियों ने भी कभी भी नामी सम्मलेनों में भाग नहीं लिया लेकिन उन्होंने प्रसिद्ध उपन्यास और कविताएँ लिखीं। जैसे हमारे महान कवि योजफ अत्तिला जिनकी कविताएँ हिन्दी में 'यह चाकू समय' नाम से साहित्य अकादमी द्वारा अनूदित और प्रकाशित हुई।■

राजकिशोर

राजनीति में रुचि थी, लेकिन पत्रकारिता और साहित्य में आ गये. अब फिर राजनीति में लौटना चाहते हैं, लेकिन परंपरागत राजनीति में नहीं. सोचते हैं कि क्या मार्क्स की राजनीति गांधी की शैली में नहीं की जा सकती. एक व्यापक आंदोलन छेड़ने का पक्का इरादा रखते हैं. उसके लिए साथियों की तलाश है. आजकल इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, नई दिल्ली में वरिष्ठ फ़ेलो हैं. साथ-साथ लेखन और पत्रकारिता भी जारी है. रविवार, परिवर्तन और नवभारत टाइम्स में वरिष्ठ सहायक सम्पादक के तौर पर काम किया. कई चर्चित पुस्तकों के लेखक. ताजा कृति : उपन्यास 'तुम्हारा सुख'.

सम्पर्क : ५३, एक्सप्रेस अपार्टमेंटस, मयूर कुंज, दिल्ली-११००९६ ईमेल : truthonly@gmail.com

नज़रिया

संपत्ति में स्त्री की यह कैसी हिस्सेदारी

ऐसा लगता है कि हमारे देश में हिंदू समाज की विवाहित महिलाओं की स्थिति सुधरने वाली है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हिंदू विवाह कानून में कई संशोधनों को मंजूरी दे दी है। इनमें से एक संशोधन यह है कि तलाक की स्थिति में पत्नी को पति की संपत्ति में हिस्सा मिलेगा। यह एक बहुत ही जरूरी संशोधन है। मुश्किल यह है कि यह संशोधन अकेले बहुत दूर तक जानेवाला नहीं है। दरअसल, इसने जो प्रश्न पैदा कर दिए हैं, उनमें से एक का भी समाधान इस संशोधन में नहीं है। संतोष की बात इतनी ही है कि वैवाहिक जीवन में नर-नारी समता का प्रश्न विचार-विमर्श के दायरे में आ गया है। अभी तक तो इसे विचार-योग्य ही नहीं माना जाता था।

गोवा के वैवाहिक कानून में व्यवस्था है कि विवाह के बाद अर्जित सारी संपत्ति पति-पत्नी, दोनों की हो जाती है। समानता का यह अधिकार प्रत्येक महिला को विवाह होते ही मिल जाता है। इसके लिए उसे तलाक की प्रतीक्षा नहीं करनी होती। हम उम्मीद कर रहे थे कि भारत सरकार गोवा के इस आदर्श विवाह कानून को मुल्क भर में लागू करने जा रही है। योजना आयोग की एक समिति का प्रस्ताव भी यही था। लेकिन भारत सरकार आर्थिक सुधारों को लागू करने की जल्दी में भले ही हो, पारिवारिक और सामाजिक सुधार लागू करने की उसे कोई जल्दी नहीं है। अक्सर यह भी होता है कि वह एक कदम आगे बढ़ती है, तो एक कदम पीछे भी खींच लेती है। तलाक के बाद पति की संपत्ति में पत्नी के हिस्से की व्यवस्था करनेवाला यह संशोधन भी इसकी किस्म का है।

सवाल यह है कि वैवाहिक जीवन के दौरान संपत्ति में हिस्सेदारी का अधिकार अगर नही है, तो वह तलाक के समय अचानक कैसे प्रगट हो जाएगा? जाहिर है, इस अधिकार का उपभोग वही महिला कर पाएगी जिसने तलाक ले लिया है या जिसने तलाक दिया है। इस तरह, यह एक तरह से विदाई का उपहार, या विदाई की ठोकर, बन जाता है। जब तक तलाक की नौबत नहीं आती, तब तक इस अधिकार का मतलब सिर्फ यह है कि पति-पत्नी में जिसके पास भी संपत्ति है, वह तलाक का निर्णय करने के पहले सौ बार सोचेगा। इस तरह, यह कानून मुख्यतः तलाक को कठिन बनाने का काम करेगा।

विवाह के बाद पति और पत्नी जो भी संपत्ति हासिल करें, उस पर दोनों का समान अधिकार हो, यह एक स्वाभाविक बात है। लेकिन यही नहीं हो पाता। विवाह के बाद पति-पत्नी एक हो जाते हैं, पर उनकी आर्थिक हैसियत

> *“जब तक तलाक की नौबत नहीं आती, तब तक इस अधिकार का मतलब सिर्फ यह है कि पति-पत्नी में जिसके पास भी संपत्ति है, वह तलाक का निर्णय करने के पहले सौ बार सोचेगा।”*

एक नहीं हो जाती। पति राजा है तो वह राजा बना रहता है और पत्नी रंक है तो वह रंक बनी रहती है। राजा के साथ विवाह होने पर वह रानी की तरह रहने लगती है, लेकिन तभी तक जब तक राजा उस पर मेहरबान रहे। राजा के मुँह फेरते ही उसकी हालत बाँदी जैसी हो जाती है, क्योंकि राजा के खजाने पर उसका कोई कानूनी अधिकार नहीं होता। विवाह को जो ऊँचा स्थान सभी धर्मों और समुदायों में दिया गया है, विवाह के मंत्र जो कहते हैं, उसके साथ इस आर्थिक विषमता का कोई मेल नहीं है। परिणाम यह होता है कि विवाह होते तो स्वर्ग में हैं, पर वैवाहिक जीवन, अधिकतर, नरक में बिताया जाता है। अगर विवाह संस्था को एक मानवीय संस्था बनाना है, तो हमें सब तरह की बराबरी पर विचार करना ही होगा।

नई व्यवस्था में, बेशक, तलाक के बाद जो स्त्री संपत्तिशाली परिवार की है, उसका जीवन आर्थिक दृष्टि से कुछ सहनीय बन जाएगा। लेकिन कितना? यह प्रस्तावित संशोधन में स्पष्ट नहीं किया गया है। गोवा के कानून में स्थिति बिलकुल साफ है : ५० : ५० के बने रहते हुए भी अनुपात यही होता है। लेकिन भारत सरकार के प्रस्तावित कानून में, तलाक की हालत में पत्नी को पति की संपत्ति में कितना हिस्सा मिलेगा, यह फैसला अदालत पर छोड़ दिया गया है। अदालत की इस भूमिका से पेचीदगी पैदा होना अनिवार्य है। तलाक के निर्णय पर पहुँचने के पहले पत्नी तय नहीं कर सकती कि विवाह विच्छेद के बाद उसकी आर्थिक हैसियत क्या होगी। इस अस्पष्टता से उसे उचित निर्णय तक पहुँचने में दिक्कत हो सकती है। बेहतर है कि संसद ही इस अनुपात को तय कर दे। लोकतंत्र की माँग तो यही है कि ५०:५० ही संपत्ति विभाजन का मूल आधार हो। यह अदालत पर जरूर छोड़ा जा सकता है कि भविष्य में किस पक्ष के कंधों पर कितनी आर्थिक जिम्मेदारी आ रही है, इसे ध्यान में रखते हुए वह संपत्ति विभाजन के इस फार्मूले में कुछ फेरबदल कर सकती है। लेकिन अगर सब कुछ अदालत पर छोड़ दिया जाता है, तो पत्नी में वैवाहिक जीवन के दौरान बराबरी का वह एहसास पैदा नहीं हो सकता जो ५०: ५० के हिसाब से उसमें आ जाता है।

> *न तो पति बन कर कोई पत्नी पर एहसान करता है, न पत्नी बन कर कोई पति पर एहसान करती है। इसलिए भरण-पोषण की जिम्मेदारी एक गंदा रिवाज है। इससे पत्नी पति पर एक कानूनी बोझ बन जाती है। कायदे से, सब को अपनी रोटी खुद कमानी चाहिए। लेकिन हम एक ऐसा भारत बनाना नहीं चाहते जिसमें हर आदमी अपनी रोटी खुद कमा सके।*

इसका दूसरा पहलू यह है कि तलाक के मुकदमे और लंबे खिंचेंगे। अभी तलाक पर विचार करने के पहले दोनों पक्षकारों को छह महीने का समय दिया जाता है कि वे शांति से सोच-विचार कर लें और हो सके तो समझौता कर लें। सरकारी संशोधन में अदालत को यह अधिकार दिया जा रहा है कि वह इस अवधि को कम भी कर सकती है या खत्म भी कर सकती है। लेकिन संपत्ति के बँटवारे का मामला जुड़ जाने से तलाक की कानूनी प्रक्रिया का लंबा हो जाना अनिवार्य है। अब आधा समय इस पर खर्च होगा कि तलाक देना ठीक रहेगा या नहीं और आधा समय इस पर कि किस पक्ष के पास कितनी संपत्ति है और उसके बँटवारे का आधार क्या हो। जाहिर है, वह समय नजदीक आ गया है जब पति लोग अपनी-अपनी पत्नी से अपनी संपत्ति के ब्यौरे छिपाने की तरकीबें निकालते फिरेंगे।

संपत्ति के विभाजन जितना ही महत्वपूर्ण पक्ष है, गुजारे की व्यवस्था। यह एक जटिल मामला है। आज तक मेरी समझ में नहीं आया कि तलाक के बाद पत्नी को गुजारे की रकम क्यों मिलनी चाहिए। न तो पति बन कर कोई पत्नी पर एहसान करता है, न पत्नी बन कर कोई पति पर एहसान करती है। इसलिए भरण-पोषण की जिम्मेदारी एक गंदा रिवाज है। इससे पत्नी पति पर एक कानूनी बोझ बन जाती है। कायदे से, सब को अपनी रोटी खुद कमानी चाहिए। लेकिन हम एक ऐसा भारत बनाना नहीं चाहते जिसमें हर आदमी अपनी रोटी खुद कमा सके। इसलिए माना जा सकता है कि समाज में जब तक ऐसी स्थितियाँ नहीं आ जातीं, जब सभी व्यक्ति आर्थिक रूप से स्वनिर्भर हो सकें, तब तक आर्थिक दृष्टि से कमजोर पक्ष को राहत मिलनी चाहिए। लेकिन यह राहत उम्र भर के लिए नहीं हो सकती। इस दृष्टि से यह प्रस्तावित बदलाव स्वागत योग्य है कि तलाक की हालत में पति-पत्नी के बीच आर्थिक समझौता हो सकता है। इससे एक ही बार में मामला निपट जाएगा। बेहतर होगा यदि कानून में ही यह व्यवस्था कर दी जाए कि इस आर्थिक समझौते की न्यूनतम शर्तें क्या होंगी। वरना ताकतवर पक्ष कमजोर पक्ष को दबाएगा और समझौते की शर्तों को अपने अनुकूल बनाने में सफल हो जाएगा।■

मनोज कुमार श्रीवास्तव

विचारशील लेखक के तौर पर ख्याति. गद्य एवं पद्य पर समान अधिकार. कविता के संसार से अलग, उनका गद्य विचार जगत की गहराईयों में जाता है. अपनी परम्परा से निरंतर संवाद करता इनका लेखन आधुनिकता के प्रचलित मुहावरों से भी बाहर जाता है. प्रकाशित कृतियां : कविता संग्रह - 'मेरी डायरी से', 'यादों के संदर्भ', 'पशुपति', 'स्वरांकित' और 'कुरान कविताएँ'. 'शिक्षा के संदर्भ और मूल्य', 'पंचशील वंदेमातरम्', 'यथाकाल' और 'पहाड़ी कोरबा' पर पुस्तकें प्रकाशित. 'सुन्दरकांड' के पुनर्पाठ पर छह खण्ड प्रकाशित. दुर्गा सप्तशती पर 'शक्ति प्रसंग' पुस्तक प्रकाशित. सम्प्रति : १९८७ संवर्ग के भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी.

सम्पर्क : shrivastava_manoj@hotmail.com

व्याख्या

विभुम्

आदिशंकर ने भक्ति की पंच स्वरूपा स्थितियाँ बताई थीं। उनमें से एक (तीसरी थी : 'साध्वीनैज विभुम्')। यह एक ऐसी स्थिति है जैसी किसी पतिव्रता की अपने पति के प्रति प्रेम और निष्ठा की स्थिति। लेकिन यहाँ तुलसी का विभुम् उस द्वैत का विभुम् भी नहीं है जहाँ पत्नी और पति की दो भिन्नताएँ अस्तित्व में होती हैं। यह तो सर्वव्यापकता का विभुम् है। शिवाष्टकम् में यही विभुम् है- प्रभुं प्राणनाथम् विभुं विश्वनाथम। विष्णु पुराण में 'मनसैव जगत सृष्टिं संहारं च करोति या/तस्य और पक्ष क्षपाणे कियं उद्यम विस्तार' कहकर विष्णु भगवान के इसी 'विभु' स्वरूप का वर्णन है जिसमें वह अपने संकल्प मात्र से जगत का सृजन और संहार करता है। विभुं ईश्वर का वह गुण है जिसके द्वारा वह ब्रह्मांड को - उसके सभी अंगों को - एक साथ अपनी उपस्थिति से सर्वत्र भरता है। ईश्वर का अंश नहीं - संपूर्ण ईश्वर - हर स्थान पर मौजूद है। इसका शायद एक अर्थ हमारे लिए यह है कि ईश्वर से बचकर नहीं जा सकते, ईश्वर से छुप नहीं सकते, ईश्वर से पलायन नहीं किया जा सकता है। यदि हम पाप कर रहे हैं तो वह हमें देख रहा है। बाइबल में भी कहा गया कि 'यदि मैं स्वर्गारोहण करूँ, तो वहाँ तू है। यदि मैं नरक में शयन करूँ तो तू वहाँ भी है।' 'क्या कोई किसी ऐसे गुप्त स्थान पर छिप सकता है जहाँ मैं उसे न देख सकूँ? क्या मैं आकाश और पृथ्वी को नहीं भरता?' कहीं ऐसा मनुष्य का गंतव्य नहीं कि जहाँ ईश्वर पहले से पहुँचा हुआ न हो। ईश्वर एक अनलिमिटेड कंपनी है। ऐसा साथ जो असीमित है। एलन टर्नर का कहना है कि 'गॉड इज़ नॉट प्रेजेंट इन ऑल स्पेस। ही इज़ प्रेजेंट टू ऑल ऑफ़ स्पेस।' यानी हमारे आकाश के प्रत्येक बिन्दु में उस विभु की पूर्ण व्याप्ति है। हर समय उसके सामने है। हर स्थान उसके सामने है। कण कण में परमात्मा है। भारत में उसे अंतर्यामी, घटघटवासी, चराचरगुरु, जगन्निवास, विश्वंभर, विश्वात्मा जैसे नाम इसी कारण दिए गए। हरिवंश पुराण में 'अन्तश्चरं पुरुषं' की जो बात कही गई

> *"ईश्वर का अंश नहीं - संपूर्ण ईश्वर - हर स्थान पर मौजूद है। इसका शायद एक अर्थ हमारे लिए यह है कि ईश्वर से बचकर नहीं जा सकते, ईश्वर से छुप नहीं सकते, ईश्वर से पलायन नहीं किया जा सकता है।"*

- सबके अन्तःकरण में विचरने वाले अन्तर्यामी पुरुष की - वह 'विभु' स्वरूप का ही वर्णन है। श्वेताश्वर उपनिषद् में इसे 'व्याप्तं सर्वमिदं जगत्' के रूप में व्याख्यायित किया गया। कालिदास ने अभिज्ञान शाकुन्तल में इसे 'या स्थिता व्याप्य विश्वम' कहा। विष्णु पुराण में 'विंभु सर्वगतं नित्यं भूतयोनिरकारण/व्याप्य व्याप्तं यतः सर्व यद् वै पश्यंति सूरयः' कहा गया। कि जो व्यापक, सर्वगत, नित्य, भूतों का आदिकारण तथा स्वयं कारण रहित है, जिससे वह व्याप्त और व्यापक प्रकट हुआ है। नारद पुराण में 'विभुं' को 'वैशेषिकाद्याश्च' कहा गया है, कि वैशेषिक इन्हें 'विभु' कहते हैं। वेदव्यास ने महाभारत के भीष्मपर्व में कहा : 'मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।' मणियों में सूत्र की तरह यह 'विभु' सभी को एक करता है। 'सब घटि मेरा साँइयाँ, सूनी सेज न कोइ', कबीर कह गए। रैदास कह गए- 'सब में हरि है, हरि में सब हैं, हरि अपनो जिन जाना'। भोलेबाबा की वेदान्त छंदावली - 'यह विश्व तुझसे व्याप्त है, तू विश्व में भरपूर है/तू आर है, तू पार है, तू पास है, तू दूर है।' फ़ारसी में जामी का कहना यही था - अज़ हर तरफ़ जमाले मुतलक़ ताबाँ - उस ईश्वर का प्रकाश सर्वत्र फैला हुआ है। जामी आगे कहता है : दीद के आलम ज़े समक ता समा/नेस्त बूजुज़ बाज़िबो मुमकिन बमा। यानी पृथ्वी से लेकर आकाश तक संपूर्ण विस्तार में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। सिन्धी कवि किशिनचन्द 'बेबस' के शब्द हैं : मुल्कु मिड़िओई मन्दरु आहे। यह सारा ही भगवान का मंदिर है। तेलुगु कवि त्यागराज का भी यही कहना है :

"अखिलोड कोटुलर अंरदिलो/गगनानिल तेजो जल भूमयमगु/मृग खग नग तरु कोटुललो/सगुणमुललो विगुणमुललो/ सततमु साधु त्यागराजार्चितु डिललो"

> *फ़ारसी में जामी का कहना यही था - अज़ हर तरफ़ जमाले मुतलक़ ताबाँ - उस ईश्वर का प्रकाश सर्वत्र फैला हुआ है। जामी आगे कहता है : दीद के आलम ज़े समक ता समा/नेस्त बूजुज़ बाज़िबो मुमकिन बमा। यानी पृथ्वी से लेकर आकाश तक संपूर्ण विस्तार में ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।*

कि अखिलांड भुवन में, जन-जन में, जल-थल में, नभ में, पवन, प्रकाश, चराचर जगत्, खग, नग, मृग, तरु, लताएँ, सब में वही सगुण-निर्गुण त्यागराज का आराध्य ईश्वर व्याप्त है। तेलुगु के एक कवि वेमना ने कहा कि परमात्मा का इस विश्व में पृथक अस्तित्व नहीं है। यह सारा ब्रह्मांड ही उनका शरीर है, वायु प्राण है, सूर्य, चन्द्र और अग्नि नेत्र समूह हैं। इस प्रकार यह विश्व उन त्र्यंबक महादेव का ही विराट रूप है। दादूदयाल 'सब दिखि देखों पीव को' कहते थे और सहजोबाई 'सब घट व्यापत राम है' की पुकार लगाती थीं।

तुलसीदास ने राम की विभुता दिखाने के लिए एक बड़ा मौजूँ प्रसंग चुना है। वह समय जब सारे देवता अपने संकटमोचन भगवान श्री हरि को पुकार रहे हैं और विमर्श कर रहे हैं कि वे कहाँ मिलेंगे। तब कोई कहता है कि वे वैकुंठ में मिलेंगे तो कोई कहता है क्षीरसागर में। भगवान शंकर उस बहुत अस्त-व्यस्त सी भीड़ में जिसमें हर कोई कुछ बोल रहा है- मौका पाकर एक वचन के ज़रिए देवताओं की आँखे खोल देते हैं। वे कहते हैं 'हरि ब्यापक सर्बत्र समाना/प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना//देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं/कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं//अग जगमय सब रहित बिरागी/प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी।' ईश्वर सर्वतोवृत्त है, इसे कितने मधुर तरीक़े से यहाँ समझाया गया है। देवता ईश्वर के दर्शन ही तब कर पाएँगे जब वे सर्वतोदिक् परमात्मा के इस रहस्य को समझें। राम विश्ववेदा हैं, वे सबके मन की बात जानते हैं। वे ऊपर नीचे अन्दर बाहर, इधर उधर, कहीं भी, गली गली, गाँव गाँव, चप्पे चप्पे में जिधर तिधर, नगरी नगरी, द्वारे द्वारे चहुँ ओर विराजते हैं।

'विभुं' सिर्फ़ सार्वत्रिक व्याप्ति की भौतिकता में नहीं है, वह सर्वज्ञानी की और सर्वशक्तिमान होने की भी स्थिति है। तोराह में कहा Heavenly Father Sees All," यह भी दिलचस्प है कि 'तोराह' में यह कहने के साथ ही ईश्वर को एक शरीर-विग्रह में भी प्रदर्शित किया गया है। बेबीलोन, ग्रीस और रोम जैसी विकसित सभ्यताओं में प्राचीन समय के सर्वोपस्थित ईश्वर का विचार नहीं था, यह मूलतः एक वैदिक विश्वास है। हालाँकि प्रागैतिहासिक देशी अमेरिकियों, प्रारंभिक ईसाइयों आदि में भी यह मान्यता प्रचलित थी। 'विभुं' की अवधारणा सारे जगत को ईश्वर की अभिव्यक्ति मानने की अवधारणा है। जयशंकर प्रसाद के शब्दों में यह विश्व चिति का विराट वपु मंगल है। योग वाशिष्ठ कहता है :- 'वस्तुस्तु जगन्नास्ति सर्प ब्रह्मैव केवलम्' कि वस्तुतः जगत है ही

> विभु शब्द के आधार पर प्रारंभ से ही भारतीय दर्शन में एक उदारवाद चलता रहा जो बहुत प्रगतिशील था। विभु यदि सर्वव्यापकत्व का गुण है तो जातिगत ऊँच नीच या रेसिस्ट बातें कैसे चल सकती हैं? विभु तो अणु में भी है। मनुष्य किसी वर्ण, धर्म, जाति का हो, वह 'अमृतस्य पुत्राः' है।

नहीं, सब कुछ केवल ब्रह्म ही है। सतसई में कवि बिहारी कहते हैं 'यह जग कांचौ सो मैं समुझ्यो निरधार/प्रतिबिंबित लखिये जहाँ, एकै रूप अपार'। कुछ लोगों का मानना है कि ईश्वर के सर्वज्ञाता होने और मनुष्य के स्वतंत्र संकल्प के बीच अंतर्विरोध है। यदि ईश्वर सब कुछ पहले से ही जाना हुआ है तो विकल्पों के बीच चयन कर सकने वाले 'मैं' के होने का अर्थ ही क्या है? किन्तु ईश्वर का 'ज्ञान' हमारी चयन-स्वतंत्रता (फ्रीडम ऑफ़ च्वाइस) को प्रभावित करता हो, यह ज़रूरी नहीं है। पवित्र कुरान में भी ईश्वर को सभी चीज़ों का ज्ञान होने की बात कही गई है। ईश्वर को हमारी क्रियाओं का ही नहीं, हमारी चीज़ों का ज्ञान होने की बात कही गई है। ईश्वर हमारे कारनामे ही नहीं, हमारी भावनाएँ और विचार भी जानता है। बिना किसी सेंसरी डेटा के। बिना दुनिया के साथ किसी तरह की भौतिक अन्तःक्रिया के। ईश्वर का जानना सीधा है। क्या एक ग़ैर-भौतिक सत्ता जानती है? मनुष्य एक भौतिक सत्ता है, अतः उसे आंशिक ज्ञान ही उपलब्ध है। चूंकि ज्ञान मस्तिष्क की विशेषता है तो 'विभुं' कोई प्रज्ञावान ही होगा। कोई आब्जेक्ट नहीं, सब्जेक्ट। कोई थिंग नहीं, कोई बिइंग।

दूसरे विभु शब्द के आधार पर प्रारंभ से ही भारतीय दर्शन में एक उदारवाद चलता रहा जो बहुत प्रगतिशील था। विभु यदि सर्वव्यापकत्व का गुण है तो जातिगत ऊँच नीच या रेसिस्ट बातें कैसे चल सकती हैं? विभु तो अणु में भी है। मनुष्य किसी वर्ण, धर्म, जाति का हो, वह 'अमृतस्य पुत्राः' है। इसलिए राम निषाद, केवट, शबरी, गीध, वानर में किसी भी किस्म का भेदभाव या छुआछूत नहीं करते। श्रीपाद कृष्णमूर्ति शास्त्री (भद्राचल राम चरित्रमु) ने एक तेलुगु कविता में कहा था- नीवन नेनन वाडन/गावेरनि/तलवकात्मगति योक्कडे/नीवुनु नेनुनु वाडुनु/देवुनि प्रतिबिम्ब मनुचु देलियग वलयुन्।' अर्थात् - 'तुम मैं और वह/तुम अलग हो, मैं अलग हूँ और वह अलग है ऐसा भिन्नता का दृष्टिकोण छोड़कर सोचो तो हम सब की आत्मा एक ही है। यह जानना चाहिए कि हममें तुममें और उसमें भी भगवान हैं। ये सब भगवान के प्रतिबिम्ब हैं। ऋग्वेद में इस विभुं को हज़ारों आँख वाला और हज़ारों पैर वाला कहा गया जो विश्व को सर्वतः स्पर्श करता हुआ दस अंगुल आगे गया हुआ है। सहस्त्रशीर्ण पुरुष : सहस्त्रापात/स भूमि सर्वत स्वृत्वात्यतिष्ठद्यशांगुलम'। ऐसा विभुं उन संकीर्णताओं में कैसे फँसेगा जिनमें बंधु लोग उन्हें फँसाना चाहते हैं? स्कंद पुराण में जब 'श्रीराम शरणं समस्त जगतां' कहा गया कि श्री रामचन्द्र समस्त संसार को शरण देने वाले हैं तो उसमें से किन्ही जाति विशेष को बहिष्कृत नहीं किया था। शंकराचार्य ने निर्वाणष्टक (५) में 'न मे जातिभेदः' क्यों कहा था? भागवत ने 'स्रवभूतिप्रियो हरिः' अर्थात् भगवान को सभी प्राणी प्रिय हैं, कहा। देवी भागवत् ने 'भेदोऽस्ति मतिविभ्रमात्' - भेद की प्रतीति को बुद्धि का भ्रम कहा। सूरदास ने जब 'स्याम ग़रीबनि हूँ के गाहक' कहा तो उसमें यह भी जोड़ा कि 'कहा बिदुर की जाति-पाति, कुल, प्रेम-प्रीति के लाहक।' अग्निपुराण में कहा गया कि 'परापरस्त रूपेण विष्णु सर्वहृदिस्थिति' अर्थात् विष्णु सभी लोगों के हृदय में स्थित हैं। विभु की अवधारणा जात-पांत और मजहब के संकरेपन के विरुद्ध सक्रिय होती है। वह पेड़-पौधों और पशुओं, तितली और झींगुर के भी इस दुनिया पर दावे को स्वीकार करती है।■

बृजेन्द्र श्रीवास्तव

लेखक-समीक्षक, साहित्य एवं कला, विज्ञान एवं अध्यात्म, ज्योतिष एवं वास्तु, ब्रह्मविद्या एवं ब्रह्माण्ड विज्ञान जैसे विविध विषयों पर निरंतर लेखन. ५० से अधिक शोध-पत्र विश्वविद्यालयों व राष्ट्रीय संगोष्ठियों में प्रस्तुत. जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर में ज्योतिर्विज्ञान अध्ययनशाला के अतिथि अध्यापक.

सम्पर्क : अपरा ज्योतिषम, २६९, जीवाजी नगर, ठाठीपुर, ग्वालियर-४७४०११

ईमेल - brijshrivastava@rediffmail.com मोबाइल - ९४२५३६०२४३

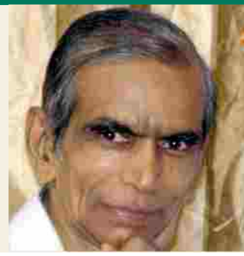

भय

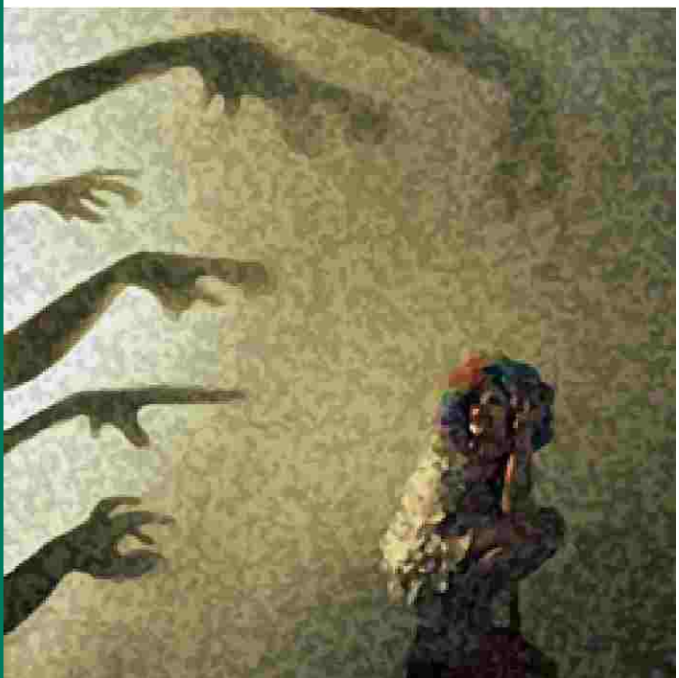

यों तो हर प्राणी, चाहे वह मनुष्य हो या पशु-पक्षी या कीट-पतंग, किसी न किसी डर से आक्रांत अवश्य होता है भले ही वह थोड़े समय के लिए ही क्यों न हो। यहाँ तक कि पेड़-पौधों में भी प्रसन्नता और भय जैसी अनुभूति होती है। सर जगदीशचन्द्र वसु ने सबसे पहिले सिद्ध किया था। यदि किसी पेड़ के सामने यह कह दिया जाए कि इसे छांटना-काटना है तो उससे निकलने वाली विद्युत चुम्बकीय तरंगों का क्रैस्कोग्राफ तत्काल बदल जाता है।

परन्तु बच्चे जब छोटे होते हैं तो उन्हें भय नहीं व्यापता। इसका क्या कारण है? क्योंकि उनमें भेद बुद्धि नहीं होती, वे आग, पानी में हितकर अनिष्टकर वस्तु में भेद करना नहीं जानते। पर जैसे-जैसे हम उनमें भेद बुद्धि पैदा करते हैं अथवा वह स्वयं अपने अनुभव से हानिप्रद या हितप्रद वस्तु का ज्ञान अर्जित करने लगता है बच्चे में डर का भाव भी पैदा हो जाता है।

यद्यपि भय की संवेदना पर अभी न्यूरोसाइंस की कोई पक्की राय नहीं बन सकी है पर सामान्य तर्क का सीधा निष्कर्ष यह है कि भय द्वैत बुद्धि में है जबकि अद्वैत में है निर्भयता। इस तर्क का परीक्षण हम परमहंस अवस्था में अवस्थित उन अवधूतों संतों और योगियों के बर्ताव से कर सकते हैं जो सदैव निडर-निर्भय रहते हैं और इसका कारण है उनका सदैव अद्वैत भाव में बने रहना। अद्वैत भाव से तात्पर्य है कि वह सम्पूर्ण विश्व को अपने में और स्वयं को विश्व में देखते हैं दोनों को अलग नहीं देखते। इस कारण उनके भक्त के शरीर के चोट के निशान उनके शरीर पर आ जाते हैं शिरडी के साईं बाबा और रामकृष्ण परमहंस आज के समय में ऐसी घटनाओं के ज्ञात उदाहरण हैं। पञ्चतत्वों पर भी उनका नियंत्रण रहता है।

भय को आदर के अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है जैसा कि लक्ष्मण-परशुराम संवाद में हस्तक्षेप करते हुए परशुराम से तुलसी के राम कहते है : 'अभय होई जो तुम्हहि डेराई।' जो आपसे डरता है उससे सभी डरते हैं। तुलसी ने दुष्टों की जो 'खल वन्दना' बालकांड में की है उसमें डर खोजना

> *"बच्चे जब छोटे होते हैं तो उन्हें भय नहीं व्यापता। इसका क्या कारण है? क्योंकि उनमें भेद बुद्धि नहीं होती, वे आग पानी में हितकर अनिष्टकर वस्तु में भेद करना नहीं जानते।"*

बेवकूफी होगा। बकौल तुलसी, दुष्टों के गुणदोष का वर्णन इसलिए किया गया है कि बिना पहिचाने उनका संग्रह नहीं हो सकता 'तेहि तें कछु गुण दोष बखाने; संग्रह त्याग न, बिनु पहिचान।' फिर किंचित लोकशिक्षण और साहित्यिक हास्य व्यंग्य भी तो चाहिए। परन्तु तुलसी ने 'भय बिन होई न प्रीती' की जो बात कही है उसमें दण्ड के भय से दुर्जन-उद्दंड के मन व आचरण में नीति और न्यायसंगत बात के प्रति लगाव उत्पन्न करने का भाव है। महाभारत के शांतिपर्व में कहा गया है कि यह विश्व दण्ड के द्वारा अच्छे मार्ग पर लाया जाता है। इस दण्ड शास्त्र को राजनीति से इसलिए जोड़ा गया क्योंकि राज्य-शासक ही यह काम कर सकता है। परन्तु राजनीतिक प्रशासन में नीति या दंडनीति में केवल भय ही आधार नहीं होता, नीति भी आधार होती है जो सज्जन के लिए मार्गदर्शी और आचरण योग्य होती है जबकि दुर्जन के लिए यह भय के कारण दुराचरण को रोकने वाली होती है। वैसे भी स्वयं का विवेक आने तक बड़ों का भय अनुशासन में सहायक तो होता ही है। पर मृत्यु भय होते हुए भी इस भय से व्यक्ति का आसन्न-मृत्यु परीक्षित के समान मुमुक्षु में रूपांतरण क्यों नहीं होता? यह विचारणीय ही बना रहेगा।

अर्थशास्त्र और धर्मशास्त्र को आरम्भ में दण्डनीति का निर्धारक माना गया। पर कौटिल्य ने अपने ग्रन्थ को अर्थशास्त्र ही लिखा है और जीवन वृत्ति का माध्यम अर्थ होने से अर्थशास्त्र की महत्ता बताते हुए दण्डनीति भी लिखी है। दण्ड के भय से बुरे आचरण पर रोक, अच्छी आदतों का विकास और अपराधी के सुधार का विषय अब विधिशास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान और न्यूरोसाइंस का साझा विषय होने से अपराध और दण्डनीति पर पाठकों की इच्छा होने पर पृथक से चर्चा की जाएगी।

'अब द्वैत में ही भय है' इस तर्क का कुछ और परीक्षण हम करेंगे क्योंकि दुनिया में शिशु जैसा अबोध भाव और सन्तों योगियों जैसा सबमें आत्मभाव अपवाद ही हैं क्योंकि हम सभी सदैव द्वैत में ही जीते हैं। देखिए द्वैत कहाँ नहीं है प्रकृति में? धूप-छाव, दिन-रात, गर्मी सर्दी ये प्रकृति के दो जोड़े हैं, जबकि वैर-प्रीति, दुःख-सुख जैसे विरुद्ध रंगों के बीच ही मन भ्रमण करता रहता है। शरीर के साथ भी जन्म-मृत्यु, बचपन-बुढ़ापा लगा हुआ है। सामाजिक स्तर पर भी गरीबी-अमीरी, जाति या वर्ग गत ऊँच-नीच का द्वैत देखा जाता है।

तो क्या यह द्वैत ही दुखों की, भय की जड़ है? भारत के द्वैतवादी, पुरुष-प्रकृति जैसे द्वैत तत्वों को सृष्टि का आधार मानते हैं। बुद्ध के लगभग समकालीन यूनानी दार्शनिक हेराक्लितु ने भी परस्पर विरोध को जगत के चलते रहने का कारण माना। फ्रेडरिक हेगेल ने भी परस्पर विरोधी बातों को,

द्वैत कहाँ नहीं है प्रकृति में? धूप-छाव, दिन-रात, गर्मी सर्दी ये प्रकृति के दो जोड़े हैं, जबकि वैर-प्रीति, दुःख-सुख जैसे विरुद्ध रंगों के बीच ही मन भ्रमण करता रहता है। शरीर के साथ भी जन्म-मृत्यु, बचपन-बुढापा लगा हुआ है।

द्वंद्व को ही वास्तविकता माना। कार्ल मार्क्स ने हेगेल के द्वंद्व को समाज की विषमता से जोड़ कर जो द्वंद्वात्मक भौतिकतावादी दर्शन दिया उसके आधार पर साम्यवाद ने राजनीति को औजार बनाकर समाज में भय और भूख को मिटाने का प्रयोग भी किया। पर साम्यवादी अर्थ व शासनतंत्र ने थोड़े ही समय में निजता के अस्तित्व के नए भय पैदा किए; वैयक्तिक चेतना को निर्व्यैक्तिक बनाने का और बिग-बॉस-नियंत्रित करने का प्रयास किया जिसका भय और संत्रास, भूख के भय से कमतर नहीं आंका जा सकता।

इससे लगता है कि द्वैत की अपरिहार्य संतान होने से भय शाश्वत है पर यदि यह सच है तो निर्भयता को भी इसी द्वैत की संतान मान कर इसे भय का सहोदर स्वीकार करना होगा। 'जड़ चेतन गुन दोष मय बिस्व कीन्ह करतार', ईश्वर ने इस जड़ चेतन विश्व को गुण-दोष मय रचा है।

लगे हाथ हम इस पर भी थोड़ा विचार कर लेते हैं कि क्या भय का स्वरूप बदलता रहता या यह स्थिर रहता है। वस्तुतः जैसा कि हेराक्लितु ने कहा है कि जगत परिवर्तनशील है, हम उसी नदी में दो बार नहीं उतर सकते क्योंकि दुबारा उतरने पर पहिले का पानी बदल चुका होता है इसलिए नदी पहिले वाली नदी नहीं रह जाती। भय के साथ भी कुछ ऐसा ही है क्योंकि जो बात पहिले हमें भयभीत करती थी वही बात अब उतना भयभीत नहीं करती या बिलकुल ही नहीं करती। जो बीमारी, जो लोकलाज, जो दिव्य न्याय प्रणाली भयभीत करती थी अब उसका भय नहीं रहा। अपनी कर्तव्यविमुखता के कारण पहिले जो भय का भाव मन में आता था वह अब सालता ही नहीं।

एक रोचक तथ्य यह भी है कि कहीं-कहीं भय के 'कर्ता और भोक्ता' के स्थान की आपस में अदला-बदली हो गयी है। छात्र नक़ल करने में निडर हो चला है जबकि अध्यापक डरा हुआ है। पहिले बहू अपने सास-ससुर से कुछ डरी-सी रहती थी अब ससुर-सास बहू से डरते हैं और जब से दहेज क़ानून का ब्रह्मास्त्र बहू के हाथ आ गया है तब से बहू से डर प्रताड़ना के मामले इतने अधिक बढ़ गए हैं कि विधि और समाजशास्त्री दहेज क़ानून में संशोधन की मांग करने लगे हैं। पहिले राजनीतिक आक्रमणों के भय से और फिर रूढ़िवादी शालीनता का डर दिखाकर पर्दा प्रथा जारी रखी गई। भारत सहित इंग्लैण्ड, ऑस्ट्रेलिया यूरोप और अमेरिका तक में अब महिला परिधान की बहस में शील शालीनता पुरुषों को भी ओढ़नी होगी और अब पुरुषों की बारी है कि ड्रेस के मामले में टिप्पणी करने से वे डरें। वैसे अपराध के विधिशास्त्र में एक मत यह भी है कि शील देखने वाले की दृष्टि में होता है और यही उचित लगता भी है। इधर 'ऊपरवाले' से डरने की बात भी अपना महत्व खोती जा रही है जो किशोर कुमार के गाये इस फिल्मी गाने में कुछ इस तरह कही गयी है : *आसमाँ पर है खुदा और जमीं पर हम, आजकल वो इस तरफ देखता है कम।*

> *एक रोचक तथ्य यह भी है कि कहीं-कहीं भय के 'कर्ता और भोक्ता' के स्थान की आपस में अदला-बदली हो गयी है। छात्र नक़ल करने में निडर हो चला है जबकि अध्यापक डरा हुआ है। पहिले बहू अपने सास-ससुर से कुछ डरी-सी रहती थी अब ससुर-सास बहू के डरते हैं।*

इस विमर्श से क्या कुछ ऐसा निष्कर्ष हम निकाल सकते हैं जो भय के कारक मूल तत्व को संकेतित कर सके, जो दार्शनिक कम और व्यवहार योग्य अधिक हो? हमने देखा कि हम जब किसी बात के अतिरेक बिंदु पर या उसकी चरम सीमा पर होते हैं तो वह स्थिति भय पैदा करती है फिर जब हम वहाँ से हट कर इसके ठीक विपरीत दूसरे चरम बिंदु पर होते हैं तब फिर नया भय सृजित हो जाता है। इन दोनों परस्पर विरोधी अतिरेक बिंदुओं के बीच ही मनुष्य कुछ निर्द्वन्द्व निर्भय रह पाता है जैसा कि हमने उक्त उदाहरणों में देखा। इस विचार को आगे बढ़ाने पर भय, एक तरह से यिंग-यंग का ऊर्जा चक्र है जिसमें बहुत दूर जाना ही वापिस लौटना है। यह यिंग-यांग उत्तरायन-दक्षिणायन जैसा ही है जिसमें सूर्य के अधिकतम दक्षिणायन को ही उत्तरायण का प्रस्थान बिंदु कहा जाता है और सूर्य के अधिकतम उत्तर-गमन को दक्षिण की तरफ वापिसी का संकेतक माना जाता है।

जैसे वसन्त का भौतिक अनुभव 'न अति शीत न अति ग्रीष्म' के बीच के समय में होता है वैसे ही निर्भयता का वसन्त भी वास्तविक जीवन में सामाजिक संसाधनों की साझेदारी से, उन्नति और सुरक्षा के सम्यक अवसर की प्राप्ति से ही मुखरित हो सकता है। भौतिक रूप से इसकी तनिक सी उपस्थिति ही मन को भय मुक्ति के भाव से अनुप्राणित कर देती है। क्योंकि आत्मा का मूलतः आनन्द स्वरुप है। वेदों में प्रार्थना भी की गयी है कि यह अन्तरिक्ष और पृथ्वी न तो भयभीत होते हैं और न रिक्त ही होते है, वैसे ही हमारे प्राण भी न तो भयभीत हों और न ही रिक्त हों।

अभी हमने सामाजिक धरातल पर भय मुक्त वातावरण की कुछ शर्तों का जिक्र किया जो मन में निर्भयता के भाव को बढ़ाती हैं। गीताञ्जलि में कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी ऐसे ही भयमुक्त भारत की शुभाकांक्षा में यह गीत गाया है :

Where the mind is without fear and the head is held high,
Where the world has not been broken into fragments into narrow domestic walls
Where words come out from the depth of truth..
Into that heaven of freedom,
My Lord ! Let my country awake
मन हो निर्भय जहाँ और सिर हो ऊंचा
हो जहाँ ज्ञान निर्बाध,

खंडित होकर बँटी न हो दुनिया सँकरी घरेलू दीवारों से
जहाँ वाणी हो सत्य-स्नात सदैव
परमलोक में ऐसे स्वतन्त्रता के,
हे परमेश्वर! हो मेरे देश का उद् बोधन।

भय मुक्त समाज का एक मॉडल या रूप हम राम राज्य में पाते हैं जिसमें दैहिक, दैविक और भौतिक तीनों तरह के ताप अर्थात भय-कष्ट नहीं थे पर ऐसे रामराज्य में भी जब शूद्र की तपस्या से जन भय हो सकता है, सीता भी अग्निपरीक्षा के बाद भय मुक्त नहीं हो सकी और भवभूति के राम, सीता परित्याग से उत्पन्न शोकसागर में गिरे हुए सीता के वनवासी जीवन के प्रति चिंतित शंकित भयग्रस्त रहे तो कहना होगा कि आदर्श स्थिति और जमीनी हकीकत में कुछ अन्तर तो अपरिहार्य है। पर फिर भी रामराज्य या गाँधी जी का स्वराज गुड गवर्नेंस का प्रतीक तो बना ही रहेगा।

निर्भय समाज के मूल में आत्मनिर्भरता ही मुख्य स्रोत या आधार होती है, पहिले अंग्रेजों ने इसे नष्ट किया अब स्वतंत्र भारत की उधारबुद्धिजन्य नीतियों ने आत्मनिर्भरता और इससे जुड़ी निर्भयता के विनष्टीकरण को और बढ़ाया है। आज जो पर-निर्भरता, आर्थिक विषमता, जातिगत ध्रुवीकरण, दिशाहीनता और जीवन मूल्यों के प्रति तत्-जनित एक हिंसक भाव देखा जा रहा है उससे नए तरह के भय पैदा हो रहे हैं जिनके सामने कथित आर्थिक समृद्धि बहुत अधिक मायने नहीं रखती। हर समस्या पर क़ानून बनाना इसका झाड़फूंक वाला इलाज जैसा ही है।

गांधीजी अपने स्वराज के जिस प्रयोग से भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग को देसी संसाधनों व स्वभाषा के बलबूते पर आत्मनिर्भरता बनाकर उसे जो निर्भीकता देना चाहते थे उसे नेहरू ने नहीं स्वीकारा पर चतुराई से गांधी के उत्तराधिकारी भी बने रहे। नेहरू ने देश के आर्थिक संसाधनों को जिस तरह से पूंजीपति, सरकार और दोनों के संयुक्त क्षेत्र, ऐसी मिश्रित अर्थव्यवस्था वाले समाजवाद पर खर्च किया, उसने समाज के पूंजीपति-नौकरशाह के छोटे से वर्ग को तो स्वामी से स्वयम्भू बना दिया जबकि समाज के बहुत बड़े वर्ग को, जिसमें कि आदिवासी, परम्परागत उद्योगों में पारंगत और इस कारण आत्म निर्भर बना हुआ वर्ग, शिल्पी, विशेषज्ञ, कारीगर, मजदूर और छोटी पूंजीधारी आत्मनिर्भर तबका शामिल था- इन सबको अपने मूल स्रोत से विस्थापित कर दिया, आत्मनिर्भरता से गिराकर दूसरों का मुँह देखने वाला, नौकरी पर या आरक्षण पर निर्भर बना दिया।

धर्मपाल ने लिखा है कि अठारहवीं सदी के अन्त तक निर्माण क्षेत्र में लगे और धातुओं से सामान बनाने वाले लोग अपने को ब्राह्मणों से किसी तरह नीचा नहीं समझते थे और ब्राह्मण पुरोहित पंडित उन्हें उचित सम्मान देते थे। दक्षिण भारत में तो आज भी उन्हें उचित सम्मान देते हैं। वे कहते हैं कि हमारे प्राचीन उद्योग धंधों में पारंगत अधिकतर जन आज भी भारतीय उद्योगों के दायरे से बाहर हैं जो आज की भाषा में पिछड़े वर्ग के कहे जा रहे हैं वे पहिले उच्चवर्ग जैसे ही हैसियत रखते थे। इस विवरण से जाहिर है ऐसे वर्ग में आज के समृद्ध वर्ग के प्रति भय विरोध का भाव तो छुपा रहेगा ही समरसता का भाव रिजर्वेशन मात्र से कैसे आ सकता है?

> बड़ा होने पर हम महसूस करने लगते हैं कि देवता हथियार लेकर हमारा भय हरण करने नहीं आते, बल्कि प्रार्थना करने से हमारे अंदर छिपी आत्म शक्ति को उजागर कर देते हैं और तब हमें डर नहीं लगता।

बच्चे की तरह गांधी जी को बचपन में अँधेरे से डर लगता था, माँ के कहने पर राम नाम लेने से उनका डर भाग गया। भारत को आप क्या मानेंगे? अलौकिक नेतृत्व या अवतार की आस में बैठा बच्चा या वयस्क? हमारी ६५ प्रतिशत आबादी में ३०-३५ वर्ष के युवक-युवतियां हैं इसलिए भारत वयस्क है। बड़ा होने पर हम महसूस करने लगते हैं कि देवता हथियार लेकर हमारा भय हरण करने नहीं आते, बल्कि प्रार्थना करने से हमारे अंदर छिपी आत्म शक्ति को उजागर कर देते हैं और तब हमें डर नहीं लगता। इसीलिए अब 'हम भारत के लोग' (यह संविधान की प्रस्तावना का प्रथम वाक्य है) अपनी आत्मशक्ति पहिचानने में लग जाएँ ताकि रवींद्र के भय मुक्त समाज के लिए संगठित हो सकें।

समाज के बीच ही भय से मुक्ति का मार्ग खोजने के लिए जनता का एक वर्ग सामने आ रहा है जो मुख्यतः निम्नवर्ग और निम्न मध्यम वर्ग से ही ऊर्जस्वित होगा। स्वामी विवेकानंद का भी कुछ ऐसा ही मानना है। सदियों पुराने अरब देशों में आ रहे 'अरब-स्प्रिंग' की तरह पर अपनी तर्ज का भारतीय वसन्त यहाँ भी सामाजिक राजनीतिक आर्थिक क्रांति लेकर आ रहा है। अपनी अलग सामाजिक पृष्ठभूमि के कारण निर्भयता का यह वसन्त, सामाजिक विषमता के विरुद्ध समता से ही अनुप्राणित होगा, आखिर पृथ्वी पर भी वसन्त का आगमन गर्मी-सर्दी की विषमता से दूर सम-शीत-उष्णता में ही तो होता है।■

प्रभुदयाल मिश्र

ग्राम बर्माडांग, जिला टीकमगढ़ मध्यप्रदेश में जन्म. सागर विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. महर्षि महेश योगी के साथ आध्यात्मिक पुनरुत्थान आन्दोलन के सिलसिले में संपूर्ण भारत यात्रा. मध्य एशिया के तजाकिस्तान और उजवेगिस्तान गणराज्यों में गीता और भारतीय योग पर व्याख्यान. विभिन्न आध्यात्मिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध. प्रकाशित कृतियां : सौंदर्यलहरी काव्यानुवाद, सबके लिए गीता, उत्तर पथ, मैत्रेयी, वेद की कविता (वैदिक सूक्तों का काव्यान्तर), वेद की कहानियाँ, तंत्र दृष्टि और सौन्दर्य सृष्टि, योग के सात आध्यात्मिक नियम, ईश्वर का घर है संसार. सम्मान : मध्यप्रदेश संस्कृत अकादेमी द्वारा 'व्यास सम्मान', मध्यप्रदेश लेखक संघ द्वारा 'पुष्कर सम्मान', पेंग्वुन पब्लिशिंग हाउस द्वारा 'भारत एक्सीलेन्सी एवार्ड', वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद् द्वारा 'महाकवि केशव सम्मान'. सम्प्रति : अध्यक्ष, महर्षि अगस्त्य वैदिक संस्थानम्, भोपाल.

सम्पर्क : ३५, ईडन गार्डन, राजा भोज मार्ग, भोपाल म.प्र. ४६२०१६ ईमेलः prabhu.d.mishra@gmail.com, www.vishwatm.com

सूर्या विवाह

(ऋग्वेद मंडल १० सूक्त ८५ मंत्र ६)

रैभ्यासीदनुदेयी नाराशंसी न्योचनी
सूर्याया भद्रमिद्वासो गाथयैति परिष्कृतम्।६।
ऋचा थी परिचारिका उसकी सखी
जब सूर्या परिणीत पतिगृह जा रही थी
आवरण उसका मनोहर, भव्य
दिव्य गाथा प्रेम की तब कह रहा था।

चित्तिरा उपबर्हणम् चक्षुरा अभ्यन्जनम्
द्यौभूमिः कोश आसीद यद्यात सूर्या पतिम्।७।
चारु चित आभरण, अंजित नयन
धन पृथिवी-गगन थे उसके
उस समय जब सूर्या परिणीत
पति के भवन प्रस्थान करने जा रही थी।

स्तोमा आसन प्रतिधयः कुरीरं छंद ओपशः
सूर्याया अश्विना वरा ऽग्निरासीत् पुरोगवः।८।
स्तोत्र ही थे चक्र के आरे सुशोभित
छांदस-स्यंदन
वर थे अश्विनी-सुत दोनों पवन था
अग्रगामी सूर्या का।

सोमो वधूयुर्भवदिश्विनास्तामुभा वरा
सूर्याम् यत् पत्ये संशंतीम् मनसा सवितादात्।९।
वधू की कामना तब सोम ने की थी
कि दोनों अश्विनी सुत का वरन करने
समुत्सुक थी स्वयं सूर्या
तथा संकल्प इसका सूर्य ने साधा।

मनो अस्या अन आसीद् द्यौरासीदुच्छदिः
शुक्रावनड्वाहावास्ताम् यद्यात् सूर्या गृहम्।१०।
मन हुआ था सूर्या का रथ,
छत्र आच्छादित गगन
सूर्य-शशि थे सारथी
जब सूर्या पति के भवन
प्रस्थान करने जा रही थी।

ऋक्सामाभ्यामभिहितो गावौ ते सामनावितः
श्रोत्रं ते चक्रं आस्तां दिवि पन्थाश्चराचरः।११।
साम-ऋक् थे वृषभ सम्
अनुरूप उस रथ के
श्रवण जैसे चक्र थे और
पथ था ज्यों परम आकाश।

शुची ते चक्रे यात्या व्यानो अक्ष आहतः
अनो मनस्मयम् सूर्या रोहत् प्रयसी पति।१२।
दो चक्र उस गतिशील रथ के कान थे
था पवन रथ का धुरा
आरूढ़ थी सूर्या मनोमय रथ
उस समय परिणीत वह
प्रस्थान करने जा रही थी जब।

क्रमशः...

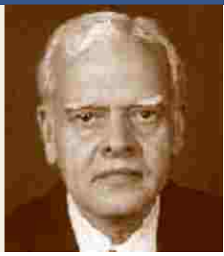

भूपेन्द्र कुमार दवे

जन्म : २१ जुलाई १९४१. शिक्षा : बी.ई. आनर्स, एफ.आई.ई., कहानी और कविताओं का आकाशवाणी से प्रसारण. प्रकाशित कृतियाँ : ३ खंड काव्य, १ उपन्यास, ५ काव्य संग्रह, २ गज़ल संग्रह, ७ कहानी संग्रह एवं २ लघुकथा संग्रह. मध्यप्रदेश विद्युत मंडल द्वारा कथा सम्मान. त्रिवेणी परिषद द्वारा उषा देवी मित्रा अलंकरण प्राप्त. संप्रति : भूतपूर्व कार्यपालन निदेशक, मध्यप्रदेश विद्युत मंडल.

सम्पर्क : b_k_dave@rediffmail.com

मंथन

अन्तरात्मा की भव्यता

THE GRANDEUR OF INNER SELF

भगवद्गीता में हम वीर अर्जुन व ईश्वर के अवताररूपी श्रीकृष्ण के बीच हुए संवाद के रूप में सूक्ष्म दार्शिनिक सत्य पाते हैं। फिर हमारे पास योगवशिष्ठ है जहाँ ईश्वर के अवताररूपी श्रीराम और गुरु वशिष्ठ के बीच का संवाद है जिसमें सरल वाक्य-विन्यास व भगवद्गीता के स्पष्ट कथन का समावेश है। एक और कृति अष्टावक्र गीता है जो सूक्ष्म सत्य पर चिंतन स्वरूप है जहाँ हम राजा जनक और गुरु अष्टावक्र के बीच स्पष्ट वार्तालाप पाते हैं। उपरोक्त सारी कृतियाँ चिंतन के उस उच्च स्तर तक ले जाती हैं जहाँ सिध्दि ब्रह्म याने चेतना से परिचय कराती है। उक्त कृतियों की खूबी यह है कि भगवद्गीता में अर्जुन युवावस्था का, योगवशिष्ठ में श्रीराम बाल्यावस्था का और अष्टावक्र गीता में राजा जनक प्रौढ़ावस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस तरह ये कृतियाँ जीवन की प्रत्येक अवस्था को आत्मसात् करती हुई एक समान सिध्दि तक ले जाती हैं। चिंतनकला भी एक तरह का संवाद है जहाँ सत्य की खोज अंततः माया व भ्रम की गहरी परतों का उन्मूलन करती है ताकि मात्र सत् ही प्रकट होकर और असत् अलग से चिह्नित होकर शुद्ध चेतना से हमारे जीवन को देदीप्यमान कर सके। चिंतन के सारतत्व में निहित है स्वतंत्र व स्पष्ट संवाद जहाँ अर्जुन शरीर याने शून्य तथा ईश्वर आत्मा याने चेतना हैं। चिंतन के समय भ्रमित किन्तु विचारशील मन स्वतः की अंतरात्मा को संबोधित करता है और संवाद के आरंभ होने की प्रतीक्षा करता है। देखने, समझने व सोचने में सक्षम हमारा शरीर अपने सारे विचारों के मलबे को चिंतन की प्याली में ऊँड़ेलता है और अपने अंतः से हुए संवाद की ऊष्मा में मथ जाने का इंतजार करता है। मैंने प्रयास किया है और उससे जो प्रकट हुआ है, वह मैं अपने पाठकों से साझा करूँ। अतः यहाँ प्रारंभ होती है वार्ता – एक संवाद जिसके एक तरफ देखने, समझने व सोचने में सक्षम मेरा मन और दूसरी ओर मेरा अंतः याने आत्मा जो मानवमन को शुद्ध चेतना की सिध्दि की ओर अग्रसर करने में कुछ हद तक सक्षम है। - ले.

The fear of death and the lust to attain immortality is the ash and underneath this the spark appears insignifcant.

मृत्यु का भय और अमरत्व की लालसा ही वह राख है और इस राख में छिपी चिनगारी क्षीण ही प्रतीत होती है।

As I am in you, so I am in all. Therefore you are, what others are. You are no different from them.

जो मैं तुममें हूँ, वही मैं सब में हूँ। अतः तुम वही हो जो सब हैं। तुम उनसे भिन्न नहीं हो।

So think not yourself as something different from others. You are neither superior to others nor inferior to others.

अतः अपने को दूसरों से भिन्न मत समझो। ना तुम दूसरों से श्रेष्ठ हो और ना ही दूसरों से तुच्छ।

My absolute fullness that is enshirned in you is in all because all are part of that absolute fullness, every particle of which retains fullness.

मेरी पूर्णता जो तुममें व्याप्त है वही सब में व्याप्त है, क्योंकि सभी उस एक पूर्णता के अंश हैं जिसका हर अंश पूर्ण ही होता है।

The aspect of fullness of all proves that all are equal, because absolute fullness has only one identity i.e. satyam shivam sudaram.

सभी का पूर्ण होना प्रतिपादित करता है कि सभी एक समान हैं, क्योंकि पूर्ण का एक ही स्वरूप होता है — सत्यम् शिवम् सुन्दरम्।

Infinity is infinity and infinity has no defination or form. But who can see infinity? Who is able to see the soul?

अनंत अनंत होता है और अनंत की कोई परिभाषा या रूप नहीं होता। पर अनंत को कौन देख पाता है? आत्मा को कौन देख पाता है?

Yet soul can experience the existence of soul because there is only one point of infinity -- the point where all meet. Where there is one alone, he has no need to peep into the surroundings and it is infinity.

फिर भी आत्मा को आत्मा का अहसास होता है क्योंकि अनंत का बिन्दु एक ही है जहाँ सभी मिलते हैं। जहाँ एक है उसे इधर-उधर झाँकना नहीं पड़ता और यही अनंत है।

For in this world your existence is that of infinity. You can perform whatever is in infinite form.

क्योंकि तुम्हारा अस्तित्व इस संसार में अनंत का सा है। तुम वह सब कर सकते हो जो अनंतरूप में है।

Therefore to know what you are, do not look anywhere. Even if you happen to see, you will find that if some other is unhappy, you are also unhappy and if some other is evil, you are also evil.

अतः तुम क्या हो यह जानने के लिये अपने इर्द-गिर्द मत देखो। यदि देखते भी हो तो पावोगे कि यदि दूसरा दुखी है तो तुम भी दुखी हो और अगर दूसरा पापी है तो तुम भी पापी हो।

If you desire to be something, you have to make others something, because if they are happy, you will be happy. If others are pious, you will also become pious.

अगर तुम कुछ बनना चाहते हो तो दूसरों को कुछ बनाओ क्योंकि अगर वे सुखी हैं तो तुम सुखी होगे। अगर वे पुण्यवान हैं तो तुम भी पुण्यवान होगे।

If you want to see your image in a mirror, you have to wipe out the dust that is covering the mirror. And if you want your image to be beautiful you have to improve your makeup as well.

दर्पण में अपनी छवि देखना हो तो दर्पण पर जमी धूल को साफ करना होता है और अपनी छवि को सुन्दर देखना चाहते हो तो खुद को भी संवारना होता है।

For improving your makeup, cast the image of the soul on the mirror of the world, for soul has only one identity i.e. satyam shivam sudaram.

खुद को संवारने के लिये संसाररूपी दर्पण में अपनी आत्मा को प्रतिबिम्बित करो क्योंकि आत्मा तो सदा एक रूप लिये होती है — सत्यम् शिवम् सुन्दरम्।

Let not the soul get buried under the dust of ego, the moss of lust, the hidden rust of the body and the thorny bushes of thoughts germinating in the mind. Let the soul shine free from all this.

आत्मा को अहं की धूल, लालसा की काई और शरीर में छिपी जंग व मन में उगते विचारों की कंटीली झाड़ियों में मत दबे रहने दो। इन सबसे मुक्त आत्मा को मुखरित होने दो।

The inner soul knows that the happiness of one soul does not mean the unhappiness of another.

अंतरात्मा जानती है कि एक आत्मा की शान्ति का अर्थ कदापि दूसरी आत्मा की अशान्ति नहीं होता।

Therefore, in order to glorify the self you have to adore others, so that the place where you are, you feel as if you are in heaven. Your innerself is fit and desirous of such an atmosphere.

अतः खुद को संवारने के लिये सबको संवारो जिससे जहाँ तुम रहो वह तुम्हें स्वर्ग सा लगे। तुम्हारी अंतरात्मा ऐसे ही वातावरण में रहने के काबिल व इच्छुक है।

So know me, understand the enormity of my purpose and realize my existence and attain bliss to live a peaceful life.

अतः मुझे जानो, मेरे उद्देश्य की विशालता को समझो और मेरे अस्तित्व का अनुभव करो तथा आनंद प्राप्त कर शांतपूर्ण जिन्दगी बसर करो।

Make yourself and your life transparent enough so that the radiations emanating from your inner self emerge out to illuminate your outer beauty. This light is celestial and this itself is your energy.

स्वयं को और अपने जीवन को इतना पारदर्शी बनावो कि तुम्हारी अंतरात्मा की छवि का प्रकाश बाहर आकर तुम्हारे बाहरी सौन्दर्य को भी प्रकाशित करे। यह प्रकाश अलौकिक है और यही तुम्हारी ऊर्जा है।

Thus you shall attain my status and shall be full with rigors of pure consciousness.

इस तरह तुम मेरे समकक्ष होगे और शुद्ध सचेतना (ब्रह्म) की शक्ति सहित होगे।

Remember that every person including you has a great divine self within him ___ an absolute perfect, shining and sublime being of light.

याद रखो कि तुम सहित प्रत्येक मानव में सर्वश्रेष्ठ ईश्वरीय आत्मा है — प्रकाश का शुद्ध संपूर्ण, जगमगाता उत्कृष्ट रूप।

The light so radiating from all has to merge into one and make everything illuminated by this one celestial light.

सब में जगमगाते इस प्रकाश को एक ही में विलीन होना है और प्रत्येक वस्तु को इसी दिव्य प्रकाश से आलोकित करना है।

Do not allow your or others light to disappear or otherwise get covered by soot of any form because you all are the bearer of celestial light with a purpose.

अपने व दूसरों के प्रकाश को अदृश या किसी भी तरह की कालिख से दबने मत दो क्योंकि तुम सब एक लक्ष्य के साथ इस दिव्य प्रकाश को लिये हुए हो।■

गर्भनाल

एक क्लिक पर पूरे अंक एक साथ

www.garbhanal.com

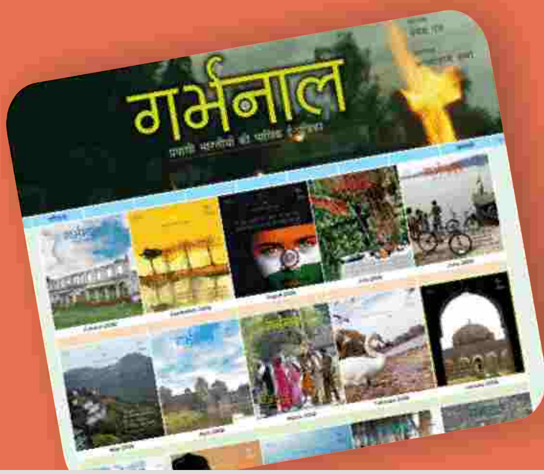

गर्भनाल के पुराने अंक पाएँ
एक साथ एक ही जगह
लॉगऑन करें

www.garbhanal.com

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

garbhanal@ymail.com

पंचतंत्र कई दृष्टियों से संसार की सर्वाधिक लोकप्रिय कृतियों में से एक है। इसमें संकलित कहानियों का मूल उत्स लोक-जीवन है। भारतीय कृतियों में पंचतंत्र ऐसी अकेली रचना है, जिसे पूरी तरह ज्ञानकोश कहा जा सकता है। कथा प्रस्तुति की जो शैली इसमें प्रयुक्त है, उसकी एक लंबी परम्परा है। 'वेद', 'ब्राह्मण' आदि ग्रंथों में भी इस फैंटेसी का प्रयोग हुआ है।

बेचारा नेवला

किसी नगर में देवशर्मा नाम का एक ब्राह्मण रहता था। उसकी ब्राह्मणी को बच्चा पैदा होने वाला था। उसने एक बच्चे को जन्म दिया। जिस दिन उसे बच्चा हुआ उसी दिन एक नेवली को भी बच्चा पैदा हुआ पर वह नेवली बच्चा पैदा करके मर गई। ब्राह्मणी को नेवले के बच्चे पर दया आ गई। वह उसे उठाकर अपने घर ले आई और जिस तरह अपने बच्चे को दूध पिलाती, तेल और उबटन लगाती थी उसी तरह दूध पिलाकर और तेल उबटन लगाकर उसका भी पालन करने लगी।

नेवले का इतना ध्यान रखने के बाद भी ब्राह्मणी को उस पर पूरा विश्वास नहीं था। उसे लगता था कि जानवर का बच्चा तो जानवर ही ठहरा। कौन जाने वह उसके बच्चे के साथ क्या कर बैठे। सच ही कहा है कि आदमी का अपना पूत चाहे कुपूत ही क्यों न हो, वह उजड्ड, कुरूप, मुर्ख, कुलच्छी या दुष्ट ही क्यों न हो, उसे देखने पर उसका जी जुड़ा जाता है।

दुनिया कहती है चंदन शीतल होता है परंतु पुत्र के शरीर के स्पर्श की तुलना में वह कुछ है ही नहीं।

एक दिन ब्राह्मणी ने पुत्र को पालने पर सुला दिया और घड़ा उठाकर तालाब से पानी भरने चली। जाते-जाते उसने पति से कहा, 'ब्राह्मण, मैं पानी भरने के लिए तालाब को जा रही हूं। बच्चे का ध्यान रखना। कहीं ऐसा न हो कि नेवला उसे काट खाए।'

ब्राह्मण सिर्फ ब्राह्मण होते तो कोई हरज नहीं था, पर वह ब्राह्मण देवता थे। ब्राह्मणी की

> *आदमी का अपना पूत चाहे कुपूत ही क्यों न हो, वह उजड्ड, कुरूप, मुर्ख, कुलच्छी या दुष्ट ही क्यों न हो, उसे देखने पर उसका जी जुड़ा जाता है।*

बात का उन पर क्या असर होना था। उधर ब्राह्मणी ओझल हुई और इधर ब्राह्मण देवता घर को सूना ही छोड़कर भीख मांगने को चल पड़े।

संयोग कुछ ऐसा हुआ कि उनके चले जाने के कुछ ही देर बाद घर के ही एक बिल से एक करैत सांप निकला। नेवले और सांप का तो जनम का बैर। उसका करैत का बाप भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता था। खतरा किसी को था तो नेवले के दूध पीते भाई को जो नींद में डूबा हुआ था और करैत को देख ही नहीं सकता था, देख भी सकता तो यह समझ नहीं सकता था कि यह जीव खतरनाक भी है और इसे देखकर उसे अपनी कैं कैं को इतनी ऊंची केंके बनाना होगा कि यह कम से कम उसके माता-पिता में से किसी के और यदि उसका सौभाग्य साथ दे तो दोनों के, कान में पड़ जाए। पर मुश्किल यह थी कि यदि किंकियाता तो भी माता-पिता में से कोई वहां उसे सुनने वाला नहीं था। इसलिए उसकी रक्षा का सारा भार बेचारे नेवले के ऊपर था जो अभी पूरा नेवला भी नहीं बन पाया था।

कुछ तो अपने जानी दुश्मन सांप को देखकर और कुछ अपने दूध पीते भाई के भविष्य की कल्पना करके नेवले के मन में इतना रोष पैदा हुआ कि वह यह भूल गया कि वह अभी जवान नहीं हुआ है और उस करैत पर टूट पड़ा और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। उसका मुंह लहूलुहान था पर यह उसे उस समय ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उसकी विजय की कहानी सुनहले अक्षरों में उसी के मुख पर लिख दी हो। वह अपनी सफलता पर इतना खुश हुआ कि उसे इतना भी धीरज नहीं था कि वह ब्राह्मणी के वापस आने तक वहीं नाचता रह सके। वह दौड़ता हुआ अपनी धाई मां के पास पहुंच गया कि देखो मैंने कितनी बहादुरी से तुम्हारे पुत्र और अपने दूध के भाई की जान बचाई है और ऐसा करके तुम्हारे दूध की लाज रखी है। ब्राह्मणी ने उसके रक्त से सने होठों को देखा तो वह बावली हो गई। उसके मन में एक ही बात कौंधी। हो न हो, इसने मेरे बच्चे को ही काट खाया है और उसी का लहू इसके मुंह पर लगा हुआ है।

वह दौड़ता हुआ अपनी धाई मां के पास पहुंच गया कि देखो मैंने कितनी बहादुरी से तुम्हारे पुत्र और अपने दूध के भाई की जान बचाई है और ऐसा करके तुम्हारे दूध की लाज रखी है। ब्राह्मणी ने उसके रक्त से सने होठों को देखा तो वह बावली हो गई।

अब क्या था। उसने आव देखा न ताव, उठाया घड़ा और नेवले के ऊपर दे मारा वह बेचारा तो वहीं ढेर हो गया।

अब वह रोती-कलपती दौड़ी भागी घर आई। देखती क्या है कि लड़का तो आराम से सो रहा है और उसके पास ही एक करैत के टुकड़े हुए पड़े हैं।

अब तो उसके शोक का पारावार नहीं था। लगी छाती पीट कर हाय-हाय करने। अरे मैंने तो अपने ही एक बेटे को मार डाला। हाय मेरा नेवला, हाय मेरा बच्चा।

इसी समय भीख मांगकर उसका पति भी वापस आ गया। ब्राह्मणी लगी उसे कोसने- अरे ओ लोभी, तुम्हारा तो पेट भरने का नाम ही नहीं लेता। जब देखो तब कुछ बटोरने की ही चिंता में रहते हो। तुम्हारे लोभ ने ही मेरे एक बच्चे की जान ले ली। अब जिंदगी भर इस नेवले के शोक में ही जीना पड़ेगा। मैं कहती हूं इतना लोभ भी किस काम का। ठीक ही कहा है कि मनुष्य को लोभ छोड़ना तो नहीं चाहिए पर बहुत अधिक लोभ भी नहीं करना चाहिए। अधिक लोभ करने से माथे पर चक्का घूमने लगता है।

ब्राह्मण ने कहा, 'तुझे तो घुमा फिरा कर बात कहने की आदत है।'

ब्राह्मणी बोली, 'तो खोल कर सुनाती हूं। कान खोलकर सुन लो।' ■

महर्षि वेद व्यास

वैदिककालीन ऋषि वेद व्यास की रचना महाभारत की गणना भारतीय साहित्य-भंडार के सर्वश्रेष्ठ महाग्रंथों में की जाती है। इसमें पांडवों की कथा के साथ अनेक सुन्दर उपकथाएँ हैं तथा बीच-बीच में सूक्तियाँ एवं उपदेशों के उज्जवल रत्न भी जुड़े हुए हैं। महाभारत एक विशाल महासागर है जिसमें अनमोल मोती और रत्न भरे पड़े हैं। रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति और धार्मिक विचार के मूल स्रोत माने जा सकते हैं।

बारहवां दिन

पहले ही दिन युधिष्ठित को जीवित पकड़ने की चेष्टा के विफल हो जाने पर आचार्य द्रोण दुर्योधन से कहने लगे, "राजन! अर्जुन के पास रहने पर युधिष्ठिर का पकड़ना असंभव है। अपनी तरफ से जो कुछ करना है वह मैं करूंगा। यदि कोई उपाय करके अर्जुन को युधिष्ठिर से अलग करके उसे कहीं दूर हटा दिया जाये तो मैं व्यूह तोड़कर पास पहुंच जाऊंगा और यदि वह मैदान में डटा रहा तो निश्चय ही उसे कैद करके ले आऊंगा और युधिष्ठिर भाग खड़ा हुआ तो वह भी हमारी जीत ही मानी जायेगी।"

द्रोणाचार्य की ये बातें कौरवों के मित्र त्रिगर्त-नरेश सुशर्म से सुन लीं। उसने अपने भाइयों के साथ मिलकर मंत्रणा की कि अर्जुन को युधिष्ठिर से अलग हटाने का कोई उपाय किया जा सकता है? सबसे अंत में यही निश्चय किया कि संशप्तक व्रत धारण करके अर्जुन को युद्ध के लिये ललकारा जाये और लड़ते-लड़ते उसे युधिष्ठिर से दूर हटाकर ले जाया जाय।

यह निश्चय करके उन्होंने एक भारी सेना इकट्ठी की और नियमानुसार संशप्तक-व्रत की दीक्षा ली। सबने घास के बने वस्त्र धारण किये। अग्नि की पूजा की और फिर शपथ खाई कि हम लोग युद्ध में धनंजय का वध किये बिना नहीं लौटेंगे। यदि भय के कारण पीठ दिखाकर भाग आए तो हमें महापाप करने का दोष प्राप्त हो, हम प्राणों तक का उत्सर्ग करने को प्रस्तुत रहेंगे।

यह शपथ लेने के बाद संशप्तकों ने वे सब दान-पुण्य किये, जो मरणासन्न व्यक्तियों से कराये जाते हैं और फिर वे युद्ध-क्षेत्र में दक्षिण की ओर मुख करके कूद पड़े और अर्जुन को युद्ध के लिये ललकारा।

संशप्तक-व्रत लिये हुए त्रिगर्त-देश के वीरों की इस टोली को कौरव-सेना का 'आत्मघाती-दल' समझा जा सकता है। आजकल की लड़ाइयों में भी यह प्रणाली प्रचलित है, जिसके अनुसार कोई दल-विशेष या व्यक्ति-विशेष किसी खास उद्देश्य की पूर्ति के लिये कटिबद्ध होकर निकलते हैं और कृतकार्य हुए बिना जीवित नहीं लौटते। अंग्रेजी में ऐसे वीरों की टोली को सुसाइड स्क्वैड कहते हैं।

सबने घास के बने वस्त्र धारण किये। अग्नि की पूजा की और फिर शपथ खाई कि हम लोग युद्ध में धनंजय का वध किये बिना नहीं लौटेंगे। यदि भय के कारण पीठ दिखाकर भाग आए तो हमें महापाप करने का दोष प्राप्त हो।

संशप्तक-व्रत-धारी त्रिगर्त वीरों ने अर्जुन को नाम ले-लेकर पुकारा और उसे युद्ध के लिये चुनौती दी।

अर्जुन ने युधिष्ठिर से कहा- "राजन्! देखिये, ये लोग संशप्तक-व्रत लेकर मुझे ललकार रहे हैं। आप तो जानते ही हैं कि मैंने यह प्रण कर रखा है कि किसी के ललकारे पर युद्ध में जरूर जाऊंगा। राजा सुशर्म और उसके साथी मुझे युद्ध के लिये ललकार रहे हैं। इसलिये मैं तो जा रहा हूं और उनका सर्वनाथ करके ही लौटूंगा आप मुझे आज्ञा दीजिए।"

युधिष्ठिर ने जब यह देखा तो बोले- "भैया, आचार्य द्रोण का इरादा तो तुम्हें मालूम ही है। उन्होंने मुझे जीवित पकड़ ले जाने का दुर्योधन को वचन दिया है। तुम तो जानते ही हो कि द्रोणाचार्य बड़े बली हैं, शूर हैं, कष्ट-सहिष्णु हैं, शस्त्र विद्या के पारंगत हैं और अपनी प्रतिज्ञा के लिये पूर्ण प्रयत्नशील हैं। उनके प्रण और उनके सामर्थ्य को ध्यान में रखकर जो तुम्हें उचित लगे, वह करो। यही मेरा कहना है।"

अर्जुन ने कहा- "आपकी रक्षा पंचालराज-पुत्र सत्यजित करेंगे। जब तक वह जीवित रहेंगे तब तक आप पर किसी तरह की आंच नहीं आ सकती।"

और सत्यजित को युधिष्ठिर का रक्षक तैनात करके अर्जुन संशप्तकों की ओर ऐसे लपका जैसे भूखा शेर शिकार पर लपकता हो।

अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा- "कृष्णा! देखिए वे त्रिगर्त-लोग खड़े हैं। प्राणों के भय के कारण तो उन्हें रोना ही चाहिए था, किंतु व्रत के नशे में मस्त ये बड़े खुश हो रहे हैं। स्वर्ग की प्रतीक्षा करते हुए वे आनन्द के मारे अपने आप में नहीं है।" कहते-कहते अर्जुन शत्रु-सेना के पास जा पहुंचा।

युद्ध का बाहवां दिन था, बहुत ही भयानक लड़ाई हो रही थी। अर्जुन ने त्रिगर्तों पर ऐसा आक्रमण किया कि त्रिगर्त-सेना के वीर विचलित होने लगे। इस पर घबराये हुए सैनिकों का उत्साह बढ़ाते हुए राजा सुशर्म सिंह की भांति गरज उठा।

बोला- "शूरो! याद रक्खो! क्षत्रियों की भरी सभा में तुम लोगों ने शपथ खाकर व्रत धारण किया है। घोर प्रतिज्ञा करने

> पांडवों को हराना इतना सरल काम नहीं है। पांडव ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जो युद्ध में इतनी जल्दी पीछे हट जायें। वे कभी उन घोर यातनाओं को नहीं भूल सकेंगे जो उन्हें विष से, आग और जुए के खेल से पहुंची थीं। वनवास के समय जो कष्ट झेलने पड़े उन्हें वे कभी वे भूल नहीं सकते।

के बाद भय-विह्वल होना तुम्हें शोभा नहीं देता। लोग तुम्हारी हंसी उड़ायेंगे। डरो नहीं! आगे बढ़ो और प्राणों की बलि चढ़ा दो।"

यह सुन सभी वीरों ने एक-दूसरे को प्रोत्साहित करके शंख बजाते हुए फिर भयानक युद्ध शुरू कर दिया।

उनका यह युद्ध देखकर श्रीकृष्ण से अर्जुन ने कहा- "हृषिकेश! जब तक इनके तन में प्राण रहेंगे, ये मैदान से हटेंगे नहीं। अतः अब हमें भी झिझकना नहीं चाहिए, आप रथ चलाइये।"

मधुसूदन ने रथ चलाया और अपने सारथ्य की कुशलता का अद्‌भुत परिचय दिया। श्रीकृष्ण द्वारा संचालित वह उस समय ऐसी ही शोभित हुआ जैसे देवासुर-संग्राम के समय इंद्र का रथ शोभित हो रहा था। अर्जुन के गांडीव ने भी अपनी पूरी चतुराई का परिचय दिया। त्रिगर्तों को एक ही समय में सौ-सौ अर्जुन दिखाई देने लगे और अर्जुन के द्वारा घायल वीर ऐसे दिखाई देने लगे जैसे हजारों फूलों से लदे पलास के पेड़।

घोर संग्राम होने लगा। एक बार तो अर्जुन का रथ त्रिगर्तों के बाणों की बौछार से मानो अंधकार में विलीन हो गया।

लेकिन अर्जुन ने त्रिगर्तों द्वारा लाये गये बाणों के घेरे में ही गांडीव उठाकर ऐसे बाण मारे कि जिनसे शत्रुओं की बाण-वर्षा का घेरा हवा में उड़ गया।

उस समय युद्ध-भूमि का दृश्य ऐसा भयानक प्रतीत हुआ मानो प्रलय के समय रुद्र की नृत्य-भूमि हो। सारे मैदान पर जहां तक दृष्टि पहुंचती थी, बिना सिर के धड़, टूटे हाथ-पैर आदि के ढेर पड़े दिखाई देते थे।

अर्जुन को संशप्तकों से लड़ते देख द्रोणाचार्य ने अपनी सेना को आज्ञा दी कि पांडवों की सेना के व्यूह के उस स्थान पर आक्रमण करें जहां युधिष्ठिर हों। युधिष्ठिर ने देखा कि द्रोणाचार्य के सेनापतित्व में एक भारी सेना उनकी ओर बढ़ी चली आ रही है। वह धृष्टद्युम्न को सचेत करते हुए बोले- "वह देखो! ब्राह्मण-वीर आचार्य द्रोण मुझे पकड़ने के लिये आ रहे हैं। सतर्कता के साथ सेना की देखभाल करना।" धृष्टद्युम्न द्रोण के आने की प्रतीक्षा किए बिना ही आगे बढ़ चला। द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न को, जिसका जन्म ही द्रोणाचार्य के वध के लिये हुआ था, अपनी ओर आते देखकर द्रोणाचार्य क्षणभर के लिये भयभीत से हुए, मानो काल का आगमन हो रहा हो। उन्हें स्मरण हो आया कि धृष्टद्युम्न के हाथों मेरी मृत्यु निश्चित है और आचार्य उसकी ओर न बढ़कर जिधर राजा द्रुपद युद्ध कर रहे थे, उस ओर घूम गये।

द्रुपद की सेना को खूब परेशान करने और खून की नदी बहाने के बाद द्रोणाचार्य ने फिर युधिष्ठिर की ओर अपना रथ बढ़ाया। आचार्य को देखते ही युधिष्ठिर अविचलित भाव से बाणों की वर्षा करने लगे। इस पर सत्यजित द्रोणाचार्य पर टूट पड़ा। भयानक संग्राम छिड़ा। इस समय द्रोणाचार्य ऐसे प्रतीत हुए मानो साक्षात् काल हों। पांडव-सेना के वीरों को एक-एक करके वह मारने लगे। पांचाल-राजकुमार वृक के प्राण उनके बाणों ने ले लिये। सत्यजित का भी वही हाल हुआ।

यह देख विराट का पुत्र शतनीक द्रोण पर झपटा और दूसरे ही क्षण शतानीक का कुंडलोंवाला सिर युद्ध-भूमि पर लोटने लगा। इसी बीच केदम नाम का राजा आगे बढ़ते चले गये। उनके प्रबल वेग को रोकने के लिये हिम्मत करके वसुधान आया और वह भी यमलोक पहुंचा। युधामन्यु, सात्यकि, शिखंडी, उत्तमौजा आदि कितने ही महारथियों को तितर-बितर करते हुए द्रोणाचार्य युधिष्ठिर के नजदीक जा पहुंचे। उस समय द्रुपदराज का एक और पुत्र पांचाल्य अपने प्राणों की जरा भी परवाह न करके अदम्य जोश के साथ द्रोण पर टूट पड़ा। वह भी मृत होकर रथ से जमीन पर इस प्रकार गिरा जैसे आकाश से तारा टूटकर गिरता हो।

"राधेय! आचार्य द्रोण का पराक्रम तो देखो! पांडवों की सेना कैसी बेहाल होकर इधर-उधर भाग रही है। मैं कहता हूं कि ये पांडव अब युद्ध में अवश्य हार जायेंगे।" दुर्योधन ने कहा।

कर्ण को यह ठीक नहीं लगा। बोला- "दुर्योधन! पांडवों को हराना इतना सरल काम नहीं है। पांडव ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जो युद्ध में इतनी जल्दी पीछे हट जायें। वे कभी उन घोर यातनाओं को नहीं भूल सकेंगे जो उन्हें विष से, आग और जुए के खेल से पहुंची थीं। वनवास के समय जो कष्ट झेलने पड़े उन्हें वे कभी वे भूल नहीं सकते। देखो तो, वे पांडव-वीर फिर से इकट्ठे होकर आचार्य पर हमला कर रहे हैं। कितने ही वीर युधिष्ठिर की रक्षा के लिये आ गये हैं। भीम, सात्यकि, युधामन्यु, क्षत्रधर्म, नकुल, उत्तमौजा, द्रुपद, विराट, शिखंडी, धृष्टकेतु आदि बहुत से वीर आ गये हैं। और अब द्रोणाचार्य पर अचानक हमला हो रहा है। आचार्य के कंधों पर इतना बोझ लादकर हम यहां खड़े रहें, यह ठीक नहीं होगा। यद्यपि वह महान वीर हैं फिर भी उनकी सहन-शक्ति की भी कोई सीमा है। भेड़िए भी एक साथ हमला करके एक भारी हाथी को मार सकते हैं। इसलिये, चलें। उन्हें अकेले छोड़ना ठीक नहीं है। यह कहता हुआ कर्ण आचार्य की सहायता को चल दिया।"■

विजय कुमार सिंह

१३ मार्च १९५२ को बुलंदशहर में जन्म. बी.एस-सी. (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), एम.ए. हिंदी (मेरठ विश्वविद्यालय), एल एल.बी. (मेरठ विश्वविद्यालय). आठ वर्षों तक बुलंदशहर में अधिवक्ता के रूप में कार्यरत, पच्चीस वर्षों तक श्रम प्रवर्तन अधिकारी के रूप में उत्तर प्रदेश श्रम विभाग में कार्य. कविता संग्रह *वल्लकी* (श्रीमती कुसुम चौधरी के साथ), *स्पंदन*, *स्तवन* प्रकाशित. स्वैच्छिक सेवा निवृति के बाद ऑस्ट्रेलिया में निवास.

सम्पर्क- 2/1076, pacific highway, Pymble, NSW2073, Australia Email : vksingh52@hotmail.com

सनन्-सनन् निनाद कर रहा पवन

सनन्-सनन् निनाद[१] कर रहा पवन[२]
अजस्र[३] मर्मरित[४] हुए हैं वन[५] सघन[६]
न पर्ण[७] सा बना रहे सिहर-सचल[८]
ओ मनुज[९] बना रहे सदा सबल[१०]।

घनक/घनक[११] घनेरते[१२] घनेरे[१३] घन[१४]
नृत्य[१५] कर रहे निरत[१६] तड़ित[१७] चरण[१८]
मन रहे न यह कभी तेरा विकल[१९]
ओ मनुज बना रहे सदा सबल।

झरर-झरर वरिष[२०] अदिति[२१] निगल रहा
अमित[२२] अनिष्ट[२३] अग्नि[२४] ज्वाल[२५] पल रहा
सामने अड़े हुए अडिग[२६] अचल[२७]
ओ मनुज बना रहे सदा सबल।

थरर-थरर है काँपती वसुंधरा[२८]
तीव्र[२९] ज्वार[३०] ले उदधि[३१] उमड़ पड़ा
हो रहे विरोध[३२] में ये जग[३३] सकल[३४]
ओ मनुज बना रहे सदा सबल।

१. जोर की आवाज़; २. हवा, वायु; ३. सतत, लगातार, अविच्छिन्न; ४. खड़खड़ाहट; ५. जंगल; ६. घने; ७. पत्ता; ८. काँपना - चंचल, चलना; ९. मनुष्य, आदमी; १०. ताकतवर, बलवान; ११. गरजना; १२. घिर रहे; १३. घने, अतिशय, गहरे; १४. बादल, मेघ; १५. नाच; १६. लगातार, अविकल; १७. बिजली; १८. पैर; १९. परेशान, व्याकुल, भय आदि से युक्त; २०. बरसात, वर्षा; २१. जमीन, पृथ्वी, धरा, प्रकृति, दक्ष की पुत्री; २२. बेहद, अत्यधिक, जो मापा न जा सके; २३. अशुभ, अमंगल, अहित, अनर्थ; २४. आग; २५. आग की लपट; २६. अटल, स्थिर; २७. पर्वत, गतिहीन; २८. धरती, पृथ्वी; २९. तेज; ३०. समुद्र के जल का ऊपर उठना; ३१. सागर, समुद्र; ३२. बाधा, प्रतिरोध, विपरीतता, विपक्षता; ३३. संसार, जगत, दुनियाँ; ३४. सारा, सारी ।

सुमन वर्मा

इतिहास में एम.ए. करने के बाद दिल्ली में अध्यापक रहीं। हिन्दी और अंग्रेजी में कविताएँ लिखती हैं। ग्राफ़िक कलाकार हैं और कम्प्यूटर पर लगभग ८२५ चित्र बना चुकी हैं। ऑस्ट्रेलिया में विगत ३० सालों से रह रही हैं। सम्प्रति - 'साउथ एशिया टाइम्स' तथा 'नवनीत हिन्दी डाइजेस्ट ऑफ ऑस्ट्रेलिया' के लिए कविता और छोटी कहानियाँ लिखती हैं।

सम्पर्क : suman08@hotmail.com

कविता

दामिनी

बलात्कार की चोटों से मैं
रोऊँ और चिल्लाऊँ
अंग-अंग मोरा टूट रहा है
और दर्द से मैं कराहूँ
अन्दर-बाहर से घायल हूँ मैं
कैसे तुझे दिखाऊं...

शैतानों की बस्ती में बहनो
सदा संभल कर रहना
फूंक-फूंक कर कदम तुम रखना
और बहकावे में न आना
जीवन का गहरा राज़
कभी तुम माँ से नहीं छिपाना
पुलिस को रिपोर्ट लिखा कर जल्दी से
शैतानों को जेल भिजवाना...

नाम है मेरा दामिनी
मैं हूँ इक निर्भयी नारी
सब कुछ मोरा लुट चुका है
अब है मोरे जाने की बारी
मेरा वक़्त अब आ गया है
अलविदा मुझे तुम कहना
मेरी याद में आंसू बहाकर
समय नष्ट नहीं करना...

■

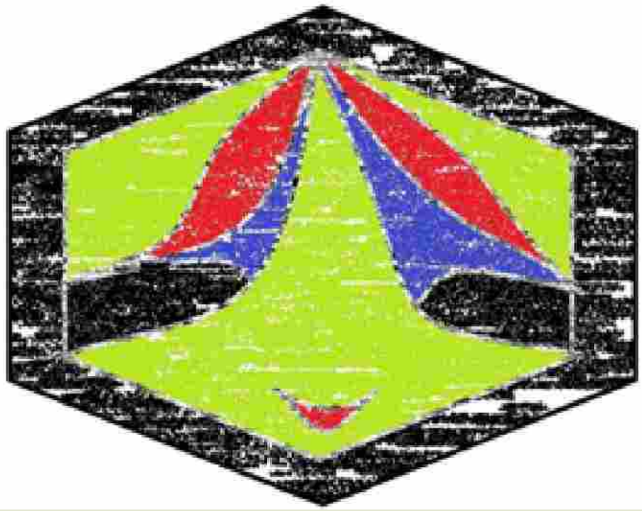

शरणार्थी

कितना दर्द है मेरे जिगर में
गली गली मैं जाऊं
आग से भागा, सागर में डूबा
फिर भी मैं मुस्काऊं।

मैं शरणार्थी हूँ तेरे वतन में
सब मुझको हैं ठुकराते
बच्चे, घर सब लुट चुके हैं
मोरे दिल पे ठेस पहुंचाते।

जर्जर कर रही है वेदना मुझको
कैसे ज़ख्म दिखाऊं तुझको
कैसे ज़ख्म दिखाऊँ?
इन रिसते घावों पर आकर
तू मरहम ज़रा लगा दे
मुझ पर करुणा करके अब तू
वापिस मुझे बुला ले।

■

मंजूषा हांडा

हरिद्वार में जन्म। शिक्षा गुजरात और उड़ीसा में हुई। उड़ीसा इंजीनियरिंग कॉलेज से कंप्यूटर विज्ञान में इंजीनियरिंग की उपाधि प्राप्त की। पढ़ाई पूरी करने के बाद अमेरिका पहुँचीं। लिखने-पढ़ने में रुचि के साथ ही चित्रकारी भी करती हैं। सम्प्रति - कैलिफोर्निया में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के तौर पर कार्यरत।

सम्पर्क : mxhanda@gmail.com

इंसानियत चाहे हर इंसान

शर्म से भी ज्यादा आज आई शर्म
हर इंसान बैठा है आँखें मीचे
कैसे कहें नेक कौम हैं हम
कोई तो इस बात का ज़रा खुलासा कीजे

भयानक सन्नाटों की चीखें
आत्मा को झकझोर रही हैं
हर ओर की बेबसी से
खून के अश्कों में कई रूहें डूब रही हैं

शैतानों की बेजा हरक़त ने
ज़माने को बेज़ार किया
अब तो माँ के पहलू में भी पनाह
पाने का हक इन दरिंदों ने गँवा दिया

गम-ए-ज़माना यह
खुला ज़ख्म खून बहा रहा है
पर इस नासूर को भरने वाला
कहीं मिलता नहीं है

सुनहरी धूप है
पर चेहरा बादलों से घिरा है
गर्द-ए-राह ने सूरज का
साथ चूर चूर किया है

खुरदरी हवाओं ने
सावन को ऐसा झुलसा दिया
आस्मानी रौशनी ने भी अब
गर्म लू बरसाने का फैसला किया

इन मायूसियों को क्या नाम दें
बे-नाम ही रहने दो
शायद ख्वाहिशों की भीड़ में
गुम हो जाएँ यों

माना, इंसानी ज़िन्दगी के तजुर्बों में
गिले-शिकवे क़ैद रहते हैं
पर इन्हीं तजुर्बों के खौफ से
कई आगोषे तस्सवुरफना होते हैं

आज तन्हा वो बहुत
टूटा मासूम-सा ख्वाब जिसका है
बेज़ार ज़माने की हकीकत ने
एक और मासूमियत का क़त्ल किया है

मगर हौस्ला अफज़ाई कर
जिगर-ओ-नस के इस सफ़र पर
मर मर के जीना सिखा दिया
एहसानात कई खुदा के
जिगर देके इस माहौल में भी
आरज़ूओं का सिलसिला चलने दिया

लेकिन आरजुओं के इस जोश में
तुम यह न भूल जाना
बड़बड़ाना हमारी फितरत है
पर है तो यह बे-खयाली ही ना

और ख़याल हैं जो निर्माण करें
वही है हमारी हकीकत जो
पर शब्दों का चुनाव ही
उजागर करे हकीकत को

फिर यह भी सही, ख्यालों और
हकीकत का तालमेल मुश्किल बहुत
और इनके दर्मियाँ जो खला है
वोह सस्ती बहुत

इस खला को हटाने का
चैन बहुत मँहगा बिकता है
अब तो हर पल यही तालमेल हासिल करने के
इंतज़ार में निकलता है

और वक्त ने भी अफसानों की तह को
अभी नहीं है खोला पूरा
इसी में सचाई जाने कितनी जीत और
आज़माइशें हैं बाकी हैं वक़्त के पहलू में समाई

चलो यही सही, आओ बक्श्के
बीते कल के ज़ख्म-ओ-निशान मिलके भरते हैं
पुरानी यादें बदल के आने वाले कल को
सुनहरा बनाने की जद्दोजहद में लगते हैं

दुरुस्त यही, नाकामी छू नहीं सकती
फ़क़त रहेंगे बुर्दबार हम
इंसानियत को सुनहरे अक्षरों में
लिखने का बेसबरी से करेंगे इंतज़ार हम

यूँ ही रहेंगे इन्हीं इरादों के आसपास हम
के इसी को हौसला-ए-बुलंदी कहते हैं
हम इन्हीं इरादों के उजालों में
उम्मीदों का समान जुटाते रहते हैं! ▪

सरोज उप्रेती
राजस्थान में जन्म। बचपन से ही कविताएँ लिखने में रुचि। कविताओं के माध्यम से मानवीय संबंधों के खट्टे-मीठे अनुभव, प्रकृति के वर्णन एवं जीवन के विभिन्न पहलू उजागर करती हैं। हिन्दी ब्लॉग जगत में सक्रिय भागीदारी। सम्प्रति - कनाडा के टोरंटो शहर में रहती हैं।
सम्पर्क : sarojupreti103@gmail.com

कविता

पहाड़ की याद

दिल्ली की भीषण गर्मी
जब तन को झुलसा जाती
ठंडी हवा ठंडा पानी
पहाड़ की याद ताजा हो आती

बड़ा-सा आँगन कोने में गोठ
आँगन में संतरा निम्बू अखरोट
कनेर ब्रूस के फूलों की बाढ़
भीनी-भीनी खुशबु फैलाती

हम सहेलियां नाले में जातीं
वहां से गगरी भर ले आतीं
रास्ते में कुछ गाते जातीं
आधी गगरी छलकती जाती

ईजा का धोती में सिकुड़ना
चूल्हे में खाना पकाते जाना
खाने की खुशबू घर में समाती
इजा खाना परोसती जाती

बाबू का हुक्का गुडगुड करना
सबेरे से बैठक का भर जाना
ठहाकों की गूंज भर जाती
चाय की सोंधी खुश्बू आती

आँचल मैं अखरोट बाँधना
चलते-चलते खाते जाना
पैरों की पाजेबें बजतीं
ठंडी हवा मन को भाती

नाले का पानी मीठा लगता
मिनरल वाटर फीका लगता
दिल मचल उड़ने को करता
पहाड़ी वादियाँ मन को भातीं।
▪

डॉ. परमजीत ओबराय

४ दिसंबर १९६६ को जन्म. दिल्ली यूनिवर्सिटी से एम.ए. और पी.एच-डी. की डिग्रियाँ हासिल कीं. १६ सालों तक विभिन्न स्कूलों में अध्यापन करने के बाद वर्तमान में बहरीन में पढ़ाती हैं.

सम्पर्क : न्यूमिलिनियम स्कूल, बहरीन. ईमेल : rajesh_oberoi67@yahoo.com

आत्मा

संसार क्षेत्र की यात्रा करने
चली आत्मा
रूप अनेक धार।

पथ में जिसके काँटे अधिक हैं
फूल हैं केवल चार।

कुछ रूप हैं उसके बलवान
दुर्बल को नित मिली असफलता
बलवान को पहचान।

सभी रूपों में बढ़कर है
मानव रूप महान।

मानव है सर्वश्रेष्ठ रचना
उस ईश की
रखें यह सदा ध्यान।

शरीर रूपी विश्राम स्थलों पर
डेरा अपना डाल
नव प्रभात हो चला जाएगा
आत्मा यात्री महान।

■

आईना

आईना वही है
चेहरे बदल गए
पुराने चेहरे लगे दिखने
अब नए-नए।

भावनाएँ डूब गईं अब अंतर्गुहा में
दिखावा हो गया प्रधान
आज के इस जहान में।

रिश्ते वही
व्यवहार बदल गए
धरती वही है
लोग बदल गए
आत्मा है वही
शरीर बदल गए
हेर-फेर के इस प्रांगण में
हृदय बदल गए।

भगवान है तुझमें
न दिया ध्यान तूने
आकर, रहकर शरीर घट में
बिना आदर पाए
चले गए।

बाद में पछताने से क्या होगा
शरीर तो अब मिट्टी में मिल गए।

■

सुधा मिश्रा

बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में जन्म. सागर विश्व विद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की. बचपन से ही हिन्दी साहित्य में अभिरुचि रही. कनाडा प्रवास के दौरान कविता लिखना प्रारंभ. टोरोंटो में आयोजित कवि सम्मेलनों और कवि गोष्ठियों में सरल, मौलिक, भावुक प्रस्तुति के लिये जानी जाती हैं. इनकी कवितायें 'काव्योत्पल' तथा 'हिन्दी टाइम्स' में प्रकाशित हुई हैं. सम्प्रति - टोरोंटो में रहती हैं.

सम्पर्क : sudhamishra123@hotmail.com

कविता

प्यार

क्या पशु पक्षी क्या आकाश, क्या गंगा और क्या कैलाश।
इस जगती में कौन है ऐसा, जिसे नहीं है प्यार की प्यास।।

प्यार है शाश्वत प्यार अजर है, प्यार मिले कामना अमर है।
प्यार से बनते बिगड़े कारज, प्यार से मिलता है कर्तार।

भाव प्रेम के अजब निराले, कुछ ना कह कर सब कह डाले।
प्यार की भाषा सब पहचाने, अपने हों या हों बेगाने।।

हों नभचर जलचर या थलचर, सभी में पलती प्यार की प्यास।
प्यार के बदले प्यार मिलेगा, ऐसे ही चलता संसार।।

प्यार से ही रिश्ते गहराते, बेगाने अपने बन जाते।
प्यार बिना हर खुशी अधूरी, प्यार है जीवन का आधार।।

प्यार का दामन इतना विस्तृत, जिसमे सारा ब्रह्मांड समाये ।
प्यार भरा स्पर्श मिले तो, मानव क्या पशु-पक्षी को भाये।।

प्यार बनाये अटूट बंधन, प्यार से ही होते गठबंधन।
प्यार से ही निभते सब रिश्ते, प्यार से ही जीवन सुंदरतम।।

प्यार है पूजा प्यार है भक्ति, प्यार में है एक अदभुत शक्ति।
इस शक्ति में प्रभु बिराजते, जो हैं जगत के पालनहार।।

बड़े प्यार से जीना जीवन, पल पल प्यार का साथ निभाना।
प्रेम सुधा की दो सौगातें, खुशियों की बगिया महकाना।।

■

बसंत ऋतु

हुआ आगमन ऋतु बसंत का, खुशी हर तरफ़ छाई है
पुलकित हैं सारे पशु पक्षी गौरैया हर्षायी है

कोयल ने भी मधुर स्वरों में फिर से सरगम गायी है
गुन गुन गुंजन की स्वर लहरी भंवरों ने दोहरायी है

नव पल्लव वृक्षों पर आये पुष्पों पर नूतन तरुणायी
शीतल सुरभित मंद पवन भी मंद मंद मुस्कायी है

कल कल करती नदियां बहतीं झर झर करते झरने
जल तरंग के नये सुरों की एक लहर लहरायी है

है बसंत ऋतुओं की रानी अद्भुत इसकी सुंदरताई
प्रकृति ने मानो नयी वधू सी अनुपम छवि बनायी है

धरती करती श्रृंगार अनूठा अंग अंग से फूटे यौवन
प्रेमी युगलों की खातिर ये ऋतु प्रेम की आयी है

हुआ आगमन ऋतु बसंत का, खुशी हर तरफ़ छाई है
बरसाओ प्रेम सुधा जीवन में यही संदेशा लाई है।

■

बीनू भटनागर
४ सितम्बर १९४७ को बुलन्दशहर में जन्म. लखनऊ विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान में एम.ए. की उपाधि. हिन्दी साहित्य में हमेशा से रुचि रही, लेकिन रचनात्मक लेखन देर से आरंभ किया. नामी पत्र-पत्रिकाओं में कवितायें, आलेख आदि प्रकाशित.
सम्पर्क : ए-१०४, अभियन्त अपार्टमेन्ट, वसुन्धरा एनक्लेव, दिल्ली-११००९६ ईमेल : binu.bhatnagar@gmail.com

बसंत बहार

गूंजा राग बसंत बहार
दिशा दिशा सम्मोहित हैं
फूल खिले तो रंग बिखरे हैं
गूंजा जब मधुरिम आलाप।

भंवरों पर छाया उन्माद
स्वरों की हुई जो बौछार
तितली भंवरे और मधुलिका
पुष्पों के रस मे डूब रहे हैं।

प्रकृति और संगीत एक रस
स्वर ताल के संगम में अब
झूल रहे हैं फूलों के दल
मस्त समीर के झोंकों के संग।
▪

साहित्यकार

यथार्थ के धरातल पर
कल्पना के फूल हों
यथार्थ की डोर हाथ में
पतंग हो आकाश में।

यथार्थ से जो कट गया
वो साहित्य ही नहीं
अतीत के फूल चुन
वर्तमान मे जिये
भविष्य को दिशा दे
वही साहित्यकार है
जिसमें ओज हो
प्रवाह हो, सरल हो
मन छुए और
ज्ञान का भंडार हो।
▪

नीरज गोस्वामी

अगस्त १९५० को जम्मू में जन्म. अंतरजाल की लगभग सभी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में ग़ज़लें प्रकाशित. पेशे से इंजीनियर. अनेक विदेश यात्राएं कर चुके हैं. सम्प्रति - भूषण स्टील मुंबई में वाइस प्रेसिडेंट के पद पर कार्यरत.

सम्पर्क : neeraj1950@gmail.com

शायरी की बात

दोस्तों से दुराव मत रखिये

हमसे कायम ये भरम है वरना
चाँद धरती पे उतरता कब है
नामुमकिन को मुमकिन करने निकले हैं
हम छलनी में पानी भरने निकले हैं
होठों पर तो कर पाए साकार नहीं
चित्रों पर मुस्काने धरने निकले हैं

ये ही नहीं, ऐसे ही खूबसूरत अशआरों से भरी इस किताब का शीर्षक है 'तुम्ही कुछ कहो ना' और इसे लिखा है डॉ. कविता किरण ने जो अपना एक ब्लॉग डॉ. कविता 'किरण' (कवयित्री) के नाम से चलातीं हैं. इस ब्लॉग में आप उनकी ग़ज़लों और एवं अन्य काव्य रचनाओं को समय-समय पर पढ़ सकते हैं.

किरण कहती हैं 'ग़ज़ल एक किरदार नहीं, कायनात है, जिसमें एक शायर अपनी साँसों को शेरों की तरह बुनता है. कभी महबूब के ख्वाबों से सजाता है तो कभी हकीक़त से रु-ब-रु होने की कोशिश करता है.' हकीकत से रु-ब-रु होने की कोशिश उनके इन शेरों में साफ़ झलकती है :

एक ही छत के नीचे थीं
दोनों की दुनिया अलग-अलग
अपने ही घर में बरसों तक बन कर के मेहमान रहे
नहीं पता था उन्हें हमारा हमको उनकी खबर न थी
इक दूजे की खातिर केवल जीने का सामान रहे
मन पर लादा मौन साध इक अनचाहे रिश्ते का बोध/ना निगला ना उगला उसको बस करते विषपान रहे

प्रसिद्ध गीतकार 'मानिक वर्मा' ने इस पुस्तक के बारे में कहा है 'कविता किरण जी ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से बहुत कुछ कह दिया है. ग़ज़लों में हर शेर अपनी शेरियत के साथ उपस्थित है. हमारे आसपास के जीवन मूल्यों को बड़े सहज और सरल शब्दों में रखने का उनका भागीरथी प्रयास अत्यंत मूल्यवान है. बस आप सुधि पाठकों से निवेदन है आप हर शेर को जरा ठहर-ठहर कर पढ़ें निश्चित ही आपका पूरा दिन गीत- गीत हो जायेगा.'

दोस्त! तू जो बेवफा हो जायेगा
ज़िन्दगी में क्या नया हो जायेगा
क्या तेरे तानों से इक बेरोज़गार
अपने पैरों पर खड़ा हो जायेगा
आंसुओं की शाम मत तोहफे में दो
आज फिर इक रतजगा हो जायेगा

कविता जी ने अपनी कुछ ऐसी ग़ज़लें कहीं हैं जो सिर्फ और सिर्फ एक स्त्री ही कह सकती है. स्त्री जो माँ है. ऐसे अशआर और कहीं शायद ही पढ़ने को मिलें.

पूर्व सांसद और प्रसिद्ध कवि बाल कवि बैरागी जी कहते हैं 'किरण की ग़ज़लों का लक्ष्य आपका मनोरंजन करना नहीं है. आपको समझ के साथ विचार सागर की लहरों पर बिठा कर ये सोचने पर विवश कर देना है कि 'हाँ ये बात बिलकुल ठीक है'. ये एक साहित्यिक, सारस्वत, शालीन, मनोलोक का भ्रमण है.

किरण की ग़ज़लों का लक्ष्य आपका मनोरंजन करना नहीं है. आपको समझ के साथ विचार सागर की लहरों पर बिठा कर ये सोचने पर विवश कर देना है कि 'हाँ ये बात बिलकुल ठीक है'.

ज़िन्दगी में तनाव मत रखिये
इतना मरने का चाव मत रखिये
दुश्मनी कौन फिर निभाएगा
दोस्तों से दुराव मत रखिये

विलक्षण प्रतिभा की स्वामी फालना, राजस्थान निवासी किरण की आठ किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं. आपका लिखा राजस्थानी ग़ज़ल संग्रह पुरस्कृत हुआ है. आकांक्षा प्रकाशन फालना द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए मोबाईल ०९४१४५२३७३० पर संपर्क करें या उन्हें सीधे kavitakiran2008@gmail.com पर लिखें.■

पुष्पा सक्सेना

इलाहाबाद में जन्म. भूगोल एवं हिंदी में एम.ए. तथा पीएच.डी. की उपाधियाँ हासिल कीं. सवा सौ से अधिक कहानियाँ हिन्दी की प्रतिष्ठित एवं नामी पत्रिकाओं में प्रकाशित. ९ कहानी-संग्रह, ५ उपन्यास १ नाटक-संग्रह तथा बाल साहित्य पर ७ पुस्तकें प्रकाशित. टीवी तथा आकाशवाणी–दूरदर्शन, एनएफ़डीसी, एनएसडी, फ़िल्म डिवीज़न आफ़ इंडिया तथा दूरदर्शन द्वारा कहानियों पर फ़िल्म तथा सीरियल का निर्माण. पुरस्कार–Author's Guild Of India अवार्ड, भारतेंदु हरिश्चन्द्र अवार्ड, (सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार) पर्यावरण मंत्रालय, राष्ट्रीय महिला आयोग के अतिरिक्त अन्य कई पुरस्कार.

सम्पर्क : 13819 NE 37TH PL, Bellevue, WA USA ईमेल - pushpasaxena@hotmail.com

प्यार की सज़ा

कई बार डोर-बेल की आवाज़ पर अलसाई रितु ने दरवाज़ा खोला था। चेहरे पर नाराज़गी स्पष्ट थी। बाहर हाथ में ताज़े खिले लाल गुलाब लिए एक लंबा सौम्य युवक खड़ा देख, किसी तरह संयत हो प्रश्न की तरह पूछा-

'यस?'

'हलो, मैं अमन, इंडिया से आया हूं।'

'वो तो साफ़ दिख रहा है। नाम अमन है, पर मेरी तो शांति भंग कर दी। अमरीका में बिना इन्फ़ॉर्म किए कोई किसी के घर नहीं जाता। वीकेंड में सुबह-सुबह जगा कर नींद नहीं तोड़ता।' नाराज़गी छिपाने की ज़रूरत रितु ने नहीं समझी।

'सुबह-सुबह, मिज़? इस वक्त साढ़े दस बजे हैं। वैसे आपकी नींद तोड़ कर जो अक्षम्य अपराध कर डाला, उसके लिए क्या माफ़ी के साथ एक कप गर्म कॉफ़ी मिल सकेगी?' परिहास अमन के चेहरे पर स्पष्ट था।

वाह! जान ना पहचान और जनाब की हिम्मत तो देखो, गर्म कॉफ़ी चाहिए। लगता है ख़ासे पहुंचे हुए शातिर इंसान हो। सोचा होगा अकेली लड़की उस पर हिंदुस्तानी, उसे डराना आसान होगा, पर जनाब मुझे कमज़ोर समझने की ग़लती मत करना।

'असल में अमरीका के लिए बिल्कुल नया हूं। सोचा दो भारतीयों का कॉफ़ी के साथ आपस में परिचय भी हो जाएगा।' अमन के चेहरे पर शरारती मुस्कान थी।

'इसका मतलब इंडिया से फ़्लाइट लेकर सीधे मेरे दरवाज़े पर कॉफ़ी के साथ परिचय करने आ पहुंचे। दिमाग तो ठीक है? अब सीधे-सीधे अपना रास्ता नापो वर्ना सिक्योरिटी को बुलाते देर नहीं लगेगी।' ज़ोरदार आवाज़ में रितु ने धमकाया।

जो बताया गया था उसमें और इस घर में रहनेवाली के स्वभाव में ज़रा भी तो समानता नहीं है। कहां वह, मृदुभाषिनी, अतिथि को देवता समझने वाली और कहां यहां एक कप कॉफ़ी के अनुरोध पर सिक्योरिटी बुलाने की धमकी दी जा रही है।

अमन ने निश्चिंत भाव से एक नोटबुक निकाल कर कुछ देख कर कहा- 'पता तो ठीक है, पर लगता है इसमें रहने वाला इंसान कोई और है। जो बताया गया था उसमें और इस घर में रहनेवाली के स्वभाव में ज़रा भी तो समानता नहीं है। कहां वह, मृदुभाषिनी, अतिथि को देवता समझने वाली और कहां यहां एक कप कॉफ़ी के अनुरोध पर सिक्योरिटी बुलाने की धमकी दी जा रही है।' अमन मुस्करा रहा था।

'ओह, अब समझी ज़रूर मम्मी ने मेरी शादी के लिए उम्मीदवार के रूप में तुम्हें भेजा है। सच-सच बता दूं, यहां यह स्थान पहले ही भर चुका है। सॉरी तुम्हारे लिए कोई चांस

नहीं है।' बात खत्म करती रितु ने दरवाज़ा बन्द कर लिया।

'अजी मोहतरमा, ज़रा मेरी बात तो सुनिए, आपको ग़लतफ़हमी हो रही है। मुझे आपको कुछ बताना है, समझाना है। प्लीज़ दरवाज़ा खोल दीजिए।' अमन ने दरवाज़ा खुलवाना चाहा।

'ना मुझे कुछ सुनना है, ना समझना है। हां तुम इतना समझ लो अगर थोड़ी देर और रुके तो तुम्हारी खैर नहीं। ९११ को फ़ोन करते ही सीधे जेल जाओगे।'

निराश अमन ने वापस लौटने में ही भलाई समझी। इस तुनकमिजाज़ लड़की की उसकी भाभी ने कितनी तारीफ़ों के पुल बांध दिए थे। जिस दिन अमन को अमरीका की सॉफ़्टवेयर कम्पनी में जॉब की खबर मिली उसकी खुशी का ठिकाना न था। वैसे भी यह तो प्रत्याशित ही था। आईआईटी से कम्प्यूटर इंजीनियरिंग में उसे प्रथम स्थान मिला था। भारत में भी अच्छे जॉब्स की कमी नहीं थी, पर अमरीका में जॉब लेना उसका स्वप्न था। सात समुन्दर पार जाने की सुन कर माँ चिंतित हो उठीं। सुषमा भाभी ने माँ की चिंता दूर करने के लिए खुशी से बताया था-

'अरे अम्माजी, न्यूयॉर्क में तो मेरी कज़िन रितु रहती है। वह वहां एमबीए का कोर्स कर रही है। रितु बड़ी ही मिलनसार, हंसमुख और सबकी केयर लेने वाली लड़की है। परदेश में शुरू-शुरू में जो अकेलापन खलता है, उससे मिलने पर अमन को वह महसूस ही नही होगा।'

'वाह भाभी, आप तो अपनी रितु का ऐसे बखान कर रही हैं मानो अमन भैया की शादी के लिए उसका प्रोपोज़ल दे रही हैं।' छोटी बहिन नीतू ने चुटकी ली।

'अरे उसके लिए लड़कों की क्या कमी है। उसके गुणों, मीठी बोली और सुंदरता पर कोई भी मर मिटे।' भाभी ने नाराज़गी से कहा।

'क्या अमरीका में तुम्हारी बहिन अकेली रहती है? तुम्हारी मौसी तो बड़ी हिम्मत वाली हैं। जवान लड़की को अकेले अमरीका भेज दिया।' अम्मा ने आश्चर्य प्रकट किया।

'अब ज़माना बदल गया है, अम्मा जी। अब लड़कियां किसी से कम नहीं हैं। हमारी रितु पढ़ाई में बहुत तेज़ है। अमरीका में उसे स्कॉलरशिप भी मिली है।' कुछ गर्व से भाभी ने बताया।

ठीक है भाभी, तुम मुझे अपनी रितु का ऐड्रेस ज़रूर दे देना। देखना है हमारी भाभी की कही बातों में कितनी सच्चाई है। कुछ नहीं तो कभी-कभी रितु के यहां घर का बना खाना तो मिल ही जाएगा। अमन ने हंस कर कहा।

हां-हां, रितु बहुत अच्छा खाना बनाती है। वैसे भी मेहमाननवाज़ी में वह नम्बर वन है।

रितु के यहां से लौटता अमन अपने मन में सोच रहा था, यार अमन तू अपनी आदतों से बाज़ नहीं आने वाला। हंसमुख स्वभाव वाला अमन अपनी मज़ाकिया हरकतों के लिए मशहूर था। सबको अचानक चौंका देने में उसे बड़ा मज़ा आता था। आज भी उसी आदत की वजह से बिना अपना परिचय दिए रितु से कॉफ़ी की मांग कर बैठा। अमन के चेहरे पर मुस्कराहट आ गई। बाबा रे साढे दस बजे सोकर उठने वाली लड़की की भाभी ने क्या तारीफ़ें की थीं। जो लड़का इससे शादी करेगा उसका तो भगवान ही मालिक है। हां भाभी से वादा लेना होगा अपनी प्यारी रितु से अभी उसके बारे में कुछ ना कहें। परिचय के बाद देखना है अमन की कैसी खातिर करती है। वैसे अब उसे भी अपने अपार्टमेंट में कुछ कुकिंग का इंतज़ाम करना होगा। रोज़ होटल का खाना तो नहीं चलेगा।

कम्पनी की ओर से अमन को वेल फ़र्निश्ड अपार्टमेन्ट दिया गया था। अभी उसका जेटळैग खत्म नहीं हुआ था। पास की कॉफ़ी-शॉप से ब्रेकफ़ास्ट ले कर जैसे ही लौटा उसके साथ वाले अपार्टमेन्ट से बाहर आ रही एक अमरीकी युवती ने मुस्करा कर अमन से कहा-

'इफ़ आई एम नोट रौंग यू आर मिस्टर अमन कुमार?'

'जी हां आपने ठीक पहचाना। कल ही इंडिया से पहुंचा हूं। जेटळैग की वजह से दिन भर सोता रहा। आपका परिचय?'

'मैं, रोज़लीना, पर सब मुझे रोज़ी ही पुकारते हैं। आप भी मुझे रोज़ी ही कहें तो खुशी होगी। वैसे आप की ही कम्पनी में मैं फ़ाइनेन्स डिपार्टमेन्ट में हूं। अभी आप यहां के लिए नए हैं। अगर आप चाहें तो मंडे को आप मेरे साथ ही ऑफ़िस चल सकते हैं।'

'थैंक्स रोज़ी, पर आपको तकलीफ़ होगी, मैं टैक्सी से चला जाऊंगा।'

'इसमें तकलीफ़ कैसी? आपके साथ चलने से कार को कोई एक्स्ट्रा बोझ नहीं उठाना होगा। डोंट बी फ़ॉर्मल, अमन। वैसे कार के बिना अमरीका में इंसान बिना पैरों वाला हो जाता है। आई होप इंडिया में

आप ड्राइविंग तो ज़रूर करते होंगे?'

'जी हां, मैं अपने साथ इंटरनेशनल ड्राइविंग लाइसेंस भी लाया हूं। जल्दी ही कार ले लूंगा।'

'दैटस गुड आइए, एक कप चाय में मेरा साथ दीजिए।'

'थैंक्स रोज़ी, पर अभी कॉफ़ी और ब्रेकफ़ास्ट लिया है। फिर कभी ज़रूर साथ दूंगा।'

अपने रूम में आकर अमन ने सोचा, लोग बेकार ही विदेशियों से डरते हैं। यहां भी लोग स्नेह से मिलते हैं। रोज़ी की बातों में कोई बनावट नहीं है। वैसे जल्दी ही उसे अपनी कार खरीदनी होगी। घर से आते समय अम्मा ने उसके मना करने के बावजूद कुछ नमकीन और मीठा रख दिया था। सौभाग्यवश कस्टम वाले पता नहीं लगा सके। साथ लाई मिठाई और नमकीन खाकर अमन ने सोचा कल उसे ग्रॉसरी करनी होगी, यहां अम्मा या भाभी खाना पकाने नहीं आएंगी। अब उसे खुद ही कुछ बनाना सीखना होगा। सोच में डूबा अमन सो गया।

रोज़ी के साथ ऑफ़िस पहुंचा अमन कम्पनी की भव्य इमारत देख विस्मित रह गया। अमरीकी बॉस ने हाथ मिला कर स्वागत किया। अमन की क्वालीफ़िकेशन पर उसे पूरा भरोसा था।

'वेलकम, अमन। एक नई प्रोजेक्ट के लिए हम तुम्हारा वेट कर रहे थे। आई एम श्योर तुम इस प्रोजेक्ट को बहुत अच्छी तरह से हैंडल कर सकोगे।'

'मैं आपके विश्वास को पूरा करने की पूरी कोशिश करूंगा। मुझमें यकीन रखने के लिए थैंक्स।'

दो-तीन दिन अमन अपना काम समझने में व्यस्त रहा। एक-दो बार रितु की याद आई, पर उससे मिलने का मौका नहीं निकाल सका। वैसे भी वह उसे किसी और तरीके से परेशान करने की योजना सोच रहा था। भाभी से वादा ले लिया कि वह रितु को उसके बारे में कुछ ना बताए, वह उसे सरप्राइज़ देना चाहता है।

'देख अमन, मेरी बहिन को परेशान मत करना। तेरी आदत जानती हूं, इसीलिए कह रही हूं।'

'मुझ पर भरोसा रखो भाभी, तुम्हारी रितु को कतई परेशान नहीं करूंगा।'

चार दिन बाद रोज़ी ने अमन से कहा- यहां की इंडो-अमेरिकन कम्युनिटी नए साल की पूर्व संध्या कलचरल प्रोग्राम आयोजित कर रही है। वहां जाने पर यहां के जीवन के बारे में बहुत कुछ पता लग सकेगा। अगर तुम मेरे साथ चलोगे तो खुशी होगी। अमन ने खुशी से जाने के लिए सहमति दे दी। इंडिया में भी नए साल का स्वागत वह अपने दोस्तों के साथ जोर-शोर से करता था।

> यहां संकोच की ज़रूरत नहीं है, किसी भी लड़की को डांस के लिए इन्वाइट कर सकते हो। मेरे साथ यह हेनरी है वर्ना मैं ही तुम्हारी पार्टनर बन जाती, क्यों, हेनरी? रोज़ी ने मुस्करा कर परिहास किया।

नए साल के स्वागत के लिए एक बड़े से हॉल को खूब सजाया गया था। रंग-बिरंगे बल्बों की रोशनी से माहौल रंगीन हो उठा था। हॉल में चारों ओर सोफ़े और कुर्सियां सजी हुई थीं। अमरीकी और भारतीय सभी के चेहरों पर उल्लास था। बैंड की धुन ने समां बांध रखा था। कुछ जोड़े धुन पर नाच रहे थे। अमन और रोज़ी के प्रवेश करते ही एक अमरीकी युवक ने अंग्रेज़ी में रोज़ी का स्वागत करते हुए कहा-

'हाय रोज़ी डार्लिंग, इतनी देर से तुम्हारा वेट कर रहा था। इतनी देर क्यों की?'

'हेनरी, मीट माई कलीग, अमन कुर्मा। अभी इंडिया से आए हैं। अमन यह मेरा प्यारा दोस्त हेनरी। सॉरी, हेनरी आज ट्रैफ़िक ज़्यादा था।'

'आओ, तुम्हारे बिना डांस-फ़्लोर सूनी है।' रोज़ी पर प्यार भरी नज़र डाल हेनरी ने कहा।

'अमन, तुम भी कोई पार्टनर ढूंढ लो, वर्ना बोर हो जाओगे। यहां संकोच की ज़रूरत नहीं है, किसी भी लड़की को डांस के लिए इन्वाइट कर सकते हो। मेरे साथ यह हेनरी है वर्ना मैं ही तुम्हारी पार्टनर बन जाती, क्यों, हेनरी?' रोज़ी ने मुस्करा कर परिहास किया।

'नो प्रॉबलेम, तुम अभी भी सोच सकती हो।' हेनरी ने हंस कर कहा।

'थैंक्स, रोज़ी, मुझे डांस में कोई इंटरेस्ट नहीं है। तुम एन्ज्वॉय करो। मैं उस कोने में आराम से बैठ कर इस शाम को एन्ज्वॉय करूंगा। लौटने के लिए मैं टैक्सी कॉल कर लूंगा। मेरा इंतज़ार मत करना।'

'ओ के अमन, होप यू विल् एन्ज्वॉय दिस ईवनिंग।' हेनरी का हाथ पकड़े रोज़ी चली गई।

सॉफ़्ट ड्रिंक ले कर अमन हॉल के कोने में पड़े सोफ़े पर बैठ कर संगीत की धुन के साथ थिरकते कदमों को देख रहा था। अधिकांश लोग नए साल के स्वागत की खुशी में बेहिसाब ड्रिंक्स ले रहे थे, आज खुशी मनाने के लिए जैसे खुली छूट थी। तभी हॉल में प्रविष्ट हो रही एक जोड़ी ने अमन को चौंका दिया। एक अमरीकी युवक के साथ रितु प्रवेश कर रही थी। जिस तरह से युवक ने रितु की कमर में हाथ डाल रखा था उससे दोनों की अंतरंगता स्पष्ट थी। अच्छा इसीलिए रितु ने कहा था उसकी शादी के लिए किसी और उम्मीदवार के लिए जगह नहीं है। तो यह है हमारी भाभी की सर्वगुण संपन्न कज़िन। काश भाभी इनकी असलियत जान पातीं।

> यहां सब अपने में मस्त हैं, आपको यूं बैठे देख यही समझा जाएगा आपने ज़्यादा पी ली है। हां, आप तो किसी के साथ आई थीं, कहां हैं आपके साथी? कहीं किसी और लड़की का साथ तो ज़्यादा पसंद नहीं आ गया?

कुछ ही देर में रितु अपने साथी के साथ डांस-फ़्लोर पर थी। अमन यह देख कर हैरान था कि थोड़ी-थोड़ी देर बाद उसका साथी एक साथ दो-तीन पेग पानी की तरह ले रहा था। ऐसा लग रहा था कि रितु उसे रोकना चाहती थी, पर वह नहीं मान रहा था। इस बीच कुछ बुज़ुर्ग अमन के पास आ बैठे। औपचारिक बातचीत के बाद सब कार्यक्रम का आनंद लेने लगे। अचानक अमन ने देखा रितु का साथी पास पड़े सोफ़े पर निढाल सा गिर पड़ा। रितु ने उसे उठाने का असफल प्रयास किया, पर वह नहीं उठा। अमन के पास बने कॉफ़ी स्टॉल की ओर दौड़ती सी आ रही रितु अचानक ज़ोरों से गिर पड़ी। शायद इसकी वजह उसका बेहद ऊंची पेंसिल-हील का सैंडल था। एक हाथ से अपना पैर थामे दर्द से रितु कराह उठी। अमन अपनी जगह से तेज़ी से उठ कर रितु के पास जा पहुंचा।

'क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूं?'

'तुम यहां...?' नज़र उठाते ही रितु चीख-सी पड़ी।

'पहचानने के लिए थैंक्स। आखिर सुबह साढ़े दस बजे नींद तोड़ने वाले गुनहगार को क्या भुलाया जा सकता है?' इस वक्त भी अमन अपनी शरारत से बाज़ नहीं आया।

'मुझे चोट लगी है और तुम्हें मज़ाक सूझ रहा है। तुम जैसे इंसान से और उम्मीद भी क्या की जा सकती है?' दर्द के बावजूद तेज़ आवाज़ में रितु ने कहा।

'मदद की उम्मीद तो ज़रूर की जा सकती है। ज़रा अपना पांव देखने दीजिए।'

'ख़बरदार जो मेरे पांव को टच भी किया।'

'मुझे आपका पांव छूने का कोई शौक नहीं है। यहां सब अपने में मस्त हैं, आपको यूं बैठे देख यही समझा जाएगा आपने ज़्यादा पी ली है। हां, आप तो किसी के साथ आई थीं, कहां हैं आपके साथी? कहीं किसी और लड़की का साथ तो ज़्यादा पसंद नहीं आ गया?' अमन ने छेड़ा।

'अपनी बकवास बंद करो। अगर कुछ मदद नहीं कर सकते तो गो टु हेल।'

'वाह क्या बात है, लगता है आप हरी मिर्च ज़्यादा खाती हैं। क्या तीखी ज़बान पाई है। चलिए देखता हूं क्या किया जा सकता है। ज़रा खड़ी होने की कोशिश कीजिए।'

खड़ी होने के प्रयास में दर्द से रितु चीख-सी पड़ी और फिर धम से बैठ गई।

'ओह लगता है मोच आ गई है। अभी ठीक करता हूं।' गले से मफ़लर उतारते अमन को देख कर विस्मित रितु ने पूछा- 'यह क्या कर रहे हो?'

'क्या करूं आप सलवार सूट में तो हैं नहीं, वर्ना आपकी चुन्नी काम आती। अब मेरा मफ़लर ही सही। कभी-कभी लगता है, भारतीय परिधान केवल सुंदर ही नहीं बड़े काम के होते हैं।' बात करते हुए अमन ने अपना मफ़लर रितु के पैर के चारों ओर कस कर लपेटना शुरू कर दिया।

'इससे क्या होगा?' रितु समझ नहीं पा रही थी।

'यहां क्रेप बैंडेज तो मिलेगी नहीं, इसे बांधने से शायद थोड़ी तकलीफ़ के साथ चल तो पाएंगी। मेरा सहारा लेने में अगर दर्द ज़्यादा ना बढ़ जाए तो सहारा लेने में ही समझदारी है। हां अब डांस तो कर नहीं पाएंगी, क्या अपने साथी के होश में आने का इंतज़ार करेंगी?'

'नो वे। अब ९११ को कॉल करना होगा। हे भगवान, मेरा मोबाइल तो जॉन की कार में छूट गया।' परेशान रितु ने कहा।

'कमाल कर रही हैं। मुझे तो बताया गया था, यहां मोबाइल फ़ोन एक हथियार का काम देता है, और आप अपना मोबाइल उस पियक्कड़ की कार में छोड़ आईं।'

'माइंड योर लैंग्वेज मिस्टर, अपने बेस्ट फ्रेंड के लिए ऐसी भाषा मैं नहीं सह सकती। आज खुशी में अगर दो-चर पेग ले लिए तो तो क्या गुनाह हो गया।'

'तो बुलाइए ना अपने प्यारे दोस्त को आपको उठा कर ले जाए।' अमन का व्यंग्य स्पष्ट था।

'मैं चाहें जो करूं, तुम्हारी मदद नहीं चाहिए।' रितु की बड़ी-बड़ी आँखों में आँसू आ गए।

'आई एम सॉरी। मेरा मतलब आपका दिल दुखाना नहीं था।' अमन द्रवित हो उठा।

'अगर मदद कर सकते हैं तो अपना फ़ोन दे दीजिए, किसी को कॉल कर लूंगी।'

'आज सब अपने-अपने तरीके से मस्त होंगे क्यों उनकी खुशी में बाधा डालेंगी।'

'फिर मैं क्या करूं?' दो भोले नयन अमन के चेहरे पर निबद्ध थे।

'इस परेशानी में आप एक और बात भूल रही हैं कि आपका अपार्टमेन्ट तीसरी मंज़िल पर है। अगर ऐतराज़ ना हो तो उतनी सीढ़ियां चढ़ने के लिए मैं आपका साथ दे सकता हूं। यकीन कीजिए मैं एक सच्चा हिंदुस्तानी हूं। किसी को तकलीफ़ में मदद करने में मुझे खुशी होगी।'

'तुम क्या सचमुच मेरी मदद करना चाहते हो? उस स्थिति में यहां का प्रोग्राम मिस क्यों करना चाहते हो? आखिर यहां नया साल के स्वागत के लिए आए थे।' कुछ अविश्वास से रितु ने अमन की ओर देखा।

'मुझे ऐसे कार्यक्रमों मे ज़्यादा रुचि नहीं है। वैसे भी ना तो आपकी तरह से मुझे अच्छा डांस करना आता है, ना ही यहां कोई मेरा पार्टनर है। बताया था न कि मैं यहां अभी नया आया हूं।'

'ठीक है, आज एक भारतीय पर विश्वास करके देखती हूं।' निरुपाय रितु ने हार मान ली।

'ओके। मैं टैक्सी कॉल करता हूं, तब तक एक कप कॉफ़ी लेने से अच्छा महसूस करेंगी।'

बात खत्म करते हुए अमन ने टैक्सी बुलाने को फ़ोन कर दिया।

रितु को सहारा देकर सोफ़े पर बैठाने के प्रयास में दर्द से रितु कराह उठी। दो मग कॉफ़ी के साथ अमन रितु के पास वाली चेयर पर बैठ गया।

'थैंक्स। नए साल की शुरुआत ही ऐसी हुई है, पता नहीं साल कैसा बीतेगा।' रितु उदास थी।

'नए साल में अपने सबसे अच्छे दोस्त की जगह एक अजनबी का साथ अप्रिय तो ज़रूर होगा, पर मेरी माँ कहती हैं भगवान जो करता है अच्छे के लिए ही करता है।'

'मुझे चोट लगी, मैं नए साल की पूर्व संध्या का आनंद नहीं उठा पाई, भला इसमें कौन सी अच्छाई है?' रितु ने कुछ नाराज़गी से कहा।

'यह तो वक्त ही बताएगा मिज़, पर मैं इस बात पर ज़रूर यकीन करता हूं। वैसे क्या आपका नाम जान सकता हूं?'

'रितु...'

तभी टैक्सी ड्राइवर ने फ़ोन से पहुंचने की सूचना दी थी। अमन का सहारा लेना रितु की मज़बूरी थी। टैक्सी वाले को रितु के घर का पता देते अमन ने रितु से पूछा-

'आपके पास कोई पेन-किलर और मोच पर लगाने के लिए कोई ओयाइंटमेंट तो होगा?'

> ये पेन-किलर खा लीजिएगा और इस ट्यूब का लेप कर लीजिएगा। अगर सुबह तक आपके दोस्त को होश आ जाए और आपकी याद आ जाए तो उनके साथ हॉस्पिटल में चेक-अप करा लीजिएगा।

'शायद नहीं, कभी ज़रूरत ही नहीं पड़ी, पर सुबह किसी से मंगा लूंगी।'

'ड्राइवर, रास्ते में किसी स्टोर से मेडिसिन लेनी हैं। आप कुछ देर को रुक सकते हैं?' अमन ने टैक्सी-ड्राइवर को निर्देश दिए।

टार्गेट स्टोर से पेन किलर और एक ट्यूब ले कर अमन आ गया। किसी तरह से अमन के सहारे सीढ़ियां चढ़ कर रितु ने पर्स से चाभी निकाल कर दरवाज़ा खोला था। अंदर पहुंच चेयर पर बैठ रितु ने अमन से कहा-

'बहुत धन्यवाद, आपकी आज की शाम मेरी वजह से बर्बाद हो गई। बहुत देर हो गई है अब आप जाइए और देर ना करें। मैं मैनेज कर लूंगी।'

'माफ़ करें, मैं ऐसी औपचारिकताओं में विश्वास नहीं करता। आपका किचेन उधर है न?'

रितु के उत्तर के पहले अमन किचेन में जा चुका था। थोड़ी देर में हल्दी वाले गर्म दूध का ग्लास लिए अमन ने आकर कहा-

'ये लीजिए गर्म हल्दी वाला दूध पीने से तकलीफ़ जल्दी ठीक हो जाती है। मेरी माँ का यह अक्सीर नुस्खा है।' हल्की मुस्कान के साथ अमन ने ग्लास रितु की ओर बढ़ाया।

'नहीं-नहीं, मैं यह नहीं पियूंगी। आपकी इतनी मेहरबानी काफ़ी है, अब प्लीज़ डॉक्टर बनने की कोशिश मत कीजिए।' रितु संशय की दृष्टि से दूध को देख रही थी।

'ओह, शायद आपको डर है, इसमें बेहोशी की दवा मिलाई है। वैसे ऐसी कोई चीज़ पॉकेट में रखना मेरा शौक नहीं है। आपने ठीक कहा इतनी मेहरबानी काफ़ी है। हां, ये पेन-किलर खा लीजिएगा और इस ट्यूब का लेप कर लीजिएगा। अगर सुबह तक आपके दोस्त को होश आ जाए और आपकी याद आ जाए तो उनके साथ हॉस्पिटल में चेक-अप करा लीजिएगा। ओके बाय।' निश्चय ही अमन रितु का संशय भांप गया था और अनायास ही उसकी आवाज़ में कुछ तेज़ी आ गई थी। अमन के बाहर जाने के उपक्रम पर रितु बोली-

'थैंक्स फ़ॉर योर कसर्न, मेरा मतलब ऐसा कुछ नहीं था। हां ये लीजिए, आपने टैक्सी के लिए पे किया, मेडिसिन्स लाए। शायद इतना तो आपने खर्च किया ही होगा।' पर्स से डालर्स निकाल कर रितु ने अमन की ओर बढ़ाए थे।

'सुना था अमरीका के लोग भौतिकवादी होते हैं, आज एक भारतीय लड़की को अमरीकी रंग में रंगा भी देख लिया। किसी की मदद को पैसों में तोलने के लिए शुक्रिया। दुख है कि मुझ पर अभी अमरीकी रंग नहीं चढ़ा है। अच्छा हो ये पैसे किसी ज़रूरतमंद को दान में दे दीजिएगा।' बात खत्म करता

अमन तेज़ी से दरवाज़ा खोल रितु को विस्मित छोड़ गया।

वापस लौटते अमन के मन में आक्रोश था। क्या ज़रूरत थी ऐसी लड़की की मदद करने की, कम से कम झूठ के लिए ही अपने पहले दिन वाले व्यवहार के लिए सॉरी बोल देती। इतनी भी कर्टिसी नहीं थी कि मेरा परिचय ही पूछ लेती। पैसे दे कर एहसान चुकाना चाह रही थी। अचानक अमन अपने सोच पर चौंक गया। उसे याद आया उसके पापा कहते थे नेकी कर दरिया में डाल फिर आज वह क्यों अपनी मदद के बदले में कुछ चाह रहा था। अपने सोच को झटक अमन ने आज की घटना भुलाने की कोशिश की। रात में चाह कर भी रितु की आँसू भरी आँखें नहीं भुला पाया। कितनी निरीह लग रही थी, पर कलचरल प्रोग्राम में उसे सोच-समझ कर किसी ठीक इंसान के साथ आना चाहिए था। ऊंह, क्यों वह बेकार की बातों में उलझ रहा है। अंततः नींद ने उसे अपने आगोश में ले लिया।

अमन ने सोचा, बॉस को इम्प्रेस करने के लिए नए साल में काम जल्दी पूरा करना होगा। अमन जी जान से काम में जुट गया। वीकेंड आते-आते अमन पूरी तरह से थक चुका था। शनिवार को पूरी तरह आराम करने की सोच कर नींद टूटने पर भी अमन आराम कर रहा था। फ़ोन की घंटी ने उसे चैतन्य कर दिया। दूसरी ओर से एक लड़की की आवाज़ थी-

'कैन आई टाक टु मिस्टर ए कुमार?'

'ए कुमार नाम से आप किसके साथ बात करना चाहती हैं? पूरा नाम बताइए, सिर्फ़ ए कुमार से तो बहुत से नाम हो सकते हैं।' अमन का शरारती स्वभाव फिर मज़ाक कर बैठा।

'मैं जानती हूं, मैं आपसे यानी अमन कुमार से बात कर रही हूं। आपके अपार्टमेन्ट के नीचे खड़ी हूं। आप भारतीय हैं, इसलिए उम्मीद है, बिना अप्वाइंटमेंट लिए आने के लिए माइंड तो नहीं करेंगे। मैं ऊपर आ रही हूं।'

'ओह गॉड! ये कहां की आफ़त आ गई।' अमन ने जल्दी-जल्दी जीन्स पर टी शर्ट पहन ली।

दरवाज़े पर प्याज़ी सलवार सूट में रितु खड़ी थी। आँखों से काला चश्मा उतार, मुस्करा कर अमन को देखा। उसकी मोहक मुस्कान और आकर्षक रूप किसी का भी मन जीत सकता था।

'हलो, अमन जी, पहचाना?'

'आपको भूलने की ज़ुर्रत कैसे कर सकता हूं, पर मेरा ऐड्रेस कहां से मिला?'

'वैसे ही जैसे आपको मेरा पता मिल गया था।'

'मैं समझा नहीं, आपने तो कभी मेरा नाम-पता जानने की ज़रूरत नहीं समझी।' अमन को वो रात याद हो आई जब वह रितु को घर पहुंचाने गया था।

'नाम-पता उसका जानने की ज़रूरत होती है जो अपरिचित हो।'

'मैं तो आपके लिए अपरिचित ही था। यदि नहीं तो क्या आपका वैसा अजनबी जैसा व्यवहार होता। काफ़ी की बात तो छोड़िए, मेरे फूल तक स्वीकार नहीं किए थे। सिक्योरिटी बुलाने की धमकी भूल गईं।'

'आपने जैसे एंट्री की थी, उसके लिए वह धमकी ठीक ही थी। हां वो गुलाब बहुत सुंदर थे।'

'यानी कि मेरे गुलाब मंज़ूर किए और मुझे बिना कॉफ़ी के लौटा दिया। कमाल की मेहमाननवाज़ हैं। जानती हैं कितनी दूर से बड़ी उम्मीद के साथ गया था।'

'वाह जनाब, एक ओर भारतीयता का दंभ भरते हैं और दूसरी ओर बिना अपना परिचय दिए किसी अनजान लड़की के घर कॉफ़ी की फ़र्माइश ले कर पहुंच जाते हैं।'

'पर आप मेरे लिए अनजान कहां थीं? आपने तो मेरा परिचय सुने बिना दरवाज़ा बंद कर लिया। प्लीज़ बताइए आप यहां कैसे और क्यों आई हैं? कहीं अपने उस दोस्त से कोई प्रॉबलेम तो नहीं हो गई, वैसे वह कब होश में आया?'

'आप उसे ग़लत समझ रहे हैं। जॉन अच्छा दोस्त है। जब मैं अमरीका आई थी, उसने मेरी बहुत मदद की थी। उस दिन उसकी गर्ल-फ्रेंड नहीं आई थी इसलिए वह अपसेट था।'

'क्यों क्या आपका साथ काफ़ी नहीं था। जिस अंदाज़ में आप उसके साथ आई थीं कोई भी आपको उसकी गर्ल-फ्रेंड समझ लेता।' अमन की आवाज़ में व्यंग्य था।

'कुछ दिन और यहां रहेंगे तो समझ लेंगे गर्ल-फ्रेंड और दोस्त में क्या फ़र्क होता है। सुषमा दीदी ने जैसा बताया था आप उतने बड़े दिल के तो कतई नहीं लगते।' रितु मुस्कुरा रही थी।

'सुषमा दीदी यानी मेरी भाभी, उन्होंने मेरे बारे में कब बताया? इसका मतलब भाभी ने अपना वादा तोड़ दिया। आज ही उनसे बात करनी होगी।'

'इसमें सुषमा दीदी की ग़लती नहीं है। आपके जाने के बाद माँ को फ़ोन किया था, उन्होंने बताया सुषमा का देवर अमन न्यूयार्क में जॉब कर रहा है। तुमसे मिलने आ सकता है। उसके बाद सुषमा दीदी से पूरी बात पता लगी थी। उन्होंने बताया था, ऐसे मज़ाक करना आपका शौक है। आप क्या

आपने तो मेरा परिचय सुने बिना दरवाज़ा बंद कर लिया। प्लीज़ बताइए आप यहां कैसे और क्यों आई हैं? कहीं अपने उस दोस्त से कोई प्रॉबलेम तो नहीं हो गई, वैसे वह कब होश में आया?

एक नारी के होते हुए पुरुष किचेन में जाए यह सरासर अन्याय है। आज आपके हाथों का कमाल देख लूं। भाभी आपकी पाक-कला की बड़ी तारीफ़ें करती हैं, आज परीक्षा हो जाए।

समझते हैं, अगर हम आपको नहीं जानते होते तो उस रात क्या किसी अनजान युवक के साथ टैक्सी में जा सकते थे?'

'वाह अभी तक मैं अपने ऐक्टिंग की दाद देता था आप तो मेरी भी गुरु निकलीं। ज़रा सा भी आभास नहीं होने दिया कि मुझे जानती हैं।'

'अच्छा अब फ़ॉर्मैलिटी छोड़िए, बिना ब्रेकफ़ास्ट लिए आई हूं। जल्दी से कुछ बना दीजिए।'

'देखिए मोहतरमा, यह दादागिरी नहीं चलेगी। एक नारी के होते हुए पुरुष किचेन में जाए यह सरासर अन्याय है। आज आपके हाथों का कमाल देख लूं। भाभी आपकी पाक-कला की बड़ी तारीफ़ें करती हैं, आज परीक्षा हो जाए।'

'आपको परीक्षा देने का क्या फ़ायदा? हां जिस दिन मेरी मैरिज के लिए कोई सूटेबल उम्मीदवार आएगा, उसे अपने हाथों का कमाल दिखाऊंगी।' निःसंकोच रितु ने स्पष्ट कर दिया।

'यानी कि मेरा कोई चांस नहीं है। यार अमन तू कोई उम्मीद मत रख।' अमन हंस रहा था।

'अच्छा चलिए, कुछ बनाना ट्राई करते हैं, पर आपको मदद करनी होगी। बताइए आपके पास क्या सामान है?'

'बंदे का काम तो ब्रेड और अंडे से चल जाता है। मुझे क्या पता था कोई बिन बुलाए मेहमान आ रहा है। कहो तो बाहर चलते हैं।'

'ब्रेड और अंडे से तो कई चीज़ें बनाई जा सकती हैं। बताइए, क्या खाना पसंद करेंगे जैसे फ्रेंच टोस्ट, ब्रेड का हलवा, उपमा, शाही टोस्ट और...'

'बस-बस। अब जो चीज़ आपको सबसे ज़्यादा पसंद हो वही चलेगी। आखिर मेहमान ठहरीं।'

'तब तो बस ब्रेड और बटर चलेगा, कहिए है मंज़ूर?'

'कमाल है इतने नाम गिनवा कर ब्रेड और बटर ही मिलेगा। इतना तो मैं भी कर सकता हूं।'

'मायूस ना हों मिस्टर अमन कुमार, हम आपके लिए ब्रेकफ़ास्ट ले कर आए हैं। सुषमा दीदी ने बताया था आपको मटर की कचौड़ी और गाजर का हलवा पसंद है। हम वही लाए हैं।'

'वाह ये हुई ना बात। थैंक्स भाभी, आपने आज का दिन सार्थक कर दिया।'

'ये अच्छी कही, सुबह जल्दी उठ कर दो घंटे में ये सब हम बना कर लाए हैं और थैंक्स भाभी को दिया जा रहा है।' रितु ने नाराज़गी से कहा।

'ओह, ग़लती हो गई। मेरे लिए इतनी तकलीफ़ करने के लिए बहुत शुक्रिया, मिस रितु जी। चलिए कॉफ़ी मैं बनाता हूं।'

सचमुच रितु की तारीफ़ ग़लत नहीं थी। अपना मनपसंद हलवा और कचौड़ी खा कर अमन कुछ देर के लिए भूल गया वह अपने घर में नहीं, परदेश में था।

'थैंक्स रितु जी, पर मुझे डर है आप मेरी आदत न बिगाड़ दें। अब अक्सर आपको तकलीफ़ दूंगा।' अमन ने परिहास किया।

'इस धोखे में मत रहिएगा, जनाब। असल में आज आपको एक तरह से रिश्वत दी है?'

'रिश्वत, मतलब, मैं समझा नहीं।' अमन विस्मित था।

'जी हां हमारे कॉलेज में एक चैरिटी शो किया जा रहा है। हमें तीस टिकट बेचने हैं। अब हम इतने टिकट कैसे बेच पाएंगे तो आपकी याद आई। ये पंद्रह टिकट आपको बेचने हैं।'

'भला मैं इतने टिकट कैसे बेच सकता हूं। अभी तो यहां आए हुए ही पंद्रह दिन हुए हैं।'

'अपने को अंडरेस्टिमेट कर रहे हैं। अरे इतनी बड़ी कम्पनी में काम करते हैं तो क्या पंद्रह लोगों को भी टिकट नहीं बेच सकते। अब ये तो आपकी ज़िम्मेदारी है।'

'ठीक है अगर ये मेरी ही ज़िम्मेदारी है तो ये सारे टिकट मैं ही खरीद लेता हूं। समझ लूंगा आज किसी फ़ाइव स्टार होटल में ब्रेकफ़ास्ट लिया है।'

'ये हुई ना बात। वैसे मेरा बनाया ब्रेकफ़ास्ट किसी फ़ाइव स्टार होटल से ज़्यादा अच्छा था न?'

'मानना ही पड़ेगा। हां इस शो में आप भी कुछ काम कर रही हैं?'

'मेरे बिना क्या कोई शो हो सकता है। एक बात अब हम लोग दोस्त हैं तो एक दूसरे को आप ना कह कर तुम कहें तो चलेगा?'

'आपकी... मेरा मतलब तुम्हारी आज्ञा सिर-आंखों।' अमन के चेहरे पर हंसी खिल आई।

'तो मेरी आज्ञा है, आज अच्छा मौसम है, चलो स्टैच्यू ऑफ़ लिबर्टी चलते हैं। लंच बाहर ही लेंगे। जल्दी से तैयार हो जाओ।' रितु ने आदेश दे डाला।

'ओह ग़ॉड, तुम तो पूरी डिक्टेटर हो, तुम्हारा पति

बेचारा न जाने क्या करेगा। मुझे तो सोच कर ही उस पर तरस आ रहा है।' अमन ने मज़ाक किया।

'डोंट वरी, यह हमारा पर्सनल मामला है, हम पर छोड़ दो। हमारे बारे में तुम जानते ही कितना हो। हम नीचे कार में वेट कर रहे हैं। इंतज़ार करना हमे पसंद नहीं है।' अमन को कुछ कहने का मौका दिए बिना रितु चली गई।

पूरे दिन रितु अमन को दर्शनीय स्थान दिखाती रही। उसकी बातों पर विराम लगा पाना अमन के लिए असंभव था। वैसे यह सच था उसकी मज़ेदार बातों में अमन को आनंद आ रहा था।

'आज का दिन मेरे लिए वेस्ट करने के लिए थैंक्स।' अमन ने औपचारिकता निभाई।

'दिन वेस्ट करने की वजह याद रखना। मेरे टिकट जो बेचने हैं। कल हमारा रिहर्सल है वर्ना लंच या डिनर पर आ सकते थे। ओके बाय।' तेज़ी से एक्सेलेटर दबा कर रितु ने कार चला दी।

अमन ने भाभी को फ़ोन लगाया था-

'भाभी, तुम्हारी कज़िन तो गज़ब की लड़की है। वह बिंदास लड़की तो अच्छे-अच्छों को बना ले।'

'आखिर बहिन किसकी है, पर जनाब आप भी तो बुद्धू बन गए? रितु बेहद शरारती पर दिल की बहुत अच्छी लड़की है। तुम्हें जानते हुए भी अनजान बनी रही। मानते हो न वह अच्छी ऐक्ट्रेस है? वैसे चोट लगने पर हल्दी वाला दूध हमें तो कभी औफ़र नहीं किया।' सुषमा हंस रही थी।

'अब भाभी तुम हमें बनाने लगीं। वो तो मेरे संस्कार थे, तकलीफ़ में मदद करनी ही थी।'

'बात सिर्फ़ मदद की है या और कुछ बात है। कहीं उसको इम्प्रेस तो नहीं कर रहे थे?'

'तुम्हारी तेज़-तर्रार बहिन से भगवान बचाए पति पर एकछत्र शासन करेगी। दया का पात्र होगा बेचारा। पहली बार मिलते ही मेरे सिर टिकट बेचने की ज़िम्मेदारी थोप गई है।'

'गनीमत है, उसकी दी गई कोई ज़िम्मेदारी तो उठा रहे हो। सम्हल के रहना कहीं उसकी पूरी ज़िम्मेदारी ही ना उठानी पड़ जाए।' सुषमा ने छेड़ा।

'अब तुम भी मज़ाक कर रही हो। पूरे दिन उसने थका मारा। अब आराम करने जा रहा हूं।'

बिस्तर पर लेटते अमन को हंसी आ गई। अपने को बेहद स्मार्ट समझने वाले अमन को कितने आराम से बुद्धू बनाया है। सच तो यह है अगर वह सेर तो रितु सवा सेर निकली। अजीब लड़की है। हां, उसकी बातों से यह तो साफ़ ज़ाहिर था कि वह इंटलिजेंट और मस्त लड़की है। उसकी कम्पनी में कोई बोर नहीं हो सकता, पर उससे शादी के लिए हिम्मत चाहिए। कल ऑफ़िस में टिकट बेचने के लिए रोज़ी की मदद लेनी

> अमरीकी लड़कियां इंडियन लड़कों से शादी करना चाहती हैं क्योंकि वह जानती हैं, वह उनके साथ जीवन भर रहेगा। यहां तो रोज़ तलाक होते हैं। अगर तुम किसी अमरीकी लड़की से शादी कर लो तो सोचो तुम्हारी मम्मी को कितना बड़ा शॉक लगेगा।

होगी। अगले सैटरडे को रितु के कॉलेज का चैरिटी शो है। रोज़ी को भी ले जाएगा। कल रोज़ी के साथ कार खरीदने भी जाना है। इस बीच रितु फ़ोन से अमन को टिकट बेचने की बात बार-बार याद दिलाती रही।

'याद रखना, तुम्हें सारे टिकट बेचने हैं वर्ना फिर कभी कोई उम्मीद मत रखना।'

'ठीक है बाबा, अगर टिकट नहीं बेच सका तो सब पैसे मैं भर दूंगा। अब चैन से सोने तो दो।'

चैरिटी शो के लिए अमन रोज़ी को साथ ले गया था। रोज़ी की मदद से सारे टिकट आसानी से बिक गए थे। कार्यक्रम की थीम रोमांस थी। पुरानी कहानियों में रितु की टीम ने रोमियो जूलिएट को चुना था। जूलिएट बनी रितु की सुंदरता में उसके गुलाबी परिधान ने चार चांद लगा दिए थे। अमन विस्मय- विमुग्ध उसे देखता रह गया। उसके स्वाभाविक ऐक्टिंग के लिए तालियों की गड़गड़ाहट देर तक गूंजती रही।

कार्यक्रम के बाद गेस्ट के लिए डिनर का आयोजन था। मुस्कुराती रितु जब अमन को लेने आई तो अमन उसे बधाई देना ही भूल गया।

'तुम्हारी गर्ल-फ्रेंड कहां है, अमन?' रोज़ी को न देख रितु ने पूछा।

'रोज़ी मेरी गर्ल-फ्रेंड नहीं है। वह अपने ब्वॉय फ्रेंड के साथ डिनर के लिए गई है।'

'चलो अच्छा है, तुम बच गए। अमरीकी लड़कियां इंडियन लड़कों से शादी करना चाहती हैं क्योंकि वह जानती हैं, वह उनके साथ जीवन भर रहेगा। यहां तो रोज़ तलाक होते हैं। अगर तुम किसी अमरीकी लड़की से शादी कर लो तो सोचो तुम्हारी मम्मी को कितना बड़ा शॉक लगेगा।

'थैंक्स फ़ॉर योर एडवाइस। फ़िलहाल अभी मैरिज का मेरा कोई इरादा नहीं है।'

डिनर खाते हुए रितु नाटक के दौरान हुए मज़ेदार किस्से सुनाती रही। कैसे नाटक मे रोमियो बना युवक उसका

दीवाना हो गया था। उसे प्रोपोज़ तक कर दिया।

'और कितनों ने तुम्हें प्रोपोज़ किया है?' अमन ने मज़ाक में पूछा।

'अरे पहले एक-दो ने प्रोपोज़ किया, पर अब एक डॉक्टर साहब तो जान देने पर तुले हैं।'

'यहां डॉक्टर तो पैसा भी खूब कमाते हैं और उनकी इज़्ज़त भी होती है। तुम्हें क्या एतराज़ है?'

'सर्जन है वह, चीरफाड़ करने वाले के पास दिल भी पत्थर का होगा। मुझे पसंद नहीं।'

देर रात को घर लौटता अमन सोच रहा था, यह सच है रितु के साथ वक्त पंख लगा कर उड़ जाता है, पर पता नहीं, पत्नी के रूप में उसमें गंभीरता और ठहराव भी है या नहीं। फिर भी यह सच है कि न जाने क्यों उसका साथ अच्छा लगता है। बार-बार मिलने का जी चाहता है।

उस दिन के बाद रितु और अमन की अक्सर मुलाकातें होती रहीं। वीकेंड में कभी रितु खुद खाना बना कर खिलाती कभी दोनों बाहर चले जाते। रितु की मज़ेदार बातें, अमन को खूब हंसातीं। अमन अपने कॉलेज के किस्से सुनता तो रितु उसकी गर्ल फ्रेंड के बारे में तहकीकात करती। एक-दूसरे के साथ दोनों बहुत सहज महसूस करते, पर उसमें उन्हें प्यार जैसी कोई बात नहीं लगती। रितु के फ़ाइनल एक्ज़ाम्स शुरू हो गए। उसके बिना अमन खाली ज़रूर महसूस करता, पर यह तो स्वाभाविक बात थी। कभी अमन का जी चाहता रितु से फ़ोन पर बात करे, पर उसे डिस्टर्ब करना ठीक नहीं था। अमन को ताज्जुब था वह क्यों रितु के एक्ज़ाम्स खत्म होने के दिन गिन रहा था। शायद उसे रितु की आदत हो गई थी।

रितु अपना आखिरी पेपर दे कर लौटी थी कि रोज़ी का फ़ोन मिला-

'रितु, तुम सिटी मेडिकल हॉस्पिटल पहुंच सकती हो? अमन एडमिट है, तेज़ बुखार के साथ डेलीरियम में तुम्हारा नाम ले रहा था। यहां उसका कोई और रिलेटिव भी नहीं है।'

तेज़ गति से कार दौड़ाती रितु हॉस्पिटल पहुंची थी। मन चिंताकुल था। बेहोशी में उसे बस उसका नाम याद रहा। न जाने कैसा होगा अमन। हॉस्पिटल- बेड पर शान्त-क्लान्त अमन को देख रितु का मन भर आया। हमेशा का हंसमुख-वाचाल अमन कितना निरीह लग रहा था। नर्स ने टेम्परेचर देख कर कहा :

'ओह ग़ॉड, डॉक्टर को इन्फ़ॉर्म करना होगा।'

'क्या हुआ नर्स, अमन ठीक तो है?'

'इतना हाई फ़ीवर ब्रेन डैमेज कर सकता है।' बात खत्म करती नर्स तेज़ी से चली गई।

रितु स्तब्ध अमन को ताकती रह गई, भगवान न करे कुछ ऐसा वैसा हो। उसका मन रोने-रोने का हो रहा था। उस अनजान देश में अमन सिर्फ़ रितु को ही तो जानता है। कैसा ये रिश्ता है, उसने अपनी माँ-भाई को याद न करके सिर्फ़ रितु को याद किया। क्यों?

डॉक्टर ने नर्स को आइस-व्टर से स्पंज करने को कह कर एक इंजेक्शन देने के निर्देश दे दिए। नर्स ने रितु को बाहर जाने को कह कर स्पंज की तैयारी शुरू कर दी।

बाहर बैठी रितु को एक-एक पल भारी पड़ रहा था। भगवान से अमन की सलामती की प्रार्थना करती वह भूल गई सुबह एक्ज़ाम की हड़बड़ी में उसने बस चाय भर पी थी। शाम को रोज़ी को देख वह अपना संयम खो रो पड़ी।

'ये क्या, इतना डरने से काम कैसे चलेगा। अमन जल्दी ही ठीक हो जाएगा। किसी वजह से तेज़ बुखार हो गया है। यहां के डॉक्टर कितने एक्सपर्ट होते हैं, जानती हो न? आसानी से डॉयगनोस कर लेंगे। बताओ तुमने कुछ खाया है या नहीं?' प्यार से रोज़ी ने समझाया।

रितु का सूखा चेहरा सच्चाई बयान कर गया। रितु को जबरन कैफ़ेटेरिया ले जा कर रोज़ी ने कॉफ़ी और बिस्किट खिलाए थे। रोज़ी के बहुत समझाने पर भी रितु घर लौटने को राज़ी नहीं हुई। पता नहीं अमन को कब किस चीज़ की ज़रूरत पड़ जाए। अमन के कमरे के बाहर चेयर पर बैठी रितु डॉक्टर को देखते ही खड़ी हो गई।

'डॉक्टर, अब अमन कैसे हैं?'

'ही इज़ डूइंग फ़ाइन। अब फ़ीवर कन्ट्रोल में है। सवेरे तक वह अच्छा महसूस करेगा।'

'थैंक्यू डॉक्टर, क्या मैं अमन के कमरे में बैठ सकती हूं। प्लीज़ डॉक्टर?'

'वैसे तो पेशेंट के रूम में किसी को रहने कि इजाज़त नहीं होती, पर आप अगर उसे डिस्टर्ब ना करें तो बैठने की परमीशन दे सकता हूं। पूरी रात बैठ सकेंगी?'

"रितु स्तब्ध अमन को ताकती रह गई, भगवान न करे कुछ ऐसा वैसा हो। उसका मन रोने-रोने का हो रहा था। उस अनजान देश में अमन सिर्फ़ रितु को ही तो जानता है।"

'यस, डॉक्टर। एक्ज़ाम्स के दिनों में पूरी-पूरी रात जागने की आदत है।'

हॉस्पिटल के कमरे के धीमे प्रकाश में अमन का चेहरा कितना पीला दिख रहा था। जी चाहा उसका माथा सहला कर पूछ ले अब उसे कैसा महसूस हो रहा है। जिस रितु को उसने याद किया, वह उसके पास बैठी है। डॉक्टर ने उसे डिस्टर्ब न करने को कहा है। न जाने कब रितु की आँख लग गई थी। भोर की उजास कमरे में सुनहला प्रकाश भर रही थी। रितु के चेहरे पर जैसे सूर्य की आभा प्रतिबिम्बित थी। आँखें खोले अमन उस चेहरे को मुग्ध निहार रहा था। अचानक नर्स के आने से रितु की नींद टूट गई। टेम्प्रेचर ले कर नर्स ने मुस्करा कर कहा-

'लीजिए मिस, आपके आने से आपका मरीज़ ठीक हो गया। मिस्टर अमन, ये आपके लिए इतनी परेशान थी इसलिए इसे यहां रहने दिया गया। वैसे आप भी बेहोशी में यही कह रहे थे मुझे छोड़ कर मत जाना, रितु। लगता है ये आपकी गर्ल फ्रेंड हैं, कहीं कोई झगड़ा तो नहीं हुआ है?'

'तुम क्या सच में मेरे लिए परेशान थीं, रितु? अगर मुझे कुछ हो जाता तो?'

अमन के मुंह पर अपनी हथेली रख कर, रितु ने अमन को वाक्य पूरा नहीं करने दिया।

'अगर ऐसी बात करोगे तो मैं अभी चली जाऊंगी।' रितु ने रोष दिखाया।

'जानती हो, होश रहते बस जो चेहरा याद आया, वह किसका था?'

'मैं कोई अंतर्यामी तो हूं नहीं, वैसे हमें तो बीमारी में सबसे पहले माँ की याद आती है, वह इतना प्यार जो देती है।'

'मेरे साथ भी हमेशा ऐसा होता था, पर इस बार जिसका चेहरा याद आया वो तुम्हारा था, रितु। ऐसा क्यों हुआ जानती हो?'

'हमें पहेलियां बूझने का शौक नहीं है, अमन कुमार जी। आप ही पहेली सुलझा दीजिए।'

'वो इसलिए क्योंकि यू आर इन लव विद रितु।' अचानक रूम में प्रवेश करती रोज़ी ने मुस्कुराते हुए कहा।

'ओह नो, ये कैसे हो सकता है? आई डोंट बिलीव इन लव।' रितु जैसे डर सी गई।

'प्यार कब और कैसे हो जाता है, रितु, कोई नहीं जानता। जल्दी ही जान जाओगी। मैंने तुम्हारी आँखों में पूरी कहानी पढ़ ली है, रितु। तुम्हारी बेचैनी उसकी गवाह है।' रोज़ी ने यकीन से कहा।

'रोज़ी तुम आज ऑफ़िस नहीं गई?'बात बदलने के लिए अमन ने पूछा।

'बीमारी में दिन कैसे गिन पाते? आज सैटरडे है जनाब। अच्छा हुआ मैंने रितु को उसके एक्ज़ाम्स खत्म होने के बाद तुम्हारी बीमारी की खबर दी वर्ना ये एक्ज़ाम छोड़ कर भागी आती। क्यों ठीक कह रही हूं न, रितु? किस बदहवासी में भूखी-प्यासी भागती आई थीं।'

'इसका मतलब, अमन कई दिनों से बीमार है? मुझे बताना तो चाहिए था।' रितु नाराज़ दिखी।

'वैसे अगर पता होता कि तुम्हारी प्रेज़ेंस का जादुई असर होगा तो ज़रूर इन्फ़ॉर्म करती। अच्छा अब मैं चलती हूं। तुम अपनी चाहत के साथ हो अमन।' मुस्कुराती रोज़ी चली गई।

'शायद आज-कल में डॉक्टर तुम्हें डिस्चार्ज कर देंगे। मुझे अपने घर जा कर तुम्हारे लिए रूम ठीक करना है। बीमारी के बाद तुम्हारी देखभाल की ज़रूरत है। अब ये मुझे ही करनी होगी।'

'सिर्फ़ एक बीमार की तरह ही देखोगी या और कोई बात हैं।' अमन के चेहरे पर शरारत थी।

'और क्या बात हो सकती है।' ना जाने क्यों उस सवाल पर रितु संकुचित हो उठी।

'जानती हो, रितु, मैं अनजाने ही तुम्हें चाहने लगा हूं। यह सत्य इस बीमारी ने बताया है। जी चाह रहा था तुम्हारी गोद में सिर रख कर सो जाऊं। बस कैसे भी तुम आ जाओ।'

'हमें ऐसी बातें अच्छी नहीं लगतीं, अमन। हम दोनों दोस्त ही ठीक हैं।'

'अगर ऐसा है तो भूखी-प्यासी बैठी मेरे लिए प्रार्थना क्यों कर रही थीं, रितु?'

'वो तो तुम्हारी जगह कोई भी होता उसके लिए हम ऐसा ही करते।'

'सच नहीं कह रही हो, रितु। अगर सच स्वीकार करो तो तुम भी मुझे चाहती हो।' दो मुग्ध नयन रितु के सुंदर चेहरे पर निबद्ध थे।

"जानती हो, रितु, मैं अनजाने ही तुम्हें चाहने लगा हूं। यह सत्य इस बीमारी ने बताया है। जी चाह रहा था तुम्हारी गोद में सिर रख कर सो जाऊं। बस कैसे भी तुम आ जाओ।"

'पूरी दूकान के फूल रखने के लिए तो मेरा घर छोटा है। हां मेरे दिल में बहुत जगह है। आज तक मेरा दिल किसी की प्रतीक्षा कर रहा था, अब उसमें बस तुम हो, अमन।'

'नहीं, प्लीज़ अब मुझे जाना होगा।' रितु का चेहरा लाल हो उठा।

'मेरे पास से जाना चाहती हो, क्योंकि मुझे प्यार करती हो ये मानने को तैयार नहीं हो।' अमन मुस्कुराया।

'तुम बेकार के सपने देख रहे हो। मैं प्यार नहीं करती।'

'अगर तुम सच कह रही हो, तब मुझे माँ की बात मान लेनी चाहिए। मेरे अपार्टमेन्ट की टेबल पर एक लड़की की फ़ोटो रखी है। उसका प्रोपोज़ल आया है। फ़ोटो देख कर तुम भी अपनी राय दे दो। घर में सबको पसंद है।' अमन ने गंभीरता से कहा।

'तुम एक अनजान लड़की से शादी कर लोगे, अमन?' रितु के चेहरा उदास था।

'और उपाय भी क्या है, परिचित लड़की तो मुझे स्वीकार करने को तैयार नहीं है।'

'तुमने क्या कभी उस परिचित लड़की को ठीक से प्रोपोज़ किया है, अमन?'

'हां ये तो गलती हो गई, जरा फ़्लावर- वाज़ से लाल गुलाब तो देना। मुझे प्रोपोज़ करना है।'

'वाह फूल भी मैं ही दूं। ये नहीं चलेगा।'

'तो मिस रितु, अब आपकी स्टाइल मे प्रोपोज़ करता हूं, क्या आप इस बंदे को जिंदगी भर झेलने को तैयार हैं?' अमन ने नाटकीय अंदाज़ में कहा।

'रहने दो इतने अनरोमांटिक तरीके से उस डॉक्टर ने भी प्रोपोज़ नहीं किया था। बेचारा पूरा चाकलेट का डिब्बा लाया था।' बिंदास रितु ने शरारत से कहा।

'ज़रूर तुम पूरा खा गई होगी। मुझे ठीक होने दो तब देखना किस अंदाज़ में प्रस्ताव रखूंगा।'

'तुम्हारा अंदाज़ तो पहले दिन ही देख चुकी हूं। एक और सच कहूं तुमने उस रात मेरी जो मदद की थी, उसी रात तुमने मेरा मन जीत लिया था। इतना कंसर्न कोई सच्चा प्यार करने वाला इंसान ही कर सकता है। तुम मेरी परीक्षा में सफल रहे हो, अमन।' रितु ने सच्चाई से कहा।

'अच्छा और उस रात मेरे साथ जिस रुखाई का बर्ताव किया कि मैं नाराज़ हो गया था। सचमुच तुम कमाल की ऐक्ट्रेस हो।'

'तुम्हारे जाने के बाद मुझे अपने ऊपर गुस्सा आया था। वादा करती हूं, अब ऐसी गलती नहीं होगी। चाहो तो हमे सज़ा दे दो।' भोलेपन से रितु ने कहा।

'जो सज़ा दूंगा उसे मंज़ूर करना होगा। बाद में बहाना नहीं चलेगा।'

'सौ बार मंज़ूर करती हूं, पर तुम्हें भी एक वादा करना होगा।'

'कैसा वादा। देखो कोई कड़ी शर्त मत रखना कि मैं तुम्हारे अलावा किसी और लड़की से बात भी ना करूं।' हंसते हुए अमन ने कहा।

'उसका मुझे डर नहीं है, मेरे रहते तुम्हारी क्या मज़ाल जो किसी और की तरफ़ नज़र भी उठा कर देख सको। हां, वैलेंटाइंस डे पर तुम मुझे वैसे ही गुलाब दोगे, जैसे पहले दिन मेरे घर ले कर आए थे।' कुछ शोखी से रितु ने कहा।

'वाह, क्या मांगा है, मैं तुम्हारे लिए फूलों की पूरी दूकान ला दूंगा। आखिर मेरी प्रियतमा हो तुम। तुम्हारे लिए तो जान भी हाज़िर है, रितु।'

'पूरी दूकान के फूल रखने के लिए तो मेरा घर छोटा है। हां मेरे दिल में बहुत जगह है। आज तक मेरा दिल किसी की प्रतीक्षा कर रहा था, अब उसमें बस तुम हो, अमन। ये सच्चाई मैं भी तुम्हारी बीमारी में ही जान सकी। रोज़ी ने ठीक कहा, कब किसे, किससे प्यार हो जाए कोई नहीं जान सकता। मैं खुद इस प्यार से अनजान थी। तुमने किसी और के साथ शादी करने की बात कह कर मुझे अपने मन के सच से परिचित करा दिया। न जाने कब और कैसे तुम्हें चाह बैठी।'

'इसका मतलब मेरी अर्ज़ी मंज़ूर हो गई। अब मेरी भी सज़ा सुन लो।'

'देखो कोई कड़ी सज़ा मत देना।' चेहरे पर डर ला कर रितु ने कहा।

'मेरी सज़ा ये है कि तुम्हें जीवन भर मेरी साथिन बन कर मेरे साथ रहना होगा। आज ही भाभी को फ़ोन करता हूं, अपनी शादी के लिए मुझे मेरी मनपसंद लड़की मिल गई है। अब जल्दी ही उसका नाम-पता भेजूंगा।' अमन ने प्यार भरी दृष्टि रितु पर डाल कर कहा।

रितु के रक्तिम चेहरे पर खुशी की आभा बिखर गई।■

जर्मनी में अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी कार्यशाला सम्पन्न

हिन्दी अब कहाँ-कहाँ पहुँच रही है, यह जानना एक सुखद आश्चर्य की तरह लगता है। कुछ महीने पहले मुझे जानकारी मिली थी कि जर्मनी के एक छोटे-से शहर में स्थित वुर्जबर्ग विश्वविद्यालय में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है, जिसका विषय है - हिन्दी : अध्ययन, अध्यापन, अनुवाद और शोध। यह गोष्ठी वुर्जबर्ग विश्वविद्यालय की इंडोलोजी पीठ के द्वारा संभव हो रही थी और विगत वर्ष १४ तथा १५ दिसंबर को संपन्न हुई। गोष्ठी को जर्मनी से दाद संस्था, ओस्लो की फैकल्टी ऑफ़ ह्यूमैनिटी और भारतीय दूतावास, बर्लिन का सहयोग प्राप्त था। पूरी राह बर्फ़ से ढँके इलाकों से निकलते हुए, दो दिन वुर्जबर्ग के अपेक्षाकृत सौम्य मौसम में आयोजित कार्यशाला का पहला स्वागत संबोधन चौदह दिसंबर की शाम पांच बजे वुर्जबर्ग से प्रोफ़ेसर ब्रुकनर ने दिया। संयोजक बारबारा लोत्ज़ ने गोष्ठी के आयोजन की जरूरत और दृष्टि को रेखांकित किया।

अपने सहज अंदाज़ में उन्होंने सहभागियों का आत्मीय अभिनन्दन किया हम हिन्दीवाले कहकर! गोष्ठी का मंतव्य प्राच्य विद्या के अध्ययन में बदलती अभिरुचियों के अनुभवों को मंच प्रदान करने की इच्छा और इस अध्ययन के प्रति नए इन्डॉलोजिस्ट की आकांक्षाओं को व्यक्त करना था। 'अनुवाद के माध्यम से भारतीय साहित्य' शीर्षक अपने सन्देश में बर्लिन स्थित भारतीय दूतावास के काउंसिलर (संस्कृति एवं शिक्षा) प्रोफ़ेसर शिवप्रकाश ने भी अपना सन्देश दिया।

> किसी भी भाषा को सीखने में वार्तालाप एक जरूरी किन्तु कठिन काम है, खासतौर से तब जब उस भाषा में संवाद करने के अवसर कम हों।

शाम छह बजे हिन्दी की नई विविधताओं पर समारोह का आरंभिक व्याख्यान जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से प्रोफ़ेसर अन्विता अब्बी ने दिया। उनकी पावर पॉइंट प्रस्तुति में भारत के विभिन्न भागों में हिन्दी के विविधता भरे रूपों का सोदाहरण समावेश हुआ जो काफ़ी रोचक था।

सात बजे एक मनोरंजक फिल्म दिखाई गई - बॉलीवुड में हिन्दी, जो हिन्दी सिनेमा जगत में हिन्दी के विविध प्रयोगों का निदर्शन करती थी। रात्रि भोज में भारतीय स्वाद के साथ गोष्ठी का पहला दिन संपन्न हुआ।

दूसरा दिन तमाम प्रस्तुतियों के लिए रखा गया था, जिसमें प्रश्नोत्तरों के माध्यम से रोचक विमर्श भी हुआ। १५ दिसम्बर का पहला सत्र 'साहित्यिक और मौखिक दक्षता' पर आधरित था। पहली प्रस्तुति हैम्बर्ग विश्वविद्यालय के एशिया-अफ्रीका संस्थान के भारत-तिब्बत संस्कृति और इतिहास विभाग से राम प्रसाद भट्ट की थी - विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी का अध्यापन शीर्षक अपनी पावर पॉइंट प्रस्तुति में श्री भट्ट ने बताया कि वैश्वीकरण के दौर में जिन भाषाओं को महत्ता प्राप्त हो रही है, हिन्दी उनमें से एक है। लेकिन युवा छात्रों में भाषावैज्ञानिक समझ और भाषा को सीखने की प्रक्रिया बदल रही है। इसलिए आवश्यक है कि हिन्दी शिक्षण की पारंपरिक पद्धति के स्थान पर अधिक प्रभावी और उपयुक्त पद्धति विकसित की जाय।

'बुदापैश्त में हिन्दी साहित्य अध्ययन' शीर्षक प्रस्तुति ऐल्ते विश्वविद्यालय, बुदापैश्त में विज़िटिंग प्रोफ़ेसर विजया सती ने दी। उन्होंने बताया की इस विश्वविद्यालय का भारोपीय अध्ययन विभाग हिन्दी के मौखिक और वार्तालाप शिक्षण के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य के चुने हुए अंशों का अध्ययन करने को विशेष महत्त्व देता है। पिछले दो वर्षों में पढ़ाए गए मुख्य पाठों का उल्लेख करते हुए

डॉ. सती ने बताया कि ये पाठ विद्यार्थी को हिन्दी के विविध रूपों से परिचित कराते हैं - जैसे बोलचाल की हिन्दी, संस्कृत निष्ठ हिन्दी, उर्दू मिश्रित हिन्दी आदि। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि ये पाठ हिन्दी के नवीनतम विमर्शों - दलित और स्त्री विमर्श की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए भारतीय संस्कृति को अधिकाधिक जानने में विद्यार्थी के लिए किस प्रकार उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

वियना विश्वविद्यालय से अलका चौदल के आलेख का विषय था - 'हिन्दी वार्तालाप पर दृष्टिपात'। उन्होंने बताया कि किसी भी भाषा को सीखने में वार्तालाप एक जरूरी किन्तु कठिन काम है, खासतौर से तब जब उस भाषा में संवाद करने के अवसर कम हों। वियना में इस क्षेत्र में अध्यापन सामग्री, अध्यापन के तरीके, मूल्यांकन और छात्रों की हिन्दी में रुचि पर अपने अनुभव पर आधारित प्रस्तुति अलका ने दी।

कॉफ़ी ब्रेक के बाद का सत्र नई तकनीक और संसाधनों को समर्पित था। प्रोफ़ेसर मार्टिन की अध्यक्षता में पहली प्रस्तुति ओस्लो से थी। प्रोफेसर पीटर ने ओस्लो विश्वविद्यालय नार्वे में बनाए गए डिज़िटल हिन्दी डैटाबेस की जानकारी दी। इसकी शुरुआत हाइडल बर्ग से हुई और उन्होंने इस समय उपलब्ध विभिन्न शोध-कार्य प्रणालियों का प्रदर्शन किया और प्रतिभागियों के साथ-साथ अन्य विश्वविद्यालयों के सहयोग से कैसे इस डैटाबेस का भावी विकास हो, इस पर भी संवाद किया। डॉ. मिर्या आरहूज़ विश्वविद्यालय, डेनमार्क के संस्कृति और समाज विभाग से आई थीं। उन्होंने स्वीडन के विश्वविद्यालय में ऑन लाइन हिन्दी शिक्षण और बनारस में हिन्दी शिक्षण कार्यक्रम बनाए जाने के अपने अनुभव बांटे। दोनों ही काम उन्हें बहुत मांग करने वाले और प्रतिफल देने वाले लगे। उन्होंने अकादमिक आवश्यकता और हिन्दी में कुशलता के लिए विविधता पूर्ण अध्ययन और शिक्षण-दृष्टियों पर ध्यान केन्द्रित किया।

एशियाई अध्ययन विभाग, टेक्सास से विष्णु शंकर ने अपनी रोचक प्रस्तुति द्वारा जाहिर किया कि कैसे वैश्वीकरण के दौर में वे हिन्दी भाषा-शिक्षण कक्षा में प्रामाणिक सामग्री को पर्यावरण, स्वास्थ्य, राजनीति जैसे क्षेत्रों से इंटरनेट और पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जुटाते हैं। यह सामग्री विद्यार्थी को भाषा अध्ययन के चारों प्रमुख क्षेत्रों - सुनना, बोलना, पढ़ना और देखना तथा लिखना - में निपुण बनने के लिए प्रोत्साहन दे सकती है।

वियना विश्वविद्यालय से प्रोफ़ेसर मार्टिन गेंज़ले ने वियना विश्व विद्यालय में हिन्दी अध्ययन के विकास पर विहंगम दृष्टि डालते हुए दक्षिण एशियाई विभाग का इतिहास, पृष्ठभूमि और नई व्यवस्थाओं में बदलते पाठ्यक्रम की चर्चा की। उनके विभाग में हिन्दी के साथ एक और आधुनिक दक्षिण एशियाई भाषा पढ़ने के विकल्प के रूप में नेपाली को प्रस्तुत किया गया है।

उप्साला विश्वविद्यालय स्वीडन से प्रो. हेंज वेसलर ने बदलते अकादमिक और बौद्धिक वातावरण में इंडोलोजी के परिदृश्य को उजागर किया। डॉ. वेस्लर ने पिछले १२ वर्षों में मुख्य रूप से बॉन और उप्साला में हुए अकादमिक अनुभवों के आधार पर पाठ्यक्रम का अवलोकन किया।

लाइदन विश्वविद्यालय नीदरलैंड से अभिषेक ने दक्षिण एशिया के बदलते भाषिक-राजनीतिक परिदृश्य से अपने कथन को जोड़ा। माइन्ज़, जर्मनी के इंडोलोजी संस्थान से प्रोफ़ेसर कोनराद मेसिंग ने अनुवाद की एक कार्यशाला रिपोर्ट प्रस्तुत की जो उनके विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम का एक हिस्सा है। यह सामग्री संस्थान की वेबसाईट पर भी उपलब्ध है। ज्यूरिख से आमंत्रित मिरेला ने मृदुला गर्ग और अज्ञेय के लेखन के साहित्यिक अनुवाद पर पर्चा पढ़ा।

गोष्ठी के अंत में प्रोफ़ेसर अब्बी, प्रोफ़ेसर पीटर और बारबरा लोत्ज़ ने समापन निष्कर्ष दर्ज करते हुए कहा कि गोष्ठी का लक्ष्य था - जर्मनी और यूरोप के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्यापन, अनुवाद और शोध से जुड़े अध्यापकों और शोधार्थियों का एक ऐसा निकट समूह बने जो भाषा के अध्ययन-अध्यापन की नवीनतम शैलियों का निरंतर अवलोकन-मूल्यांकन करता रहे। इस प्रकार की गोष्ठियों का आयोजन इसी दिशा में एक कदम है।

प्रस्तुति : विजया सती

श्री रमेश जोशी सम्मानित

उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मलेन और उत्कर्ष अकादमी द्वारा कानपुर में संयुक्त रूप से ९-१० फरवरी २०१३ को दो दिवसीय 'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी संकल्प समारोह' का भव्य आयोजन किया गया जिसमें देश-विदेश के कोई ५० विद्वान और हिंदी सेवी सम्मिलित हुए। इनमें २० व्यक्तियों को 'विश्व हिंदी प्रचेता' अलंकरण से सम्मानित किया गया। दो दिनों के तीन सत्रों में कोई सात सौ प्रबुद्ध और उत्साही श्रोता उपस्थित रहे। इसमें हिंदी के वरिष्ठ व्यंग्यकार और सीकर (राजस्थान) निवासी श्री रमेश जोशी को भी 'विश्व हिंदी प्रचेता' सम्मान से अलंकृत किया गया। श्री जोशी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, अमरीका के त्रैमासिक पत्र 'विश्वा' के प्रधान संपादक भी हैं।

गर्भनाल का फ़रवरी-२०१३ अंक अपने लिए एक अलग ही स्थान स्थापित कर गया है। रुचिकर विषयों की विविधता और अंश-मात्रा ने मुग्ध कर लिया। 'हिन्दी भाषा का बदलता स्वरूप...' रोचक लगा। यह कोई नई बात नहीं है कि हिन्दी पर अन्ग्रेज़ी का प्रभाव बढ़ रहा है, लेकिन जिस गति से बढ़ रहा है, यह ध्यान देने की बात है। अन्ग्रेज़ी माध्यम की पाठशालाओं की संख्या बढ़ रही है और मात-पिता अपने बच्चों को इन स्कूलों में भेजने के लिए घूस देने को भी तैयार हैं। दोष माता-पिता का नहीं है, दोष हमारी सरकार का है जिसने हिन्दी माध्यम के सरकारी स्कूलों में गुणवत्ता-स्तर को कई वर्षों से गिरने दिया है।

हिन्दी-प्रेमी डॉ. तोमोको से आपकी बातचीत पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक रही। जापान में हिन्दी की पढ़ाई सन १९०८ से शूरू हुई, यह जान कर आश्चर्य हुआ और हर्ष भी। आपने यह स्तंभ बहुत उपयुक्त चुना है। हर मास यह और संस्मरण गर्भनाल को अन्य पत्रिकाओं से अलग करते हैं और गर्भनाल को अपना उचित स्थान दे रहे हैं।

वेदान्त पर लेख तो और भी मनोहारी है। चिन्तन का स्तंभ ऐसे ही चलता रहे, अच्छा लगा। 'मंथन' में 'अन्तरात्मा की भव्यता' लेख तो कुछ और ही था। सच्चाई और ज्ञान से भरपूर यह लेख पाठक को चिंतन के लिए सारे महीने के लिए सामग्री दे गया है। और हाँ, आदरणीया हरकीरत हीर जी की कविताएँ मन को छू गईं। गर्भनाल का फ़रवरी अंक एक बार पढ़ना शुरू किया तो फिर रखा नहीं गया।

विजय निकोर, अटलान्टा, यू.एस.ए.

गर्भनाल के ७५वें अंक में डॉ. परितोष मालवीय का आलेख 'हिन्दी भाषा का बदलता स्वरूप और अस्तित्व का संकट' बहुत अच्छा लगा। मैं उनके इस विचार से सहमत हूं कि भाषा का प्रवाह एक अविरल बहने वाली नदी की तरह होता है। उसमें समय और स्थान के अनुकूल अन्य भाषाओं के शब्द आते रहते हैं और उसी में समा जाते हैं। हजारों वर्षों से यह परिवर्तन भारतीय भाषाओं में चलता आ रहा है और इस पर किसी ने कोई आपत्ति नहीं प्रकट की। परन्तु आपत्ति तब होती है जब साधारण, सरल और भरपूर उपयोग में आने वाले शब्दों के स्थान पर विदेशी भाषा के शब्दों का चलन निकल पड़े; हिन्दी को हिंगलिश बनाने की होड़ चलती दिखाई पड़े। जब गिनती के लिए एक, दो, तीन – के स्थान पर वन, टू, थ्री — का प्रयोग हो, अथवा कुत्ता और गाय के लिए डागी जैसे शब्द कोई लेखक या वक्ता प्रयोग करे, तो मेरे विचार में, सभी हिन्दी से जुड़े लोगों का कर्तव्य हो जाता है, कि वे इस अवांछित परिवर्तन पर ध्यान दें और भाषा के संरक्षण जैसे विषय पर चर्चा करें।

वेद मित्र, यू.के.

एक लम्बे अन्तराल के बाद आपसे सम्पर्क कर रहा हूँ उम्मीद है सब यथावत होगा। आपके अंक मिलते रहते हैं जिन्हें मैं बड़े चाव से पढ़ता रहता हूँ। आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। प्रभु आप पर अपना वरदहस्त बनाए रखे!

पाराशर गौर, कनाडा

नया अंक देखा। सदैव की भाँति अच्छा है। आप जो हिंदी सेवियों से साक्षात्कार ले रहे हैं यह बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। कभी इसके पुस्तकाकार रूप की भी कल्पना कीजिये।

रमेश जोशी, अमेरिका

गर्भनाल के फरवरी-२०१३ अंक में अनिल प्रभा कुमार की कहानी 'बेटे हैं न' पढ़ी. अपने ही लहू के टुकड़े सम्वेदनाओं का कैसे मजाक उड़ाते हैं, कहानी में सटीक तौर पर उभरता है। कहानी ने मुझे रुला दिया। लेखिका को साधुवाद।

पुनीता सिंह

लेखिका अनिल प्रभा कुमार जी दिल से बहुत-बहुत बधाई की पात्र हैं, उनकी लेखनी से निकली कहानी 'बेटे हैं न' दिल की तह को छू गयी। इसमें बढ़ती उम्र की महिला के मन की अति सुंदर कोमल भावनाओं को बहुत ही सहज ढंग से व पूरी ईमानदारी से व्यक्त किया गया है।

पूरी कहानी पढ़ कर आँखों से छलक पड़ते आंसुओं को रोक पाना मुश्किल ही नहीं असंभव हो गया। दिल को पूरी तरह छूने वाली यह कहानी इतने सरल तरीके से गढ़ी गयी है कि वह चलचित्र की तरह आँखों के सामने घूमने लगी और आँखें नम कर गयी।

शोभा पाठक

गर्भनाल पिछले सात साल से लगातार पढ़ रहा हूं। बस, बहुत दिन से आपको लिख नहीं पाया। हर अंक जबरदस्त होता है। जानकारी के साथ-साथ कहानी, कविता, चर्चा-विमर्श और बहुत कुछ। आप लगातार मेहनत कर रहे हैं या यूं कहूं कि पहले से ज्यादा काम कर रहे हैं। बहुत अच्छा लगता है। इस बार के अंक में डॉ. तोमोको का साक्षात्कार हो या कविताएं-कहानी, सब कुछ काबिले-तारीफ है।

तसलीम अहमद, साहिबाबाद

गर्भनाल पत्रिका भेजने के लिए बहुत धन्यवाद। मैं आप लोगों के इस कार्य से बहुत प्रभावित हूँ। साहित्य के इस प्रचार प्रसार के लिय आपकी समस्त मित्र मंडली का कोटि-कोटि आभार। सम्पूर्ण पत्रिका में उत्कृष्ट सामग्री पढ़ने को मिली। ये साहित्य जगत के लिए नायाब तोहफा है।

राजेन्द्र सिंह कुँवर 'फरियादी', कीर्ति नगर उत्तराखंड

गर्भनाल के फरवरी-२०१३ अंक में अनिल प्रभा जी की कहानी ने दिल को छू लिया। बातचीत के अंतर्गत हिंदी प्रेमी डॉ. किकुची के बारे में अच्छी जानकारी मिली, वैसे पिछले अंकों में भी विभिन्न हिंदी प्रेमियों के बारे में रोचक जानकारी मिली, खासकर डॉ. रुपर्ट स्नेल जी। जापान के लोग मुंशी प्रेमचंद की कहानियों का जापानी अनुवाद पढ़ते हैं जानकर अच्छा लगा। सामयिक में विजय मोघे जी का लेख पढ़ा, लोगों की तेजी से बदलती मानसिकता के बारे में ईश्वर से यही प्रार्थना है कि वो उन्हें सत्बुद्धि दे. ध्रुव शुक्ल जी का संस्मरण 'बहनों की याद' पढ़कर अच्छा लगा। सभी लेखकों को मेरा धन्यवाद। हर नए अंक का इन्तजार रहता है।

दीपमाला यादव, अमेरिका

गर्भनाल पत्रिका के फरवरी-२०१३ अंक में डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री का लेख 'मैकाले और हमारे भ्रम' पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। अग्निहोत्री जी सदा ही बहुत परिश्रम से आधार-सामग्री का अध्ययन कर सोच-विचार के साथ अपनी बात कहते हैं। उनका प्रत्येक लेख पठनीय और विचारणीय होता है।

आम भारतीयों में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं या तो हम जो कुछ भी विदेश से आया है उसे श्रेष्ठ मानकर आँख मींचकर उसे स्वीकार कर लेते हैं या फिर उसे सर्वथा त्याज्य मानकर उसमें दोष ही दोष देखने लगते हैं। शान्त भाव से किसी नीति पर निष्पक्ष विचार करने की योग्यता का राष्ट्र के तौर पर हमें अभी विकास करना है। उन्नीसवीं शताब्दी के भारत को एक आदर्श देश साबित करने के लिए मैकाले के नाम पर एक झूठा उद्धरण बनाने में भी कुछ लोगों को संकोच नहीं हुआ यह शर्म की बात है। हम क्यों झूठ बोलकर मैकाले से अपनी प्रशंसा करवाना चाहते हैं?

अग्निहोत्री जी ने ठीक ही लिखा है, 'जिस युग में थोड़े से विदेशी पूरे देश को गुलाम बना लें, देशवासियों पर तरह-तरह के अत्याचार करें, उनकी जीविका के साधन तक नष्ट कर दें, और देशवासी इस सबके बावजूद उनकी जी हुजूरी करना अपना सौभाग्य मानें, क्या वह उस देश का स्वर्ण युग हो सकता है?'

मैकाले ने अंग्रेज़ी साम्राज्य की नींव गहरी करने के लिए एक शिक्षानीति का निर्धारण किया था और उसमें वह बहुत हद तक सफल हुआ। अपने प्रयास से कम, भारतीयों के प्रयास से ज़्यादा। स्वतंत्रता-प्राप्ति के ६५ वर्ष बाद भी यदि हम अपनी वर्तमान शिक्षानीति के लिए मैकाले को कोसते हैं तो इससे यही साबित होता है कि हमने अभी अपने देश के लिए अपने आप चिन्तन करना प्रारंभ नहीं किया है। स्वामी दयानन्द, महात्मा गान्धी, टैगोर, श्री अरविन्द, जे. कृष्णमूर्ति जैसे मनीषियों के विचारों के आधार पर अपनी शिक्षा-पद्धति बनाने से हमें किसी विदेशी ताकत ने तो नहीं रोका।

एक देश के तौर पर हम आज भी एक हीनभाव से ग्रस्त हैं। बिना उसे दूर किए इस प्रकार की अतिरेकी प्रतिक्रियाएँ होती रहेंगी। इस ओर ध्यान दिलाने के लिए डॉ. अग्निहोत्री धन्यवाद के पात्र हैं।

अनिल विद्यालंकार, दिल्ली

गर्भनाल का बहुत पुराना पाठक हूँ। यह पत्रिका मुझे यथासंभव पीडीएफ फाइल के रूप में प्राप्त होती रहती है। एक स्तरीय पत्रिका के निरंतर प्रकाशन के लिए हार्दिक साधुवाद. फरवरी-२०१३ अंक की 'अपनी बात' में दिल्ली की दुर्घटना का संदर्भ लिया जाना सार्थक लगा। मोहन भागवत के कहे को इंगितों में देने से तथा चेतन भगत के सामाजिक विन्यास पर साझा हुए बिन्दुओं से संपादक-मण्डल की संवेदनशीलता का पता चलता है।

डॉ. रवीन्द्र अग्निहोत्री अपने लेख 'मैकाले और हमारे भ्रम' में पाठकों से अपने कहे पर सहमति लेने में सक्षम हुए हैं। डॉ. परितोष मालवीय यदि 'मन की बात' में हिन्दी भाषा की वर्तमान शब्दगत दुर्दशा के लिए अंग्रेज़ीग्रस्त मानसिकता की कुण्ठा को कारण बताते हैं तो बात समझ में भी आती है। प्राण शर्माजी के निराला से संबन्धित साझा हुए संस्मरण से मन आप्त है। बसंत का अभिनव सत्कार किया है आपने। 'बातचीत' में आत्माराम शर्मा का जापान से संबद्ध हिन्दी विद्वान डॉ. तोमोको किकुची से हुआ साक्षात्कार उनके कई-कई पहलुओं को सामने लाता है। डॉ. किकुची के कथ्य बड़े सटीक लगे हैं। आपके कहने में भावनाओं और तथ्य का सुन्दर मेल है। इस बार की कविताओं में हरकीरत कौर की रचनाएँ गहरे छूती हुई लगीं। आयुष चिराग़ की ग़ज़लें कहन की दृष्टि से अच्छी हैं लेकिन ग़ज़लों में कई मिसरे बेबह्र हुए दिखे. ग़ज़लों के प्रकाशन में इन तथ्यों पर ध्यान रखा जाय. सभी स्तंभ पूर्ववत रोचक व ज्ञानवर्द्धक हैं. 'शायरी की बात' में नीरज गोस्वामी का शायरों पर उनके मंतव्य सुनने में अच्छे लगते हैं. विश्वास है, पत्रिका गर्भनाल सफलता के सोपान पर अग्रसरित रहेगी.

सौरभ पाण्डेय, नैनी, इलाहाबाद

गर्भनाल पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका के हर एक अंक में पढ़ने की बढ़िया सामग्री रहती है। इस बार का अंक भी प्रशंसा के योग्य है। डॉ. परितोष जी की मन की बात 'हिंदी भाषा का बदलता स्वरूप और अस्तित्व का संकट' हिंदी को लेकर एक अच्छी बात सामने रखती है। विनय मोघे जी द्वारा रचित आलेख 'दुनिया में आये हैं तो जीना ही पड़ेगा' सच है इस सोच को बदलकर देखना चाहिए। यह एक बहुत अच्छा लेख। हमेशा की तरह प्रश्नोत्तरी एक बढ़िया ज्ञान प्राप्ति का साधन। कविताएं और ग़ज़ल की बढ़िया प्रस्तुति। डॉ. देवेंद्र द्वारा 'देश की दुर्दशा' एकदम सटीक है। साथ ही अनिल प्रभा जी की कहानी दिल में उतर गई। अंक प्रसंशनीय, सराहनीय एवं संग्रहणीय है। कुशल संपादन हेतु बधाई स्वीकारें। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की अशेष शुभकामनायें।

कीर्ति श्रीवास्तव, भोपाल

आपकी बात

गर्भनाल साहित्य की पत्रिका है तो साहित्य के विषय से ही सामग्री लें। राजकिशोर जी के आलेख में आपको क्या दिख गया। लेख सामयिक मुद्दे पर है, ऐसे लेख अखबारों में पढ़ने को मिल जाते हैं, पत्रिकाओं में अच्छे लगते हैं। अपने यहां साहित्यिक शुद्धता बनाए रखने पर विचार करें। यदि राजकिशोर जी को नाम बड़ा होने के कारण छाप रहे हों तो बात दूसरी है।

संजय स्वदेश

गर्भनाल का ताजा अंक मिला। रविन्द्र अग्निहोत्री जी का लेख अच्छा लगा। आपका सम्पादकीय भी प्रभावित करता है।

यशवंत कोठारी, जयपुर

गर्भनाल पत्रिका का फरवरी-२०१३ अंक बहुत ही अच्छा लगा। यद्यपि सभी अंकों में बहुत ही प्यारी-सी सामग्री होती है जो लेखकों के अतीव श्रम का नवनीत तो होती ही है तथापि आपका लेखक संपादक व्यास उसे नया और पठनीय बनाता है।

डॉ. मालवीय जी की रचना और चिंतन क्योंकि मेरे भी अनुभव हैं तो निश्चित ही उस रचना की प्रशंसा तो करनी ही होगी- हम हिन्दी कर्मियों की पीड़ा अब इतनी घनीभूत हो गई है कि अब अगर न पिघली और कोई गंगा न निकली तो हम में से अधिकांश चिंतनशील व्यक्तिगण इस क्षेत्र को छोड़कर रोजी-रोटी का कोई और आसरा खोजने निकल पड़ेंगे और इस क्षेत्र में भी विशुद्ध व्यवसायिक बाबू टाइप के ही लोग घुस जाएंगे और शायद सरकारें भी यही चाहती हैं। जैसे अपराध कितने ही होते रहें उन्हें ऐसे पुलिसवाले चाहिए जो रिपोर्ट न लिखें और आंकड़ा खराब न करें और उनके ढ़ोंग चलते रहें। किसी शुभ दिन की प्रतीक्षा में एक दिन कांय-कांय करते हुए हम रिटायर हो जाएंगे - पर हिन्दी को सरकारी कामकाज की भाषा नहीं बना पाएंगे - क्योंकि सरकार खुद ही नहीं चाहती। अंधेर नगरी चौपट राजा - अंधे के आगे रोएं अपने दीदे खोंए।

डॉ. राजीव कुमार रावत

गर्भनाल के फरवरी-२०१३ अंक में जापान की हिन्दी विदुषी डॉ. तोमोको किकुची से आत्माराम शर्मा की बातचीत, हिन्दी की विश्व-स्थिति के साथ-साथ हिन्दी चिंतकों के विश्वव्यापी चिन्तन को भी बखूबी दर्शाती है। डॉ. तोमोको किकुची ने ठीक ही कहा है कि समाज को बदलने के उद्येश्य से लिखी जाने वाली रचना को साहित्य नहीं कहा जा सकता क्योंकि ऐसा लेखन प्रचारवादी साहित्य या विज्ञापन तो हो सकता है पर विशुद्ध साहित्य नहीं। परन्तु कई बार साहित्यिक लेखन और 'किसी विचारधारा' से प्रेरित लेखन में अन्तर कर पाना कठिन हो जाता है। यद्यपि विचारधारा की नारेबाजी से, दिखावटी भंगिमाओं की अधिकता से यह स्वतः दिख जाता है कि यह प्रचारवादी लेखन है साहित्यिक लेखन नहीं।

उन्होंने यह सारगर्भित बात भी बताई कि कहानी कविता और उपन्यास ये तीनों किस तरह एक त्रिआयामी दृष्टि देकर रचना संसार की और इसके अंतर्गत समाहित जीवन की समग्रता को व्यक्त करते हैं।

डॉ. तोमोको किकुची के लेखन से पाठकों को और अवगत कराएं, साक्षात्कार मात्र पर्याप्त नहीं है। कृपया उनकी 'सचित्र हिरोशिमा का दर्द' के अंश सचित्र प्रकाशित कर पाठकों को अनुग्रहीत करिये। भविष्य में और अभी तक जिनके इंटरव्यू आपने लिए हैं उन सभी हिन्दी सेवी महानुभावों के साहित्य के चुने हुए अंश भी साथ ही साथ प्रकाशित करिये।

मनोज श्रीवास्तवजी ने वैदिक मंथन के अंतर्गत बहुत-सी ठोस और सही बातें कही हैं जो उधारी के चिन्तन से साहित्य इतिहास दर्शन अध्यापन आदि में रोटी रोजी चला रहे विद्वानों को बुरी लग सकती है। पर सवाल है कि लोग तटस्थ क्यों हैं? उन्होंने फ्रंत्ज़ फेनन का यह कथन ठीक ही लिखा है कि गुलाम देश की संस्कृति सोच-विचार के साथ नष्ट की जाती है। खगोल विज्ञान के क्षेत्र में और गणित के क्षेत्र में यह बात और भी स्पष्ट दिखती है जहाँ हमारी मौलिकता और वैचारिक श्रेष्ठता का और अग्रणी होने का श्रेय नहीं दिया जाता।

सिरोठियाजी की 'हिन्दी दिवस' कविता और इसका चित्रांकन दोनों ही मन को प्रसन्न करते हैं। दवे जी का गीता पर भाष्य सरल सारगर्भित रहता आया है इसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा के जाये कम है। हंगेरियन कहानीकार मोरित्स का इन्दु मदान कृत अनुवाद सहज और जीवंत है।

ब्रजेन्द्र श्रीवास्तव, ग्वालियर

आपकी बात

I have gone through your subject story of Ms. Anil Prabha Kumar published in February issue of magazine "Garbhnal". Let me tell you quite frankly, I could not understand when I first read this. I was caught in a web of numerous characters in the first two pages. But, I found it to be quite good hovering around selfishness and breaking family relations due to very high expectations. So, I read it again and was quite impressed by it. I just cannot believe that due to their selfishness, people could go to that extent, but it might be true. It is quite a lessong giving story and one should not believe even the closest relaltions especially when the families are settled abroad. A mother is simply treated as a serant baby sitter.

I am still overwhelmed and believe me that I have typed this much in ten minutes despite being an English stenographer. My fingers were unable to help me. Kudos for a very excellent story.

Shri Krishan Saini, Ambala City

It was nice reading Ganganand Ji's editorial. Reading it I felt like my Guru Shriram Sharma's words were being repeated. His whole goal of creating a big family of Gayatri pariwar was to maintain 'human values' 'manushyata' in the 70% population of the country which no one really has the time to cares about. Very few are able to reach and touch the lives to those 70%. I can say with pride that I really feel content being part of an organization that is not limited to rich, educated, upper class but instead encompasses mostly those 'very simple beings'.

Madhavi, USA

Although I am English medium, Engineering Graduate, and has poor knowledge about Hindi Literature, even then I enjoyed the readings of it and find the magazine worth praising.

I congratulate you and your participants for such a wonderful writings whose endeavor and struggle made it so beautiful and flourish literature.

Dr. Visal A. Khan, Bhopal

In your previous editions, I thoroughly enjoyed reading Anil Vidyalankarji's Bhagavad Geeta one pagers? I am assuming the series is over. If so, can you restart it?

Praveen Sharma

Who Are You Calling Old?

Proud2B60 :

is a special campaign by Help Age India.

Millions of people are living their later years with unprecedented good health, energy and expectations for longevity.

Suddenly, traditional phrases like "old" or "retired" seem outdated. Help Age's "Who Are You Calling Old?" campaign presents the many faces of this New Age.

New language, imagery, and stories are needed to help older people and the general public re-envision the role and value of elders and the meaning and purpose of one's later years. This campaign is about leading this change. It is about combating the negative image of the frail, dependent elder.

General Query

http://www.helpageindia.org

गर्भनाल द्वारा जनहित में जारी